शिक्षक की क़लम से–वर्ष 2012

भाग–2

सफ़र अणुव्रत–संकल्पों का

(अणुव्रत कहानी/नाटक संकलन)

प्रकाशक : अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास, नई दिल्ली

कहानी

अनुक्रम – 1

कहानी

1.	वसूली	डॉ. अनीता पंडा
2.	बिलारी	माया मिश्र
3.	राम–रहीम	सीमा शर्मा
4.	जीवन शैली	सुषमा भण्डारी
5.	दर्द का अहसास	संगीता
6.	खिलती बगिया	संतोष यादव
7.	विज्ञान–यात्रा	बि. वि किरण
8.	उपहार	पूनम
9.	नई दिशा	ज्योति सिहोरा
10.	बदली से निकला चाँद	राजकुमारी शर्मा
11.	पठारी	योगेश कुमार शर्मा
12.	संकल्प	सरिता मिगलानी
13.	वीरादित्या	डॉ. एन. श्रीनिवासन
14.	बेड़ियाँ	अपर्णा कश्यप
15.	सुबह का सूरज	रजनी अग्रवाल
16.	बहुत कुछ खोने के बाद	कृष्ण कुमार वर्मा
17.	आखिरी प्रश्न	राखी आर्य
18.	जैसे को तैसा	पूनम शर्मा
19.	सपना	सौ. विजया सुभाष महाजन
20.	झुमकी	विवेक साहनी
21.	घोंसला	इंदिरा दबे
22.	और फिर	गायड़ सिंह चुण्डावत
23.	आखिरी कोशिश	रीता कपूर
24.	खुशी के आँसू	ईता सैनी
25.	वचन	डॉ. शिल्पी सेठ
26.	अपराध–बोध	शकुन्तला मित्तल
27.	भ्रष्टाचार	बी. नीलावेणी
28.	बीती ताहि बिसारि दे	डॉ. अरुण कुमार वर्मा
29.	प्यारा मुज़रिम	सुषमा तिवारी
30.	पारखी	अंजलि मित्तल
31.	अनमोल रत्न	रीता जुनेजा

वसूली

अम्मी लाचार थी। बस अगले दिन हमारा निकाह हो गया। हमारे अब्बा, अम्मी और बहन गाँव चले गए। अम्मी ने जाते–जाते समझाया कि शौहर जो कहे उसे चुपचाप मानना। बस उसके बाद चुपचाप वही करती आयी हूँ जो शौहर ने कहा। सब कुछ सह लेती हूँ पर हर रात का दर्द झेलने में बहुत तकलीफ़ होती है।'' कहते हुए रजिया की आँखों से मोटी–मोटी आँसुओं की धार निकल पड़ी।

सरकारी अस्पताल की बेंच पर बैठी एक कमसिन सी लड़की और उसके साथ बैठा एक अधेड़ उम्र का पुरुष दोनों अपने नम्बर के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। लड़की गर्भवती थी। बीच–बीच में झपकियाँ भी ले रही थी। अचानक उसे इतनी ज़ोर से झपकी आई कि पीछे दीवार से उसका सिर जा टकराया। ''जहाँ बैठी नहीं, बस सोने लगती है। हद हो गई नींद की''.....बड़बड़ाते हुए उस पुरुष ने उसको झकझोरा और कहा, ''अपना लिबास ठीक कर।''

लड़की हड़बड़ाई और जल्दी–जल्दी दुपट्टे से अपना सिर और बदन ढकने लगी। सामने बैठे कुछ जवान लड़कों ने मज़ाक करते हुए कहा, ''ओ चाचा, अपनी बिटिया को ठीक से सँभाल नहीं तो बेंच से गिर जाएगी। अगर सँभाला नहीं जाता तो चाची को साथ ले आते।'' इतना सुनना था कि पुरुष आपे से बाहर हो गया। गुस्से से बोला, ''किसकी बिटिया बे? ये मेरी बीवी है और हम कब से तुम्हारे चच्चा हो गए बे?'' यह सुनकर एक लड़के ने व्यंग्य किया, ''ओ, तो ये मुँह और मसूर की दाल।''

अबे अपना रास्ता नाप। सारे दिन लोफरगिरी करता है, कुछ काम धाम तो है नहीं, लोगों को छेड़ते शर्म नहीं आती।'' बहस काफी गरम हो चली थी। शायद मारपीट की नौबत आ जाती अगर 'रजिया बेगम.....' नाम की पुकार नहीं होती। वह पुरुष रजिया को सहारा देते हुए डॉक्टर के केबिन में ले जाने लगा।

''नाम '' डॉक्टर ने पूछा ''रजिया बेगम''

''उम्र ?''

''सत्रह साल।''

''क्या? सत्रह साल में इस हालत में?' डॉक्टर ने पूछा।

आपको इसकी उमिर से क्या मतलब है? आप इसकी जाँच कीजिए। रूखेपन से पुरुष ने कहा। आवाज़ में तल्खी साफ नज़र आ रही थी। ''उम्र से मतलब है। पहले आप बताइए आप कौन हैं, इसके पिता?'' ''क्या कहा अब्बा? हम इसके शौहर हैं। हमारा नाम रिजवान खान है।'' यह सुनकर ब्लडप्रेशर चैक करती नर्स के हाथ रुक गये। उसने हैरत से कभी रजिया को, फिर रिजवान को देखा, ''ऐसे क्या देख रही हैं आप लोग?'' रिजवान ने कहा।

''आपकी क्या उम्र है?'' डॉ. नीलम ने पूछा।

''पैंतालीस साल'' सुनकर डॉ. नीलम की आँखें फैल गयी। ''अच्छा आप बाहर जाइए, मैं रजिया की जाँच कर लूँ।'' रिजवान को बाहर जाते ही डॉ. नीलम रजिया की ओर बढ़ी। वह बिस्तर पर लेटी हुई थी। जाँच करते हुए डॉ नीलम ने पेट के निचले हिस्सों को दबाया। रजिया के मुँह से कराह निकल गई। वह रोते हुए बोली, ''डॉक्टर साहिब! मेरे इस हिस्से में अक्सर दर्द रहता है।''

''दर्द तो रहेगा ही। इतनी कम उम्र में छः मास पेट से हो। कम से कम एक दो साल तक इंतज़ार नहीं कर सकती। ''क्या करती, अपने अब्बा और अम्मी को कितना मना किया कि मेरी शादी मत करो। मैं पढ़ना चाहती हूँ। पर वे नहीं माने।'' रजिया रोती जा रही थी। पास खड़ी नर्स ने उखड़े स्वर में कहा, ''रोना बन्द कर। जब सोचने का वक्त था तब नहीं सोचा अब भुगत। इतना भी नहीं जानती कि दर्द औरत को ही लेना पड़ता है।''

यह आदमी शौहर नहीं जल्लाद है। हमसे एक साल छोटी इसकी बेटी है। हम इसके तीसरी बीवी हैं। इसे तो औरत का ताज़ा गोश्त चाहिए। निक़ाह के बाद यह हमें हमारे घर भी जाने नहीं देता। जरा सी गलती हो जाती है तो दोनों बड़ी बीवियाँ हमें पीटती हैं। हमारी ज़िंदगी नर्क हो गयी है। दो वक्त के खाने, कपड़े और सिर पर छत के लिए इतना झेलना पड़ता है।''

सहानुभूति से रजिया के सिर पर हाथ फरेती हुई वह बोली, ''देखो, अपना ध्यान रखना। इस उम्र में माँ बनने के कारण तुम्हें और तुम्हारे बच्चे दोनों को ख़तरा है।''

''अब बस भी करो सिस्टर! डॉ. नीलम ने कहा, ''जो हो गया सो हो गया। डॉक्टर होने के नाते तुम और तुम्हारे बच्चे दोनों की ज़िंदगी मेरे लिये महत्वपूर्ण है। मैं तुम्हारे शौहर से बात करूँगी।''

''कोई फ़ायदा नहीं है डॉ. साहिब। उस जल्लाद को तो केवल एक बेटा चाहिए और कुछ नहीं। मैं ज़िंदा रहूँ या नहीं, उसे कोई फर्क़ नहीं पड़ता।''

''उसे अगर स्वस्थ बच्चा चाहिए तो कम से कम इस हालत में उसे तुम्हारा ध्यान रखना पड़ेगा।'' डॉक्टर नीलम ने कहा।

''आप समझा कर देखिए। वैसे भी हर रात उसकी भूख मिटाने तक हम उसी बीवी हैं, उसके बाद दो बोरी धान के बदले ख़रीदी हुई एक कनीज़ हैं।'' कहते हुए रजिया का मुँह लाल हो गया। आँसू तो थमने का नाम ही नहीं ले रहे थे।

'दो बोरी धान?' डॉ. नीलम और नर्स दोनों चौंक गये। अब तक डॉ. नीलम को रजिया के प्रति सहानुभूति हो गयी। उसके दिल में छिपे दर्द का सैलाब आज बाहर आ जाना चाहता था। रजिया ने बताया, ''डॉ साहिब, हम बचपन से गरीबी और तंगहाली में जीते आए हैं। किसी तरह से फटे–पुराने फ़्रॉक पहन करके हम दोनों बहनों ने अपना बचपन काटा। जब बड़े हुए तो अपने शरीर को अच्छी तरह ढकने के लिए कपड़ा–लत्ता बड़ी मुश्किल से मिलता। नतीजा हम दोनों घर में ही रहते ओर रात के अँधेरे में नहाते। ग़रीब के घर जवान बेटियों को कैसी नज़र से देखते हैं, यह तो आप जानती ही हैं।'' रजिया अपनी दिल की परतें खोलती जा रही थी। डॉ. नीलम ने कहा, ''रिजवान ने तुम्हें कैसे देखा?''

''काम की तलाश में अब्बा रिजवान के यहाँ पहुँचे क्योंकि हमें फ़ाक़ा करते हुए चार–दिन हो गये थे। रिजवान ने गाँव के खेतों की देखभाल के लिए अब्बा को रख लिया। गाँव आपने से पहले मेरे अब्बा ने कहा, ''साहिब, हम लोगों को कुछ खाने के लिए मिल जाए तो बड़ी महरबानी होगी। हमने चार–पाँच दिन से कुछ खाया नहीं है।''

रिजवान ने घर के नौकर को आवाज़ लगायी और हमें खाना खिलाने का हुक्म दिया। घर के पीछे दलान में बैठकर हम चारों के सामने थोड़ा–थोड़ा दाल–भात नौकर ने रख दिया। खाना देखकर हम बहुत खुश हो गये और खाने लगे। अब्बा को काम मिलने से हम सब खुश थे कि कम से कम ज़िल्लत की ज़िंदगी से कुछ तो राहत मिलेगी। हमने खाना ख़त्म किया और अपनी पोटली उठा जाने के लिए तैयार हो गए। इतने में रिजवान वहाँ आया और रास्ते के ख़र्च के लिए कुछ रुपये दिया। उसकी नज़र हम दोनों बहनों पर पड़ी।

उसने हमारे अब्बा से कहा, ''अरे, तुमने बताया ही नहीं कि तुम्हारी दो जवान बेटियाँ भी हैं।'' मेरी मम्मी एकदम डर गई और उन्होंने मुझे एकदम भींच लिया। डरते हुए बोली, ''सरकार, अभी इसकी उमिर सोलह साल ही है, यह छोटी है। कुछ नहीं समझती।'' रिजवान ने कुछ नहीं कहा। चुपचाप वहाँ से चला गया। थोड़ी देर बाद नौकर आया और उसने मेरे अब्बा से कहा कि उन्हें सरकार बुला रहे हैं। अब्बा डरते–डरते अन्दर गये। लगभग आधे घंटे के बाद बाहर आए। उसके चेहरे से परेशानी झलक रही थी। वे अम्मी को बुलाकर कुछ समझाने लगे।

अम्मी गुस्से में बड़बड़ाने लगी, ''तुम्हारी अक्ल पर पत्थर पड़ गया है। मेरी कमसिन सी लड़की को तुम उस जल्लाद के हवाले करना चाहते हो। इससे अच्छा है कि हम अपने ही हाथों से उसका गला घोट दें।

अब्बा ने समझाते हुए कहा, ''देख, गुस्सा मुझे भी बहुत आया था पर क्या करूँ। ऐसे कब तक हम भूखे रहेंगे और इन जवान होती बेटियों को लेकर कहाँ मारे–मारे फिरेंगे? किस–किस की बुरी नज़र से बचाएँगे?

वैसे भी दो साल बाद इसकी शादी तो करनी ही है। रिजवान में क्या बुराई है? खाते–पीते घर के मर्द जवान ही रहते हैं। हमारे यहाँ तो औलाद के लिए पाँच बीवियाँ जायज़ हैं। इससे रजिया का निकाह कर देंगे तो कम से कम इसे खाता–पीता घर मिल जाएगा और हमें एक छत और हर महीने दो बोरी धान मिल ज़ाया करेगा।

अम्मी लाचार थी। बस अगले दिन हमारा निकाह हो गया। हमारे अब्बा, अम्मी और बहन गाँव चले गए। अम्मी ने जाते–जाते समझाया कि शौहर जो कहे उसे चुपचाप मानना। बस उसके बाद चुपचाप वही करती आयी हूँ जो शौहर ने कहा। सब कुछ सह लेती हूँ पर हर रात का दर्द झेलने में बहुत तकलीफ़ होती है।'' कहते हुए रजिया की आँखों से मोटी–मोटी आँसुओं की धार निकल पड़ी।

''सिस्टर रिजवान को अन्दर बुलाओ।'' रजिया ने डरकर डॉ. नीलम की ओर देखा। डॉ. नीलम ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा, ''घबराओ नहीं मैं कुछ नहीं कहूँगी।'' रिजवान अन्दर आया ओर अन्दर आते ही बोला, ''बड़ी देर लगा दी डॉक्टर आपने। सब कुछ ठीक तो है न?''

''नहीं सब कुछ ठीक नहीं हैं।'' डॉक्टर ने कहा।

''क्यों क्या हुआ? इसने कुछ कहा?''

''नहीं, इसने कुछ नहीं कहा परन्तु इतनी कम उम्र में माँ बनने के कारण इसे और इसके बच्चे को ख़तरा है। इसके शरीर में ख़ून की कमी है। इसका ज़्यादा ख़्याल रखना।'' डॉ. नीलम ने समझाया।

''ठीक है डॉ. साहिब, मैं ध्यान रखूँगा। आख़िर यह मेरे बेटे को जन्म देगी। वरना मैं तीसरी शादी क्यों करता। बस लड़का हो जाए तो इस पर किया गया ख़र्च सब वसूल हो जायेगा।'' ''चल घर चल'' रिजवान ने डॉ. नीलम की लिखी पर्ची उठायी और चल पड़ा। रिजवान के पीछे–पीछे चलती रजिया सोच रही थी – औलाद चाहे जो हो, वह उन्हें कुरूढ़ियों से बचाएगी। बचपन से उन्हें इतना मज़बूत बनाएगी कि वे इनका विरोध कर सकें।

डॉ. अनीता पंडा
आर्मी पब्लिक स्कूल, 101 एरिया
द्वारा 99 ए. पी. ओ, शिलांग, मेघालय

बिलारी

रामसुन्दर कई दिनों से बीमार था। दवा के लिए पैसे नहीं थे। सबसे गिड़गिड़ाकर थक गया। सब उसे जानते थे, किसी ने पैसे नहीं दिए। गाँव के एक बुजुर्ग के पैरों पर रामसुन्दर को लिटा कर फफक–फफक कर रोने लगा। बच्चे पर तरस खाकर उन्होंने दवा के लिए पैसे दिए थे। पैसे पाकर मन डोल गया और डॉक्टर के पास न जाकर बच्चे को कंधे पर लादे वह सीधे शराब के ठेके पर आ गया था। आज वही पैसा उछाल मार रहा था।

''देखो तो साला कैसे पी रहा है।' एक शराबी ने झूमते हुए दूसरे से कहा। ''पा गया होगा कहीं से कुछ पैसा।'' दूसरे शराबी ने भी नफरत से बिलारी को देखते हुए कहा–'' आज तो अपने लड़के को भी यहीं ले आया है।''

''इसको भी तो शराब पीना सिखाएगा न।''

''हाँ, अभी से सिखाएगा तभी न बुढ़ापे में बाप के लिए शराब जुटाएगा।''

दोनो किलकारी मारते हुए वीभत्स हँसी–हँसने लगे।

एक कोने में एक आदमी तीन–चार साल के बच्चे को कंधे पर लादे, एक छोटे से गिलास में शराब पी रहा था। दोनों के कपड़े मैले–कुचैले, कहीं–कहीं से फटे भी थे लेकिन सामने पूरी बोतल रखी थी। एक दोने में चना–मुरमुरा नहीं, कचौड़ी रखी थी। पीने के बाद संतुष्टि से कभी अपनी खिचड़ी मूछों पर हाथ फिराता, कभी बच्चे की पीट सहलाता। चेहरा कठोर हो रहा था। सलीका नहीं था लेकिन माल पूरा था और गाँठ में पैसा था। कंधे पर बच्चा सो रहा था।

यह था बिलारी। उकड़ू बैठा दनादन पीये जा रहा था। बोतल खत्म हो गई तो दूसरी मंगा ली। कचौड़ी खत्म हुई तो अगला दोना आ गया। इतनी दिलदारी से कोई नहीं पी रहा था, न किसी के पास इतने पैसे थे, पर किसी के दिल में बिलारी के लिए इज्जत नहीं थी। शराब देने वाला छोकरा भी उसे घृणा से देख रहा था, लेकिन बिलारी को किसी की परवाह नहीं थी। आज उसके पास बहुत पैसा था, शराब थी, कचौड़ी थी और कंधे पर बच्चा सो रहा था। शराब ने असर दिखाया या उकड़ू बैठे–बैठे थक गया था, बिलारी पसर कर बैठ गया। बच्चे को कंधे पर उतार कर जमीन पर लिटा दिया। बच्चा जागा नहीं, सोता रहा और बिलारी पीता रहा।

बिलारी नाम शायद उसकी भूरी आँखों की वजह से पड़ा था या उसकी झपट्टा मार प्रवृत्ति के कारण, लेकिन उसका असली नाम कोई नहीं जानता था। बिलारी का बाप कौन था, कोई नहीं जानता लेकिन उसकी माँ को सब जानते थे। काली–कलूटी झुलनी, मैल और गंदे कपड़ों की वजह से और भी काली लगती थी। गाँव के बच्चे उसे चुड़ैल कहते थे। बिचारी, बड़े लोगों के घरों में बर्तन मलती, खेतों में काम करती, तब जाकर कुछ खाने का जुटता। उसने बहुत चाहा और चाहते–चाहते मर गई कि बिलारी कुछ पढ़–लिख जाए। कुछ काम–धाम कर ले, पर बिलारी आवारा निकल गया। उसे एक सवाल से चिढ़ थी–''ऐ बिलारी, तेरे बाप का नाम क्या है?''

यही सवाल, स्कूल में भी पूछा गया, इसलिए स्कूल छोड़ दिया। यहीं सवाल, गाँव के लड़के पूछते, इसलिए उनकी संगत छोड़ दी। उसे नफरत थी अपने अनजाने बाप से और इस सवाल से।

हाँ, शराब की बोतल यह सवाल नहीं पूछती ओर शराब पीने के बाद कोई पूछता भी था तो उसे दुख नहीं होता था। बिलारी चौदह साल की उम्र में ही पक्का शराबी बन गया। शराब पीकर न स्कूल जा सकता

था न गाँव, इसलिए पड़ा रहता था सड़क के किनारे, किसी पेड़ के नीचे। पीना और मिल जाए तो खाना। ना काहू से दोस्ती न काहू से बैर। लेकिन बिलारी इस तरह पूरे समाज से कैसे कट सकता था? उसे समाज में जाना पड़ता था। माँ की मामूली जमा–पूँजी खत्म हो चुकी थी, नथनी, हँसुली बिक चुकी थी, झोपड़ी बड़े लोगों ने हथिया ली और जमीन तो कभी थी ही नहीं। वह लोगों के पास जाता, रोता–गिड़गिड़ाता, अपने भूखे होने की दुहाई देता तो बड़े लोग कुछ पैसे फेंक देते। वह फिर पी लेता और अपनी दयनीयता को गर्क कर लेता बेहोशी में लेकिन ऐसा ज्यादा दिन नहीं चला।

बिलारी को उनके घरों में, खेतों में काम करना पड़ता, चंपी मालिश और पशुओं की सानी–पानी करनी पड़ती, तब जाकर शाम को शराब के लिए पैसे जुटते। कभी–कभी तो पैसों की बजाय अनाज मिलता तो वह अनाज बेचकर शराब पी जाता। गाँव वाले भी उसकी शराबखोरी से तंग आ गए थे लेकिन बुजुर्गों के मन में अपराध–बोध था कि गाँव का लड़का है, चाहे जैसा भी हो। न जाने कौन बाप है इसका? झुलनी से तो लगभग सभी के संबंध थे। उस सम्बन्ध को वे स्वीकार तो नहीं कर सकते थे सिर्फ परदा डाल सकते थे। पर, बिलारी जवान हो गया है।

गाँव वालों ने खोज–खोजकर एक अनाथ लड़की शीतला से बिलारी का विवाह करा दिया। उसे अच्छा लगा कि वह किसी का स्वामी है। बाबू साहब ने उसे एक छोटी–सी पान की दुकान करवा दी बस स्टेशन पर। बदले में बिलारी से सादे कागज पर अँगूठा लगवा लिया और बाप का नाम भी नहीं पूछा। बिलारी को अच्छा लगा। वह कमाने लगा। कुछ पैसे घर लाता बाकी बाबू साहब को दे देता। बाबू साहब ने अपने घर के पीछे उसकी झोपड़ी बनवा दी थी। बिलारी अब भी लोगों से कतराता था। न जाने कब, कौन उसके बाप का नाम पूछ बैठे। घर पर शीतला कभी–कभी रोटी–चटनी, कभी–कभी प्याज की तरकारी बनाती। दोनों खाते और एक–दूसरे को अपनी दुनिया समझते। ऐसे ही रोटी–चटनी खा–खाकर शीतला का पेट फूलता गया और नौ महीने बाद बिलारी बाप बन गया। छोटे–से मरियल रामसुंदर का बाप।

गर्व से छाती फूली थी बिलारी की। जीवन में पहली बार छाती तनी थी उसकी। अब कोई पूछता ''ऐ बिलारी, तेरे बाप का क्या नाम है?''

''ऐसी की – मेरे बाप की। लेकिन राम सुन्दर के बाप हम हैं।'' बिलारी कहता।

शराब तो शादी के बाद से छूट ही गई थी। उसके मन में बाप की जिम्मेदारी बढ़ने लगी। जल्दी–जल्दी खूब कमाना चाहता था। वह सट्टा लगाने लगा। बाबू साहब बिगड़ते तो जवाब देता–''मालिक, आपको अपना पैसा मिल रहा है न। अपने पैसे से हम सट्टा खेलें या आग लगाएँ किसी को क्या मतलब।''

और एक दिन सट्टा लग गया। बिलारी को पाँच हजार रुपये मिले। पाँच हजार! सबने सुना, जलकर रह गए। स्वभाव है समाज का। बाबू साहब ने सुना, वे तत्पर हो गए। स्वभाव है साहूकार का। उनके पास सादे कागज पर बिलारी के अँगूठे का निशान था। बाबू साहब ने कई बार का कर्जा दिखा दिया। बिलारी बहुत रोया–गिड़गिड़ाया परंतु सब व्यर्थ। ग्रहण लग गया उसकी खुशी को। खुश होने पर क्या करते हैं यह तो बिलारी जानता था लेकिन दुःखों को दबाना नहीं जानता था। यही सिखाया था उसे उपेक्षा और ताड़ना ने। शीतला ने बहुत समझाया उसे, पर बिलारी फिर भटक गया। बहुत कमजोर निकला। एक धक्के ने ही उसके साहस को निचोड़ कर रख दिया।

रामसुन्दर कई दिनों से बीमार था। दवा के लिए पैसे नहीं थे। सबसे गिड़गिड़ाकर थक गया। सब उसे जानते थे, किसी ने पैसे नहीं दिए। गाँव के एक बुजुर्ग के पैरों पर रामसुन्दर को लिटा कर फफक–फफक कर रोने लगा। बच्चे पर तरस खाकर उन्होंने दवा के लिए पैसे दिए थे। पैसे पाकर मन डोल गया और डॉक्टर के पास न जाकर बच्चे को कंधे पर लादे वह सीधे शराब के ठेके पर आ गया था। आज वही पैसा उछाल मार रहा था।

''एक बिलारी, तेरे बाप का.....।''

झटके से उठ गया वह। गुस्से से तमतमा रहा था–''कोई बाप नहीं है मेरा।'' मुँह से गालियों की बौछार होने लगी।

''कमीनों, तुम्हीं में से कोई मेरा बाप होगा। असली हरामी की औलादो...।'' और फिर लुढ़क गया।

सभी खी–खी कर हँस पड़े। वे भी जो खुद नशे में धुत थे।

बार–बार यही सवाल–बिलारी तेरे बाप का नाम....बिलारी उठता फिर गिर पड़ता। अबकी बार हिम्मत जुटा कर उठा। मुँह से गाली झर–झरझर रही थी। दो कदम चला, संभाल नहीं पाया। धड़ाम से गिर पड़ा। सिर मेज के कोने से टकराया, फट गया। खून की धारा बह उठी। एक आह निकली। ठहाके लगाती आवाजें खामोश हो गईं। सिर्फ बच्चे के चीखने की आवाज गूँज रही थी। बिलारी कराहता रहा..खून बहता रहा... थोड़ी देर बाद कराह बंद हो गई..... आँखें स्थिर हो गईं।

लोग कभी बिलारी को देखते, कभी बच्चे को...फिर अपने–अपने रास्ते हो लिए। ठेके वाले ने बिलारी को घसीट कर बाहर डाल दिया। बच्चा रो रहा था....पिता को हिला रहा था....। सुबह सबने देखा...बिलारी मरा पड़ा था। बच्चा चुपचाप बैठा था। शायद रोते–रोते थक गया था।

● **माया मिश्र**
रघुवीर सिंह मॉडर्न सी. सै. स्कूल,
एल–2, मोहन गार्डन, दिल्ली

राम–रहीम

परीक्षा सर पर आ रही थी और नन्हें मेहमानों के जाने का समय भी। इस पूरी प्रक्रिया में पूरी कक्षा में परिवर्तन आ चुका था। सब में एकता, मित्रता, अहिंसा, सौहार्दता छा चुकी थी। हिमांशु व असलम के प्रति भय का स्थान मित्रता ने ले लिया था।

''मैडम–मैडम, ऐश्वर्या का घर तो आबाद हो गया, उसके कुएं में कबूतरों ने अंडे दिये हैं।'' मैडम, कितने प्यारे लग रहे हैं, वह छोटे–छोटे अंडे....!'' चौथी कक्षा में प्रवेश करते ही कौतूहल से भरे बच्चों ने मुझे घेर कर सूचनाओं की बौछार कर दी। ऐश्वर्या चहकी–''सब दूर हटो, कोई मेरे घर के पास न आना, मैडम, देखिए न, इन्होंने सुबह से परेशान कर रखा है।''

दरअसल, विज्ञान के प्रोजेक्ट हेतु मैंने विभिन्न प्रकार के मकानों के प्रतिरूप बनाकर लाने को कहा था। बच्चों ने दिलोजान से एक से बढ़कर एक मॉडल तैयार किये थे। किसी ने खपच्चियों पर बने असम के मकान, तो किसी ने बहुमंजिली इमारतें। चुनिंदा 'मॉडल' को हमने कक्षा में पीछे की ओर बनी खुली अलमारी में सजाकर रख छोड़ा था। उन्हीं में से एक मॉडल ऐश्वर्या का था जिसने गाँव का खूबसूरत दृश्य थर्माकोल के मॉडल से खींचा था।

उसके मॉडल में अल्पनाओं से सुसज्जित झोंपड़ी, उसके बाहर चारपाई पर बैठा किसान, घर के आँगन में पेड़ और थर्माकोल का बना कुआं, जिसे कबूतरों ने अपने अंडे देने के लिए चुन लिया और उस घर को आबाद कर डाला था।

''किन्तु मैडम, हिमांशु और असलम कहीं इन अंडों को छू न लें? उनका क्या भरोसा फोड़ ही न डालें'' आनंद बोला। इतना सुनते ही मेरे माथे पर भी शिकन आ गई। एक तो बच्चों का कौतूहल और उस पर वे दोनों शरारती स्वभाव के बालक मेरी चिंता का कारण थे। सभी को अपना स्थान ग्रहण करने के निर्देश देकर मैंने उन्हें संबोधित किया– ''आप सब एक–एक करके बताइए कि आप कहाँ–कहाँ रहते हैं?

''मैं आदित्य आवास में रहता हूँ।''

''मैं गुमानपुरा में रहती हूँ।''

''मैं तलवण्डी से आता हूँ।''

''ठीक है, ठीक है....क्या आप में से कोई इसी विद्यालय में रहता है?'' मेरे इस सवाल पर सभी का सम्मिलित उत्तर 'न' में था।

मैंने फिर प्रश्न किया–''आप के घर यदि मेहमान आते हैं तो क्या वे बिना पूछे आपकी चीज़ें छेड़ते हैं या आपको परेशान करते हैं?'' इस बार भी उत्तर 'न' में ही था।

फिर मैंने समझाया, ''विद्यालय के प्रांगण में रहने वाले पक्षी, कीड़े–मकोड़े, तितलियाँ आदि का यह पर्यावरण प्राकृतिक घर है। हम यहाँ मेहमान की तरह आते हैं, अपने कार्यकलापों से निवृत्त हो लौट जाते हैं। किन्तु इनके घर मे दखलअंदाजी करना गलत है। यह तो हमारा सौभाग्य है कि इन्होंने हमारी कक्षा के इस मॉडल को इतना सुरक्षित स्थान माना कि उस में अपने अंडे दिए हैं। आपको प्राकृतिक जीवन–चक्र का जीवंत उदाहरण अपनी ही कक्षा में देखने को मिल रहा है। पक्षी भी ममता, कर्तव्यपरायणता से ओतप्रोत होते हैं। ये आप स्वयं देख सकते हैं। किन्तु एक बात का आप सबको विशेष ध्यान रखना होगा–कोई भी विद्यार्थी उन अंडों को या उनमें से निकलने वाले नन्हें बच्चों को छूने की कोशिश भी न करना, अन्यथा ये पक्षी उनका त्याग कर देंगे व यह घोर पाप कहलाएगा। यदि आप उनकी सहायता करना चाहते हैं तो इस खड़की पर उनके लिए दाना–पानी रख सकते हैं। कोई अन्य सवाल यदि आपके मन में है तो पूछ लें।''

ऐश्वर्या मेरी अनुमति से खड़ी होकर बोली, ''मैडम, हम सब तो ये बात खूब समझ गए किंतु हिमांशु तो आपके जाते ही इन अंडों को छेड़ेगा। असलम तो कह रहा था, आज मैं ये अंडे ले जाकर खाऊँगा।''

और पूरी कक्षा खिलखिला कर हँस पड़ी। मेरा इशारा पाकर सब शांत हुए तो मैंने गंभीर स्वर में घोषणा की, ''आज से इन अंडों की रक्षा की जिम्मेदारी हिमांशु व असलम की है। यदि वे कुशलतापूर्वक इसे निभा सकें तो इन दोनों को वर्ष भर के लिए 'मोनिटर' चुन लिया जाएगा व इनकी अंकतालिका में जिम्मेदार शिष्य अंकित किया जाएगा और जो विद्यार्थी इन्हें यह ज़िम्मेदारी निभाने में सहयोग नहीं देंगे, वे सजा के हकदार होंगे।''

पूरी कक्षा की प्रश्नभरी निगाहें मेरे चेहरे से हटकर उन दोनों के चेहरों पर जा टिकीं। वे दोनों हतप्रभ हो मेरा मुँह ताक रहे थे। इस घोषणा ने सबके साथ–साथ उन्हें भी भौंचक्का कर दिया था। जब पूरी कक्षा ने मेरे साथ–साथ करतल ध्वनि से उन्हें प्रोत्साहित किया तो उनकी आँखों की चमक देखने लायक थी। चेहरे की कुटिल मुस्कुराहट का स्थान ममतामई मुस्कान व गर्व ने ले लिया था।

मेरी यह घोषणा उन्हें कितना प्रभावित कर देगी, इसका अंदेशा मैं स्वयं भी पूरी तरह से न लगा सकी थी। अब तो प्रतिदिन मैं उन दोनों बालकों में आए परिवर्तन को देख रही थी। नियम से खिड़की पर दाना–पानी रखना, किसी विद्यार्थी को पीछे, अलमारी की ओर न जाने देना, यहाँ तक कि कबूतरों के कक्षा में प्रवेश करते ही पंखां कर देना, जाने से पूर्व खिड़कियाँ बंद करना, कि कहीं बिल्ली न आ जाए। क्या ये वही शरारती, हिंसात्मक प्रवृत्ति के बालक हैं, जिनसे पूरी कक्षा भयभीत रहती थी।

आखिर वह दिन भी आया जब अंडों से नन्हें पंखविहीन बच्चे निकल आए। सबके कौतूहल को विराम देते हिमांशु और असलम प्रहरी बन खड़े थे, कि जब तक मैडम की आज्ञा नहीं होगी, कोई उनके दर्शन भी न कर सकेगा।

हमने तय किया कि जब कबूतर–कबूतरी न हों तब दो–दो बच्चे दूर से उन्हें देख सकते हैं। कुछ ही दिनों में उनकी चहचहाट बच्चों को अधिक आकर्षित करने लगी। माँ का बच्चों को चोंच से चुग्गा देना सबको लुभाता, परन्तु हमारे प्रहरी पूरी मुस्तैदी से अपनी जिम्मेदारी को निर्वाह कर रहे थे।

सोने पर सुहागा यह कि अब न सिर्फ उनकी शिकायतें आनी कम हुईं अपितु उनके अंदर सौहार्द, अनुशासन, सहनशीलता व अहिंसा की पनपती भावनाओं की प्रशंसा अन्य अध्यापकगण भी करने लगे थे। उनकी वेशभूषा, बोलचाल, हावभाव व कार्यकलाप सभी उन नन्हें पक्षियों के साथ–साथ उन्नति की ओर अग्रसर हो रहा था। नन्हें बच्चों के शरीर पर पंख आते ही वे कबूतर लगे थे। कभी–कभी वे फुदक कर दूसरे मकानों का मुआयना भी करने लगे थे।

परीक्षा सर पर आ रही थी और नन्हें मेहमानों के जाने का समय भी। इस पूरी प्रक्रिया में पूरी कक्षा में परिवर्तन आ चुका था। सब में एकता, मित्रता, अहिंसा, सौहार्दता छा चुकी थी। हिमांशु व असलम के प्रति भय का स्थान मित्रता ने ले लिया था। आखिर एक दिन उन पक्षियों ने नन्हीं उड़ान भरी और फिर तो वे आज़ाद पछियों की तरह माता–पिता के साथ ही उड़ गए। कभी–कभी वे लौट कर आते तो हिमांशु व असलम उनके स्वागत में पंखे बंद कर देते।

बच्चों ने बताया कि ये दोनों तो उन नए कबूतरों को नाम भी रख चुके हैं। पूरी कक्षा के सामने मैंने उन दोनों में आए इस अद्‌भुत परिवर्तन की प्रशंसा की तो सभी विद्यार्थी करतल ध्वनि से अपनी सहमति दे रहे थे और अविराम तालियां गूँज उठीं जब मैंने उनसे उन पंछियों का रखा नाम पूछा और उन्होंने शर्माते हुए बताया–'राम–रहीम!'

● **सीमा शर्मा**
बख्शीज स्प्रिंडेल्स सी. सै. स्कूल,
बोरखेड़ा, कोटा, राजस्थान

जीवन शैली

आकाश स्वागत के लिए दरवाजे पर ही खड़ा था। सुंदर–स्मार्ट तो वो पहले भी था मगर अब और भी रूप निखर आया था। राहुल, दीपक, अजय, विजय और आकाश सालों बाद मिलकर धन्य हो गए। उन सबके लिए आज बहुत बड़ी खुशी का दिन था।

विजय आज आकाश की बहुत याद आ रही है तुझे याद है न मैं, तुम, दीपक, राहुल सब उसके साथ मिलकर शरारत करते थे मगर डॉट सिर्फ उसको खानी पड़ती थी। और एक दिन ऐसा भी आया, हमारे जीवन में जब आकाश स्कूल छोड़कर न जाने कहाँ चला गया सपिरवार।

तू बता, अजय मैं कैसे ढूंढूं जितने भी ठौर–ठिकाने थे सब जगह हम लोगों ने तलाशने की कोशिश की है बावजूद हमारी पढ़ाई और कैरियर के। हाँ ये तो है, दीपक कम्प्यूटर इंजीनियर हो गया है उससे कहेंगे वो शायद ढूंढ़ सके अपने यार को।

अजय अध्यापक है। रविवार अवकाश होता है, दीपक मल्टीनेशनल कंपनी में हो मगर आज उसने भी छुट्टी की। राहुल प्रॉपर्टी डीलर है। अपने पुराने यार के लिए वह भी सब काम छोड़छाड़ कर दोस्तों के पास आया और विजय तो संगीत अध्यापक है घर में ही कोचिंग सेन्टर खोल रखा है सो छुट्टी नहीं करनी पड़ी अपितु उसी के घर में सब लोग मिले। ढेरों नई–पुरानी बातें हुईं और दीपक ने आकाश को ढूंढ़ने की जिम्मेदारी ली।

आज रात दीपक की आँखों में नींद नहीं थी। वो कम्प्यूटर पर सर्च करता रहा, करता रहा....करता रहा। जाने कितने आकाश दीपक के कम्प्यूटर पर उतर आए थे, अभी हार मानने ही वाला था दीपक कि एक चेहरा कुछ–कुछ जाना पहचाना सा लगा। ये वही कहते हैं जहाँ दीपक को आकाश के मिलने की अपार खुशी थी वहीं आकाश का बायोडाटा पढ़कर हैरानगी भी थी।

आकाश कृषि वैज्ञानिक बन चुका था और आज दो एकड़ में उसका फार्म हाऊस था जिसके एक बड़े हिस्से में उसने स्टडी सेंटर खोला हुआ था। दीपक को तो बातचीत के दौरान यकीन करना ही पड़ा किन्तु बाकी सभी दोस्त विस्मित थे और जल्द से जल्द आकाश से मिलना चाहते थे।

आगामी रविवार को जाना निश्चित हुआ आकाश के पास। उसका फार्म हाऊस हरिद्वार से 50–55 कि. मी. दूर था। राहुल के पास कई गाड़िया थीं, एक बड़ी गाड़ी और ड्राईवर को साथ लेकर प्रातः चल पड़ें, नींद ही कहाँ आई सबको।

ज्यूं–ज्यूं गंतव्य स्थान के करीब पहुँच रहे थे त्यूं त्यूं सब के दिल की धड़कने तेज हो रही थीं। पुरानी बातों में न जाने कब रास्ता करा गया और अब गाड़ी एक सुंदर और बड़े बंगले के सामने खड़ी थी। गेट पर गार्ड ने एंट्री करवाई और दिशा निर्देश दिए कि किस और जाना है।

आकाश स्वागत के लिए दरवाजे पर ही खड़ा था। सुंदर–स्मार्ट तो वो पहले भी था मगर अब और भी रूप निखर आया था। राहुल, दीपक, अजय, विजय और आकाश सालों बाद मिलकर धन्य हो गए। उन सबके लिए आज बहुत बड़ी खुशी का दिन था।

अन्दर गए तो आकाश के माता–पिता विराजमन थें। स्वस्थ एवम् खुश। सबने उनके पैर छुए, मंगल समाचार पूछे व बतलाए उन्हीं के साथ सब दोस्तों ने चाय–नाश्ता लिया : तत्पश्चात् सभी दोस्तों को आकाश फार्म हाऊस दिखाने ले गया।

सभी दोस्त आकाश की प्रगति को देखकर स्तब्ध थे, हैरान थे। आकाश भी उनकी हैरानगी को समझ रहा था। वह भी सब बताना चाहता था जो वो पूछना चाहते थे। इन्हीं खयालों में आकाश 15 वर्ष पीछे पहुँच गया जब वह पाँचवीं कक्षा में था। वही क्यूँ हम सब पांचवी कक्षा में थे।

कितना शरारती था आकाश। मार–पिटाई, झगड़ा, तितलियों को पकड़कर मार डालना, फूलों को तोड़कर फेंक देना शायद प्रिय काम था उसका और इसी वजह से वह सभी अध्यापिकाओं, विद्यार्थियों की आँख का किरकिरी था।

उन्हीं दिनों एक नई अध्यापिका शैली विद्यालय में आई और आकाश की जीवन शैली ही बदल गई। यह बात सिर्फ आकाश स्वयं जानता है बाकि दोस्तों को तो यही मालूम था कि पढ़ाई छोड़कर भाग गया और माता–पिता शायद परेशान होकर गांव चले गये।

हुआ यूं कि प्रतिदिन की भांति आज भी आकाश ने अनेकों फूल तोड़े और मिट्टी में रौंद दिए। शैली मैडम ने ऐसा करते हुए उसे देख लिया था मगर कुछ कहा नहीं। जब कक्षा में आई तो प्यार से अपने पास बुलाया और.....कहा.... आकाश बेटा, ये आपने क्या किया? देखों ये वही फूल हैं जो तुमने तोड़े थे, कितने उदास हो गए हैं, मुरझा गए हैं देखो। जब ये खिले हुए थे तो कैसे थे.....ये भी उतने ही खूबसूरत थे जितने तुम हंसते–खेलते लगते हो! बच्चे अगर आपको कोई मारता–पीटता है तो आप भी इन्हीं की भांति मायूस हो जाते हो.....हैं ना.....।

आप तो फिर भी अपना दर्द किसी के साथ बांट सकते हो मगर ये फूल, ये पौधे, ये तितलियाँ ये तो सब बेजुबान हैं....और ये मिट्टी .....ये तो हम सब की माँ है धरती मां। एक दिन सभी को इसी में विलीन हो जाना है क्योंकि चर–अचर सब कुछ इसी से उपजता है और इसी में मिल जाता है। यह प्रकृति का नियम है।

शैली मैडम ने आगे कहा, ''एक बात और बेटा....हमारे भारतवर्ष में धरती का काफी बड़ा क्षेत्र इन्हीं पीड़ाओं की वजह से बंजर हो गया है। अगर तुम्हारे जैसे बच्चे, आने वाली भावी पीढ़ी पढ़–लिखकर नए–नए शोध करे, इस क्षेत्र में अपने जीवन का लक्ष्य अथवा जीवनयापन के लिए कार्यक्षेत्र चुनें तो ये धरती भी सोना उगलने लगेगी।''

बस यारों उसी दिन मैंने अपना लक्ष्य भी और कार्य क्षेत्र भी चुन लिया जिसका परिणाम आप सब के सामने है। यह सुनकर सभी के चेहरे पर हँसी तैर गई।

● **सुषमा भण्डारी**
दिल्ली नगर निगम विद्यालय,
जनकपुरी, डी–ए
पश्चिमी क्षेत्र, दिल्ली

दर्द का अहसास

वह आदमी फूट–फूट कर रोने लगा व बोला, ''मैं अपने कर्मों का फल भुगत रहा हूँ। सारा जीवन मैंने कभी मांसाहारी भोजन तो कभी शिकार के शौक के कारण निर्दोष प्राणियों की हत्या की। केवल आत्मसंतुष्टि को सर्वोच्च माना। परंतु आज इस अवस्था में आने के बाद मैं इस पीड़ा का अनुभव कर सकता हूँ कि जिन जीवों को मैंने सताया है, शायद उन्हीं की आह ने मेरी यह स्थिति की है।

एक बार की बात है। दो दोस्तों ने लम्बी पद्यात्रा का निश्चय कर लिया। उन्होंने सब जरूरी सामान एकत्रित किए जैसे पानी की सुराही, सोने के लिए चटाई, रास्ते के लिए भोजन व कुछ धन तथा जंगली जानवारों से सुरक्षा के लिए लाठी भी रख ली। दोनों यात्रा पर निकल पड़े। वह कुछ दूर निकल गए। जब वे जंगल के बीचों–बीच पहुँचे तो अचानक उन्हें भय सताने लगा परंतु दोनों एक–दूसरे के सामने निडर होने का अभिनय कर रहे थे।

अकस्मात उन्हें किसी की चीख सुनाई दी। वे भयभीत हो गए। उनको यह पहचान पाना भी कठिन हो गया कि यह चीख किसकी है? एक दोस्त दूसरे से कहने लगा, ''चलो आगे जाकर देखते हैं, कहीं किसी पर कोई मुसीबत तो नहीं आई।'' जब वे आगे गए तो उन्होंने एक व्यक्ति को दर्द से कराहते देखा। दोनों दोस्त तेज़ी से उसके पास पहुँचे। उन्होंने उस आदमी से पूछा, ''भाई तुम्हें क्या हुआ है? तुमने इस तरह चीख क्यों मारी?''

वह आदमी फूट–फूट कर रोने लगा व बोला, ''मैं अपने कर्मों का फल भुगत रहा हूँ। सारा जीवन मैंने कभी मांसाहारी भोजन किया तो कभी शिकार के शौक के कारण निर्दोष प्राणियों की हत्या की। केवल आत्मसंतुष्टि को सर्वोच्च माना। परंतु आज इस अवस्था में आने के बाद मैं इस पीड़ा का अनुभव कर सकता हूँ कि जिन जीवों को मैंने सताया है, शायद उन्हीं की आह ने मेरी यह स्थिति की है।

उन दोस्तों ने पूछा, ''लेकिन तुम्हें हुआ क्या है? वह आदमी बोला, ''कुछ दिन पहले की बात है। कोई शिकार खेलने इस जंगल में आया था। मैं भी इसी उद्देश्य से पेड़ के पीछे किसी जानवर की ताक लगाए बैठा था। उन्हें लगा पेड़ के पीछे कोई जानवर है। उन्होंने इसी दिशा में गोली दाग दी। जब उन्हें पता लगा कि पशु की जगह किसी मनुष्य को घायल कर दिया है, वे वहाँ से भाग गए। अब इस घने जंगल में भला मुझे बचाने कौन आता? तब से इसी तरह दर्द से कराहता रहता हूँ। मेरा घाव गहरा होता जा रहा है। शायद इसी तरह तड़प–तड़प कर मृत्यु के समीप जाना ही मेरा भाग्य है। मुझे अपने ही कर्मों की सजा मिल रही है।''

उस व्यक्ति की बातें सुन दोनों मित्रों का मन बहुत विचलित हो गया। उन्होंने उसके घाव को साफ किया व अपने साथ घर वापस ले आए। वहाँ उसकी मरहम पट्टी की एवं स्वस्थ कर उसके घर पर भेज दिया। वे अपने काम से संतुष्ट थे कि हमने किसी की इस प्रकार सहायता की। बाद में दोनों ने विचार किया कि वे भी सिर्फ अपने आनंद के लिए छोटे कीड़ों को तो कभी–कभी गली में जानवरों को पत्थर मार कर सताते रहते हैं। क्या इस सबका परिणाम इतना भयावह होता है। तब उन्होंने प्रण किया कि वे कभी भी किसी निर्दोष प्राणी को नहीं सताएंगे एवं किसी भी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करेंगे।

संगीता
सेंट विवेकानंद मिलेनियम स्कूल,
एच. एम. टी. टाऊनशिप,
पिंजौर, हरियाणा

खिलती बगिया

नीला उस समय चुप रही लेकिन उसने मन में ठान लिया था कि वह बच्चे के स्वास्थ्य के बारे में जाँच करा लेगी लेकिन भ्रूण के लिंग की जाँच का विरोध करेगी। चाहे बेटी आए या बेटा, उसे सहर्ष स्वीकार है लेकिन स्वस्थ बच्चे का किसी भी कीमत पर गर्भपात नहीं कराएगी।

आज नीला की आँखों से अविरल जलधारा बह रही थी जो रुकने का नाम नहीं ले रही थी। ये खुशी के आँसू थे। नीला पलंग पर सोई हुई माँ जी को एकटक देखे जा रही थी, न जाने कितने सारे आशीर्वचन सुनाकर वे सोई थीं। आज माँ जी को अचानक तेज पेट दर्द हो गया था और वे बुरी तरह घबरा गई थीं। तभी उनकी पोती श्वेता ने आकर उन्हें पेट दर्द की दवाई दी और बड़े प्यार से समझाया, ''दादीजी! वृद्धावस्था में खान–पान के कारण अक्सर ऐसा हो जाता है, घबराने की कोई ज़रूरत नहीं, आप बिल्कुल ठीक हो जाएँगी।'' दादी ने गोली खाकर और अपनी पोती की दिलासा भरी बात सुनकर राहत की साँस ली।

श्वेता तो हॉस्पिटल चली गई लेकिन दादी बिना रुके श्वेता और उसकी मम्मी को दुआएँ देती रही, ''ईश्वर ऐसी लायक पोती सभी को दे। मेरी श्वेता छूट तो पूरे परिवार का नाम रौशन कर दिया। किसी ने ठीक ही कहा है ''पुत्री अच्छी पुत्र से अगर सुपुत्री होय, पुत्र सँवारे एक कुल, पुत्री सँवारे दोय।'' और दादीजी ने जाने क्या–क्या दुआएँ देती हुई सो गई। नीला की आँखों के सामने पच्चीस साल पुरानी बातें घूमने लगीं....।

नीला एक बहुत ही सहनशील और सुघड़ गृहिणी थी। सास–ससुर की सेवा करना और परिवार वालों को मान–सम्मान देना वह भली–भाँति समझती थी। दिन हँसी–खुशी से बीत रहे थे। नीला की पड़ोस में रहने वाली मीता से उसकी अच्छी दोस्ती हो गई थी। फल–सब्जी खरीदते समय कही ना कहीं दोनों की मुलाकात हो जाती थी। रोज–रोज की मुलाकातें दोस्ती में बदल गई।

एक दिन बाजार से लौटते समय नीला ने मीता से उसके परिवार के बारे में पूछ लिया। मीता ने बताया कि घर में उसके सास–ससुर, पति और छोटा देवर हैं। बच्चों के बारे में पूछने पर मीता कुछ दुःखी हो गई और बात का विषय बदल दिया।

नीला की शादी को दो साल हो गए थे और अब वह भी माँ बनने की सोच रही थी। इसी कारण से वह अपनी सहेली मीता से उसके बच्चों के बारे में जानना चाहती थी। एक दिन नीला के सास–ससुर कहीं बाहर गए हुए थे। नीला घर में अकेली थी, तभी दरवाजे की घंटी बजी। नीला ने दरवाजा खोला तो दरवाजे पर मीता को देखकर उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। दोनों सहेलियों ने मिलकर इधर–उधर की खूब सारी बातें कीं।

अचानक बातों को सिलसिला बीच में ही रोककर मीता ने कहा, ''नीला, मैं तुम्हें कुछ बताना चाहती हूँ, क्या तुम्हें यह पता चले कि मैं कभी माँ नहीं बन सकती तो क्या तुम मुझ से दोस्ती तोड़ दोगी?'' ''नहीं, बिल्कुल नहीं। और फिर तुम ऐसा क्यों सोचती हो कि तुम कभी माँ नहीं बन सकती, ऐसा क्या कारण है? जरा मुझे समझाइये।'' नीला ने कहा।

''आज से चार साल पहले में माँ बनी थी, घर में सभी को बहुत खुशी हुई थी, लेकिन मेरी सास को पोता ही चाहिए था, इसलिए वह मेरी जाँच कराना चाहती थी।.....''लेकिन इस प्रकार की जाँच तो निषेध है,

बच्चे के लिंग के बारे में बताने पर तो डॉक्टर को सजा हो सकती है।'' ''नीला ने मीता की बात को बीच में काटते हुए कहा।

''हाँ–हाँ तुम बिल्कुल ठीक कह रही हो, लेकिन आज भ्रष्टाचार हर जगह व्याप्त है, पैसों के लालच में लोग नियम और कानून को अनदेखा कर देते हैं। मैं थोड़ी संकोची स्वभाव की रही हूँ, इस कारण से सास की बातों का प्रतिरोध नहीं कर सकी। मेरी सास मुझे जान–पहचान के एक डॉक्टर के पास ले गई और भ्रूण जाँच करा ली। जाँच से पता चला कि गर्भ में पलने वाला शिशु बेटी है। मेरी सास और परिवार को यह सुनकर अच्छा नहीं लगा और उन्होंने मेरा गर्भपात कराने का मन बना लिया। दब्बू स्वभाव की होने के कारण मैं मेरे ससुराल वालों का विरोध नहीं कर पाई। बस उस गर्भपात के बाद से विधाता ने मेरी बगिया में ओर कोई गुल नहीं खिलाया। मैं और मेरी सास दोनों ही स्त्री होने के बावजूद बेटी की कद्र नहीं कर सके, इसलिए ईश्वर ने एक सबक के तौर पर हमें यह दण्ड दिया है।'' कहते–कहते मीता की आँखें और गला भर आए।

नीला ने मीता को सांत्वना दिलाई और कहा, ''ईश्वर हम मनुष्यों की तरह निष्ठुर नहीं हैं, अगर तुम्हें अपनी करनी पर पछतावा है तो वे जरूर तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करेंगे।'' थोड़ा दिल शांत होने के बाद मीता अपने घर चली गई।

कुछ दिनों बाद मीता को अपने शरीर में कुछ शारीरिक परिवर्तन महसूस होने लगे। दिल घबराने लगा, खाते समय मितली होने लगी और स्वाद बदलने लगा। जब नीला ने अपनी सास को यह बात बताई तो उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। नीला की कोख में एक नन्हें मेहमान के आने के लक्षण दिखाई दे रहे थे।

समाज में उन दिनों भ्रूण जाँच का बोलबाला कुछ ज्यादा ही जोर पर था। नीला को खुशी के साथ–साथ डर भी लग रहा था कि कहीं उसके साथ भी तो नीला वाली कहानी नहीं दोहराई जाएगी। नीला की सास ने बताया कि तीन–चार महीने बाद वह नीला की जाँच कराएगी।

नीला उस समय चुप रही लेकिन उसने मन में ठान लिया था कि वह बच्चे के स्वास्थ्य के बारे में जाँच करा लेगी लेकिन भ्रूण के लिंग की जाँच का विरोध करेगी। चाहे बेटी आए या बेटा, उसे सहर्ष स्वीकार हे लेकिन स्वस्थ बच्चे का किसी भी कीमत पर गर्भपात नहीं कराएगी।

देखते ही देखते तीन महीने बीत गए। एक दिन नीला की सास उसे हॉस्पिटल ले गई। नीला की सास ने भी चुपचाप बच्चे के लिंग का पता लगा लिया था। बच्चा बिल्कुल स्वस्थ था लेकिन थी बेटी। हालाँकि नीला की सास ने उस समय कुछ नहीं कहा लेकिन दबी–दबी जुबान में अपनी बात नीला के कानों में डाल दी, ''अगर पहला बच्चा बेटा आ जाए तो बहुत अच्छा रहता है, पढ़–लिखकर कमाऊ बनकर जल्दी ही परिवार को संभाल लेता है।''

हमेशा शांत रहने वाली नीला को यह बात बिल्कुल बर्दाश्त नहीं हो पाई। उसने अपनी सास को दो टूक शब्दों में उत्तर दे दिया, ''माँ जी चाहे बेटा हो या बेटी, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। मेरे लिए दोनों समान हैं। और हाँ, एक बात में आपसे कहना चाहती हूँ। बेटी होने से भी गर्भपात के बारे में हरगिज नहीं सोचना, मैं अपने जीते जी ऐसा कतई नहीं होने दूँगी।''

एक बेटी को संसार में लाने के लिए नीला में न जाने कैसे एक अद्‌भुत शक्ति आ गई थी–''माँ जी आप तो सब जानती हैं कि सृष्टि का विकास लड़का–लड़की दोनों से होता है, बेटियाँ अगर इसी तरह गर्भ में मरती रहीं तो उनका अनुपात इतना कम हो जाएगा कि लोगों को अपने बेटों के लिए बहू मिलना भी मुश्किल हो जाएगा। बेटियों की कमी से समाज में अपराध और भी बढ़ेंगे।''

नीला के विरोध के सामने सास दोबारा मुँह नहीं खोल सकी। मीता ने भी नीला की बात का समर्थन करते हुए कहा, ''नहीं आँटी जी, गर्भपात के बारे में बिल्कुल नहीं सोचना। मैं यह गलती करके आज तक पछता रही हूँ। मैं चाहती हूँ कि संसार की कोई भी नारी ऐसा कदम नहीं उठाए और न ही किसी और को उठाने के लिए मजबूर करे। अपनी बेटी को बचाने के लिए अगर कानून का सहारा भी लेना पड़े तो संकोच नहीं करना चाहिए।''

नौ महीने के बाद नीला ने एक स्वस्थ बिटिया को जन्म दिया। उसने अपनी बिटिया का लालन–पालन बड़े लाड़–प्यार से किया। उसे संस्कारी बनाया और उच्च शिक्षा दिलवाई। आज उनकी बेटी श्वेता डॉक्टर बनकर परिवार का नाम रौशन कर रही है।

नीला की सहेली मीता के घर बहुत पूजा–अर्चना और इलाज के बाद एक बिटिया ने जन्म लिया, जिसका नाम उन्होंने 'चाहत' निकाला। आज मीता की बिटिया भी पुलिस में अधिकारी है। दोनों सहेलियों को अपनी होनहार बेटियों पर गर्व है। ''हे प्रभु! तेरा शुक्रिया...। माँजी के करवट बदलने पर नीला वर्तमान में लौट आई । एक सुकून भर साँस लेकर वह रसोईघर में चली गई।

● **संतोष यादव,**
वंदना इंटरनेशनल स्कूल,
सेक्टर–10, द्वारका, दिल्ली

विज्ञान–यात्रा

बच्चों के विचारों को सुनकर शिकारी ने कहा कि तुम हमारी भलाई के लिए बहुत कुछ सोचते हो, इसके लिए शुक्रिया लेकिन पेड़ों को काटने से पर्यावरण असंतुलित हो जाएगा और ठीक समय पर वर्षा भी नहीं होगी। इससे अकाल पड़ सकता है। इसलिए हमें पेड़ों को नहीं काटना चाहिए।

एक जंगल में कुछ शिकारी रहते थे। वे खेतीबाड़ी का काम करते थे, पेड़–पौधं उगाते थे, जानवरों को पालते थे। इसी से उनका जीवन चलता था। वे शिकारी हमेशा उनकी आवश्यकताओं के अनुसार ही शिकार करते थे। शिकार करते वक्त यह भी देखते थे कि कौन से जानवरों की संख्या ज़्यादा है और उन्हीं का शिकार करते थे।

लकड़ियों के लिए ज़्यादातर हरे पेड़ों को नहीं काटते थे व सूखे पेड़ों से ही लकड़ियों को बटोरते थे। वे उसी तरीके से अपना जीवन बिताते थे जिस तरीके से उनके पूर्वज कई सौ सालों से इस जंगल में रह चुके थे। उनको किसी भी चीज़ की कमी नहीं थी। सभी आवश्यक चीज़ों को वे वन से प्राप्त करते थे।

एक दिन एक पाठशाला के विद्यार्थियों का समूह उस वन में विज्ञान–यात्रा के लिए आया था। वे सभी बच्चे शहर में रह रहे थे, इसलिए जंगलों के बारे में नहीं जानते थे। उन बच्चों ने जब वन में उन शिकारियों को देखा तो उन्हें लगा कि शिकारी इस जंगल में बिना किसी सुविधा के कैसे रह रहे हैं? वे तो कुएं के मेंढ़क की तरह जी रहे हैं। बच्चों ने निश्चय कर लिया है कि वे उन शिकारियों को कुछ जीने के तरीके सिखाकर ही जाएँगे। उनको नागरिक बनाने के लिए और उनका उद्धार करने के लिए कई तरह के विचार आपस में सोच रहे थे।

कुछ समय बाद बच्चों ने एक खरगोश देखा और उसे पकड़ना चाहा। सभी बच्चे उसके पीछे भागने लगे। भागते–भागते एक लड़का गिर कर घायल हो गया। वह लड़का जोर से रोने लगा। सभी बच्चे उसे घेर कर उसे घूरने लगे। किसी की समझ में यह नहीं आ रहा था कि क्या किया जाए? तभी कुछ बच्चे अध्यापक को बुला लाने के लिए कैंप की ओर दौड़ पड़े और बाकी बच्चे घबराहट के साथ उसे देख रहे थे। इतने में वहाँ एक शिकारी आया। कुछ पत्तों को पौधों से तोड़कर उससे रस निकाल कर घाव पर डाला और कुछ पत्तों से ही उस घाव पर पट्टी बाँधी।

सब बच्चे यह देखकर चकित हो गए। वे सोचने लगे कि कोई अनपढ़ व्यक्ति इस तरीके से कैसे कर सकता है। कुछ ही देर में वह बच्चा उठकर चलने लगा जो गिर गया था। सब बच्चों ने शिकारी का शुक्रिया अदा किया और उससे पूछा कि आप इस जंगल में कैसे रह रहें हैं? आपकी सहायता करने के लिए कुछ विचार सोच रखे हैं। हम चाहते हैं कि आप यहाँ के बड़े–बड़े पेड़ों को काटकर लकड़ियों से कई तरह की वस्तुएँ बनाकर बेच सकते हैं। बेचकर बहुत पैसे कमा सकते हैं। उन पैसों से आप सभी तरह की सुविधाओं को खरीद सकते हैं। जैसे कि बिजली और रैफ्रीजिरेटर। और यहां बहुत सारे छोटे–छोटे कीड़े हैं। जब हम बड़े हो जाएँगे तब कीड़ों को मारने की दवा बनाएँगे।

बच्चों के विचारों को सुनकर शिकारी ने कहा कि तुम हमारी भलाई के लिए बहुत कुछ सोचते हो, उसके लिए शुक्रिया लेकिन पेड़ों को काटने से पर्यावरण असंतुलित हो जाएगा और ठीक समय पर वर्षा भी

नहीं होगी। इससे अकाल पड़ सकता है। इसलिए हमें पेड़ों को नहीं काटना चाहिए।

हमें वृक्षारोपण करना है और वृक्षों की रक्षा करनी चाहिए। सभी कीड़े बुरे भी नहीं होते हैं। कुछ ऐसे कीड़े भी होते हैं जो किसान के दोस्त होते हैं। उन्हीं के कारण पेड़–पौधों से हम फल और सब्ज़ी प्राप्त करते हैं। बिना कीड़ों के हमें पेड़–पौधों से किसी भी प्रकार के फल–सब्ज़ी नहीं प्राप्त होंगे, इसलिए सभी कीड़ों को मारना भी उचित नहीं है।

शिकारी की इन बातों से सभी बच्चे प्रसन्न हुए और पेड़ों की रक्षा करने की और निरपराध प्राणियों का वध नहीं करने की प्रतिज्ञा ली। अपनी विज्ञान–यात्रा को सफल बनाकर वे वापस लौट चले।

बि. वि. किरण
आश्रम पब्लिक स्कूल,
काकिनाडा, आंध्रप्रदेश

उपहार

डायना और माइकल पर गहरा प्रभाव पड़ा। तीनों ने अणुव्रत लिया कि आज से पेड़–पौधों से घृणा नहीं करेंगे, अपितु पेड़–पौधों को अपना मित्र मानेंगे। घर में लगे नकली पौधों को हटा देंगे तथा उनके स्थान पर असली पौधे लगवाएंगे।

यूरोप के प्रसिद्ध शहर लंदन में एक एँगलो इण्डियन परिवार रहता था जिसके मुखिया डॉ. सुदर्शन थे। उनके साथ उनकी पत्नी डायना और इकलौता पुत्र माइकल भी रहता था। परिवार हँसी–खुशी अपना जीवन व्यतीत कर रहा था। कि अचानक एक कार दुर्घटना में डॉ. सुदर्शन की मृत्यु हो गई। डायना पर मानो दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा हो। ऐसे में हिंदुस्तान से सुदर्शन के पिताजी का तार आया जिसमें माँ–बेटे को हिंदुस्तान बुलाया गया था।

हिंदुस्तान जाने के ख्याल से ही डायना घबरा गई क्योंकि उसने हिंदुस्तान की गर्म जलवायु और वहां पाए जाने वाले पेड़–पौधों, झाड़–झंखड़ों और तरह–तरह के कीड़े–मकोड़ों के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था। डायना माइकल के दादा का आग्रह ठुकरा नहीं पाई और मजबूरी में ही पुत्र समेत हिन्दुस्तान आ गई।

दादा जी के विशाल बंगले को देखकर माइकल तो बहुत खुश था लेकिन बंगले के पीछे बने बड़े से बगीचे को देखकर डायना डर गई। उसने यह भी देखा कि बंगले में जगह–जगह तरह–तरह के पौधे गमलों में लगे थे। डायना ने माइकल को यह सख्त हिदायत दी कि वह अपने कमरे से बाहर न निकले तथा बाग–बगीचे में जाने की हिम्मत भी न करे।

माइकल माँ की बात को ठीक से समझ तो नहीं पाया लेकिन उसने स्वयं को कमरे में कैद कर लिया अब वह दिनभर टी. वी. देखता, कम्प्यूटर पर गेम खेलता। उसका सारा दिन ए. सी. की हवा मैं बैठे–बैठे ही बीत जाता। दादा जी डायना और माइकल के व्यवहार से खुश नहीं थे लेकिन उन्हें टोक कर घर में अशांति नहीं फैलाना चाहते थे। इसी तरह माइकल और उसकी माँ को कमरे में कैद रहते–रहते लगभग दो महीने बीत गए।

एक दिन अचानक माइकल चक्कर खाकर गिर पड़ा और बेहोश हो गया। डायना ने बहुत कोशिश की कि बेटा होश में आ जाए लेकिन माइकल नहीं टूटी। डायना बहुत घबरा गई क्योंकि माइकल का शरीर नीला पड़ता जा रहा था, वह दादा जी को बुला लाई। दादा जी तुरंत माइकल को लेकर अस्पताल चले गए।

वहाँ डॉक्टरों ने सबसे पहले उसे ऑक्सीजन लगाई और फिर तरह–तरह की जाँच–पड़ताल शुरू कर दी। तीन दिन तक माइकल आईसीयू में भर्ती रहा। चौथे दिन जब उसकी जाँच रिपोर्ट सामान्य आई तो डॉक्टरों ने उसे घर ले जाने की अनुमति दी। ये तीन–दिन मानो डायना के लिए तीन जन्मों के बराबर थे।

उसने डॉक्टर से माइकल की बीमारी तथा उसमें आई कमज़ोरी का कारण पूछा तो डॉक्टर ने बताया, माइकल के शरीर में पौष्टिक तत्वों की तथा उसके रक्त में ऑक्सीजन की कमी आ गई है। दादा जी बहुत ही गंभीर मुद्रा में खड़े डायना और डॉक्टर की बातचीत सुन रहे थे। वे बिना कुछ बोले माइकल को घर ले आए। घर आते ही उन्होंने ऐलान किया कि आज से माइकल उनके साथ रहेगा और जैसा वे चाहेंगे वैसा ही भोजन उसे दिया जाएगा।

डायना ने पहली बार अपने ससुर को इतना गुस्से में देखा था, अतः उनके आगे वह कुछ बोलने की हिम्मत नहीं कर पाई। माइकल का सामान दादा जी के कमरे में पहुँचा दिया गया। यह कमरा बगीचे से सटा हुआ था। इसमें ताजी हवाएँ आती थीं। यहाँ रहकर माइकल स्वयं को कुछ ठीक महसूस करने लगा। अब वह खाने में जंक–फूड छोड़कर हरी–पत्तेदार सब्ज़ियाँ और बगीचे के ताजे मीठे फल खाने लगा।

वह सुबह–शाम दादाजी के साथ सैर पर जाने लगा। पन्द्रह ही दिन में माइकल स्वस्थ हो गया। वह पहले से अधिक सुंदर दिखने लगा। माइकल के स्वास्थ्य में आए सुधार को देखकर उसकी माँ डायना भी अपने

कमरे से बाहर निकल आई। वह भी सुबह–शाम बगीचे में सैर करने लगी। उसने भी विदेशी खान–पान त्याग कर फलों और सब्ज़ियों को अपना लिया।

थोड़े ही दिनों में उसके स्वास्थ्य में भी अभूतपूर्व परिवर्तन आया। अब वह पहले से अधिक मिलन–सार हो गई, क्योंकि किसी ने ठीक ही कहा है, 'स्वस्थ तन में स्वस्थ मन का निवास' होता है। एक दिन अचानक डायना की माँ हिंदुस्तान आई और बेटी और नाती में आए परिवर्तन को देखकर चकरा गई। दोनों पहले से अधिक सुंदर और स्वस्थ लग रहे थे।

नानी जी ने जब दादा जी से उनके आए परिवर्तन का राज़ पूछा तो दादाजी ने बताया, ''इन दोनों ने अपने आप को प्रकृति से दूर कर दिया था। परिणामस्वरूप ये बीमार हो गए। यह रंग–बिरंगे फूल जहां प्रकृति की सुंदरता को बढ़ाते हैं, वहीं हमारे मन को प्रसन्न रखते हैं। ताजे फल व सब्ज़ियाँ हमारे शरीर को पौष्टिक तत्व देते हैं जिससे शरीर स्वस्थ और सुंदर बनता है।''

दादा जी की बातों का नानी जी, डायना और माइकल पर गहरा प्रभाव पड़ा। तीनों ने अणुव्रत लिया कि आज से पेड़–पौधों से घृणा नहीं करेंगे, अपितु पेड़–पौधों को अपना मित्र मानेंगे। घर में लगी नकली पौधों को हटा देंगे तथा उनके स्थान पर असली पौधे लगवाएंगे। बगीचों का रखरखाव स्वयं करेंगे, पर्यावरण की हर संभव रक्षा करेंगे तथा दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करेंगे। वे स्वयं न तो कोई पेड़–पौधे काटेंगे और नहीं दूसरों को काटने देंगे। भविष्य में अपने मित्रों को सदा उपहार में पेड़–पौधे ही देंगे। पर्यावरण की रक्षा को अपने जीवन का एक मिशन बनाएंगे।

● **पूनम**
एम. एम. पब्लिक स्कूल,
वसुधा एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली

नई दिशा

उस पर उन्होंने मुझे समझाया कि जिंदगी की समस्याओं से बचकर, मुँह छुपाकर भक्ति करना मेरी निगाह में भक्ति नहीं है। मैं समाज तो नहीं सुधार सकती पर यदि अपनी गृहस्थी बचा सकूँ और तुम्हारे पिताजी को नशे के इस दलदल से निकाल पाई तो यही मेरी सच्ची ईश्वर आराधना होगी।

जगत आज बहुत खुश था। उसका जन्मदिन जो था। आज उसी की तो पार्टी दी है उसके बॉस ने। दरअसल उसके बॉस अपने छोटे भाई की तरह ही चाहते हैं, वह उसकी योग्यता के कायल थे।

''अरे भाई! जगत तुम साथ नहीं दोगे तो पार्टी में रंग कैसे जमेगा''। हाथ में ड्रिक लिये प्रकाश ने जगत से कहा, ''नहीं तुम पीओ, मैं नहीं पीऊँगा।'' ''अरे वाह! बर्थ डे बॉय ही नहीं पीएगा तो फिर मजा ही नहीं आएगा। देखो भई, आज हम तुम्हारी एक नहीं सुनेंगे। थोड़ी तो तुम्हें पीनी ही पड़ेगी।''

जगत ने हँसते हुए पुनः इन्कार किया और वहाँ से उठने लगा। ''अरे भई लेकर आओ, आज तो जगत पीएगा भी और डांस भी करेगा।'' सहसा पीछे से आवाज आई। सबने पीछे मुड़कर देखा। बॉस खुद जगत की मनुहार कर रहे हैं। यह देख दोस्तों का उत्साह बढ़ गया और सब जगत को जबरदस्ती पिलाने की कोशिश करने लगे। ''नहीं'' जगत जोर से चीखा और सबका हाथ झटक कर हॉल के बाहर चला गया। सभी स्तब्ध हक्के–बक्के देखते रहे गए।

गैलरी में खड़ा जगत दूर आसमान में शून्य को ताक रहा था। आवेश के कारण उसका सारा बदन काँप रहा था। उसकी आँखें भरी हुई थीं। सहसा उसे अपने कंधे पर किसी के हाथ का स्पर्श महसूस हुआ। पलटकर देखा, उसके बॉस थे। ''सॉरी सर''। जगत ने धीरे से कहा। '' कोई बात नहीं।'' एकटक उसके चेहरे की तरफ देखते हुए उसके हाथों को अपने हाथ में लेकर हल्के से थपथपाते हुए बॉस ने कहा।

जगत ने अपने आँसुओं को छुपाने का प्रयास किया पर असफल रहे बॉस ने पूछा, ''जगत तुम मेरे भाई जैसे हो, चाहो तो अपनी बेचैनी मुझसे शेयर कर सकते हो।'' बॉस के बहुत समझाने पर जगत ने अपनी आप बीती बतानी शुरू की।

जगत का स्वर इस तरह सुनाई दे रहा था जैसे गहरे कुएँ से आवाज आ रही हो। वह अपने अतीत में खो गया। जगत कह रहा था ''सर! मेरी माँ एक बहुत ही पढ़े–लिखे सम्भ्रांत परिवार से हैं। खुद भी अच्छी खासी पड़ी लिखी हैं। जब उनकी मेरे पिताजी से शादी हुई, तब वह अपने भविष्य से अन्जान पिताजी के साथ बहुत खुश थीं।

पिताजी शुरू में कभी–कभार ड्रिंक किया करते थे जिसका माँ दबे स्वरों में विरोध करती रहती थीं पर पिताजी उन्हें हमेशा यह दलील देकर समझा लेते थे कि यह तो मैंने दोस्तों के कहने पर थोड़ी–सी ले ली थी। मैं इसका आदी थोड़े ना हूँ। बात आई–गई हो जाती थी। माँ संस्कारी परिवार से थी, अतः झगड़ा करना व तमाशा करना उन्हें नहीं आता था। बस उनकी इस शराफत का फायदा उठाते हुए पिताजी कब शराब के आदी हो गए थे, उन्हें खुद भी नहीं पता चला।

माँ हम बच्चों को ऐसे माहौल में नहीं रखना चाहती थी। वह हमारे भविष्य को लेकर बहुत चिंतित थीं। मैं और मेरी बहिन उस समय चौथी, पांचवीं, कक्षा में ही पढ़ते थे। माँ को छोड़कर कहीं जाने की बात मेरे लिए एक सजा जैसी थी। पर मेरी माँ ने मुझे और मेरी बहन को हमारे ब्राइट फ्यूचर के बहुत सपने दिखाए। हमें बहुत ही प्यार और विश्वास से यह बात समझाई की शहर में पढ़ाई करके हमारा भविष्य बन जाएगा। बिना अपनी परेशानी बताए उन्होंने मुझे व मेरी बहन को होस्टल में जाने के लिये राजी कर लिया। हम दोनों होस्टल चले गए।

पिताजी का पीना दिनोंदिन बढ़ गया। कहते हैं ना कि पहले इन्सान शराब को पीता है और फिर शराब इन्सान को। वही हाल पिताजी का होने लगा। जो पिताजी माँ को दिलोजान से चाहते थे, उन्हें अब माँ दुश्मन जान पड़ती थी। पीने के बाद वह उनका बहुत अपमान करते थे क्योंकि माँ उनके पीने का जमकर

विरोध करने लगी थीं। पर पापा दिल के बहुत अच्छे इन्सान थे। इसलिये सुबह जब उनका नशा उतर जाता था तब वे बहुत ही शर्मिन्दा होते थे।

हर दिन कस्में खाते, वादे करते कि अब बिल्कुल नहीं पीएंगे पर हर दिन असफल हो जाते। अपनी इस असफलता की खीज में और अधिक पीने लगते। स्थिति दिन–पर–दिन बिगड़ती जा रही थी। मेरी माँ पिताजी को सही राह दिखाने व सम्हालने में जी–जान से लगी हुई थी। वह पिताजी के पीने पर चाहे जितनी नाराज हो जाए, चाहे जितना बोलें पर आखिरकार वह उन्हें दिलोजान से चाहती थी। पिताजी के नशे के विरोध में वह कई–कई दिनों तक खाना नहीं खाती थीं जिसके कारण उनका स्वास्थ्य गिरने लगा।

माँ के बिगड़ते स्वास्थ्य को देख पिताजी अब पछताने लगे थे। फिर भी वह शराब को नहीं छोड़ पाते। हालात इतने बिगड़ गए कि पिताजी पीने के बाद शर्मिन्दा होकर कई बार जोर–जोर से रोने लगते या कभी माँ को भूखा देख फ्रस्टेशन में उनको मारने दौड़ते। उनका पूरी तरह से नैतिक पतन हो चुका था।

फिर एक दिन इस सारी स्थिति से घबराकर मेरी माँ ने आत्महत्या की कोशिश की। मेरे पिताजी अन्दर तक हिल गए। अब वह माँ के लिए कुछ भी करने को तैयार थे। अतः माँ के कहने पर अपना इलाज कराने के लिये भी तैयार हो गए। एक वैद्य ने उन्हें कुछ दवाइयाँ दीं, जिनके असर में कुछ दिन तो सब ठीक रहा पर कमजोर इच्छा शक्ति के चलते वह फिर से पीने लगे।

अब तक हम दोनों भाई बहिन की पढ़ाई पूरी हो चुकी थी। माँ घर के हालात बताना नहीं चाहती थीं और घर से दूर ही रखना चाहती थीं। पर अब उनके पास कोई बहाना भी नहीं था सो हम घर आ गए। माँ के लाख छुपाने पर भी घर के हालात हमारे सामने आ गए। बहिन की तो जल्दी ही शादी कर दी गई पर मैं अच्छी सर्विस पाने के लिये जगह–जगह इंटरव्यू देता रहा। एक बार मैंने माँ से कहा, ''आप क्यों घुलती हैं छोड़ दो ना पापा को उनके हालात पर। आप तो वैसे भी बहुत भक्तिभाव वाली हैं। अपने जाप–पाठ में ही मन लगाया करो ना।''

उस पर उन्होंने मुझे समझाया कि जिंदगी की समस्याओं से बचकर मुँह छुपाकर भक्ति करना मेरी निगाह में भक्ति नहीं है। मैं समाज तो नहीं सुधार सकती पर यदि अपनी गृहस्थी बचा सकूँ और तुम्हारे पिताजी को नशे की इस दलदल से निकाल पाई तो यही मेरी सच्ची ईश्वर आराधना होगी। साथ ही मैं चाह हूँ कि अब जब तुम यह देख ही चुके हो तो मुझसे यह वादा करो कि तुम जिंदगी में कभी भी इस बर्बादी की राह पर नहीं जाओगे। कभी भी नहीं।

तुम्हें जिंदगी में कई लोग बहकाने वाले मिलेंगे, कई बार तुम्हारे मन का असुर भी तुम्हें इस राह पर चलने का आग्रह करेगा पर तुम हमेशा अपने आपको मजबूत साबित करोगे। करोगे ना बेटा।'' इतना कहकर जगत का गला रुध आया। उसने अपने आपको सम्हाला फिर कहा, ''अब आप ही बताइये सर मैं अपनी माँ की बात कैसे टाल सकता हूँ। उनकी बेबसी, उनका रोता–सिसकता चेहरा और हर बाद दृढ़ता के साथ पिता को सम्हालने का साहस यह सब मैं कैसे भूल सकता हूँ। नहीं सर नहीं। मैं कभी भी शराब या कोई भी अन्य नशा नहीं करूँगा। मुझे माफ करें।''

तालियों की गड़गड़ाहट को सुन जगत ने सिर उठाकर देखा, उसके सारे दोस्त न जाने कब से उसकी दर्द भरी कहानी सुन रहे थे। वे सब उसकी सराहना में ताली बजा रहे थे। उसके बॉस व दोस्तों ने सभी ने अपने हाथों के गिलास रख दिये थे। सबने कहा, ''नहीं जगत, अब हम भी कभी किसी तरह का नशा नहीं करेंगे। यह व्यसन हमें सिर्फ बर्बादी के रास्ते पर ही ले जाता है।'' बॉस ने जगत को प्यार से गले लगाया। ''चलो भई अब थोड़ी सी पेट–पूजा भी हो जाए।'' प्रकाश की बात पर सभी हँसते हुए पुनः हॉल में चले गए। आज जगत ने अपने जन्मदिन पर दोस्तों को एक बहुमूल्य पाठ पढ़ाया था। उसकी दर्द भरी कहानी सुन सभी को जीवन की नई दिशा मिल गई थी।

● **ज्योति सिहोरा**
तुलसी बाल विद्या मंदिर हाईस्कूल,
पेटलावद, जिला : झाबुआ, मध्यप्रदेश

बदली से निकला है चाँद

''अन्नी–आप जानती हैं.....मैं झूठी कसम नहीं खाता'' मामू की आवाज भर्रा रही थी फिर भी बोले जा रहे थे, ''मां–बाप को मैंने नहीं देखा–तुम्हीं मेरी माँ–तुम्हीं मेरा भगवान। झूठी कसम खाऊँ – तो अभी ..मर जाऊँ'' कहते–कहते माँ के कदमों में लौट गए। माँ भी अब खुद को रोक नहीं पाई–भावुकता के प्रवाह में दोनों गले लगकर रोने लगे...माँ बोल रही थी, ''तू तो मेरे मायके की इकलौती निशानी है। तेरा जीवन मुझे शिवम् बेटे से भी ज्यादा प्यारा है...बस .... मैं नहीं चाहती कि तू किसी बुरी लत का शिकार हो''

ऑफिस से लौट रहा हूँ। सामने से वर्मा जी का बेटा मोबाइल पर बतियाता चला आ रहा है। कानों में ईयर–फोन ठूंसे, अपने चारों ओर से बेखबर और मुझे ठेलते हुए निकल गया। कोई अदब नहीं–लिहाज़ नहीं। उस पर तुर्रा यह कि जनाब सिगरेट के धुएं में भी गिरफ्त थे। गाँव होता तो अभी कान से पकड़कर वर्मा जी के पास ले जाता। पर महानगरीय संस्कृति की संवादहीनता ने सामाजिक सरोकारों को ताक पर रख दिया है।

एक वह भी समय था जब गली का हर व्यक्ति चाचा–ताऊ, मौसा–मौसी बन कर जीवन मूल्यों के प्रति सचेत करता था। सोचते–सोचते मन यादों के रथ पर सवार होकर जा पहुँचा मेरे बचपन के गाँव में.....

जेठ की दुपहरी–माँ आंगन में बड़ियां तोड़ रही है, मैं कंचे खेल रहा हूँ। तभी पड़ोस की राधा मौसी आई। माँ के कान में धीरे से कुछ कहा– अचानक बड़िया तोड़ना छोड़ माँ घर के पिछवाड़े की ओर लपकी। राधा मौसी भी पीछे–पीछे। जब तक मैं भी वहाँ पहुँचा तो देखा, रतन मामा की पिटाई हो रही है। माँ दनादन धौल धप्पा किये जा रही थी। राधा मौसी उन्हें बचाने का अभिनय कर रही थी। मैं हैरान! क्या हो गया है? मामू चुपचाप काहे पिट रहे हैं? बहुत देर बाद पता चला कि पिछवाड़े की बगीची में मामू छिपकर सिगरेट पी रहे थे।

राधा मौसी ने अपने घर की दीवार से देखा तो झट माँ को बताने चली आई। सुनते ही माँ आपा खो बैठी थी। पूरा मोहल्ला समझा–बुझा रहा था। पूरा मोहल्ला समझा–बुझा रहा था। मामू रोते–रोते क्षमा मांगने के लिए मुँह खोलते ही थे कि माँ और बिफ जाती थी। मैं भी सहमा सा एक ओर बैठा था। ऐसे कोलाहल पूर्ण वातावरण में, मैं अबोध–भला कर भी क्या सकता था? हाँ–अलबत्ता रह–रहकर राधा मौसी पर क्रोध अवश्य आ रहा था.....मन ही मन में बड़बड़ा रहा था–

''सब इसी का किया धरा है'' ''चुड़ैल कहीं की माँ को चुगली करने आ पहुँची, 'इसकी तो जुबान जल जाये''.....और भी न जाने क्या–क्या बुरा–भला सोच डाला था मेरे बालमन ने राधा मौसी के बारे में। रोकर मामू की आंखें लाल हो गई थीं। अस्फुट स्वरों में बार–बार दोहरा रहे थे, 'मुझ से भूल हुई अन्नी.....फिर

कभी ऐसा .....न करूंगा। (मामू माँ को अन्नी कहकर पुकारते थे) माँ मर्माहत जीव की तरह कभी क्रोधित तो कभी भावुक हो उठती थीं।

सांझ ढ़ले बाबूजी जैसे ही घर में घुसे, माँ पुनः फट पड़ी। मामू की ओर आँखें तरेरते हुए बोलीं, ''अपने साथ–साथ 'इनके' लिए भी सिगरेट की डिबिया खरीद लिया करो, ये भी आज से पीने लगे हैं.....''

हैरानी–परेशानी के मिले–जुले भाव लिये बाबूजी अवाक् ही हो गये थे। माँ के व्यंग्य ने उन पर भी अप्रत्यक्ष कटाक्ष कर दिया था जिससे उनके चेहरे पर शर्मिन्दगी छलक आई थी। मुझे भी आज पता चल रहा था कि बाबू जी सिगरेट पीते हैं। कभी देखा ही नहीं था।

वहीं फर्श पर बैठते हुए बाबूजी मामू से मुखातिब हुए बड़े विनम्र भाव से, ...''बेटा.....क्यों पी तुमने सिगरेट? यह अच्छी चीज़ नहीं है।'' ''घी खा.....दूध पी.....फल मिठाई खा.....पर.....यह बहुत बुरी चीज है...'' मामू बड़बड़ाए, ''क्षमा कर दो–बाबूजी.....फिर भूल कर भी ऐसा न करूँगा''।

एक पल की चुप्पी के बाद नीचे नज़रें किये–किये बाबू जी फिर बोले, ''मैं.....रात के खाने के बाद..... एक सिगरेट.....पीता हूँ'' उनकी आवाज खड़खड़ा रही थी '' न पियुँ तो पेट में तकलीफ सी होती है.....गैस बनती है न.....''

''हाँ–हाँ.....उसे भी सिखा दो बहाने बनाना। ''कल से उसके भी पेट में दर्द होने लगेगा''.....। चूल्हा सुलगाते हुए माँ फिर सुलग उठी थी ''अब चुप भी हो जाओ भागवान.....वह माफी मांग तो रहा है।..... .क्या जान ले लोगी अब?'' बाबू जी भी बरस उठे थे। माँ फिर फुंफकारी, ''क्या भरोसा इसका.....कि फिर न पियेगा''? मामू साहस जुटाकर बोले, ''अन्नी, मुझ पर विश्वास करो.....आज पहली बार.....उत्सुकतावश....मैंने ऐसा किया....और यही आखिरी बार है.....तुम्हारी कसम–अन्नी.....''।

''खबरदार–मेरी झूठी कसम खाई तो।''

''अन्नी–आप जानती हैं.....मैं झूठी कसम नहीं खाता।'' मामू की आवाज भर्रा रही थी फिर भी बोले जा रहे थे, ''मां–बाप को मैंने नहीं देखा–तुम्हीं मेरी माँ–तुम्हीं मेरा भगवान। झूठी कसम खाऊँ – तो अभी ..मर जाऊँ।'' कहते–कहते माँ के कदमों में लौट गए। माँ भी अब खुद को रोक नहीं पाई–भावुकता के प्रवाह में दोनों गले लगकर रोने लगे...माँ बोल रही थी, ''तू तो मेरे मायके की इकलौती निशानी है। तेरा जीवन मुझे शिवम् बेटे से भी ज्यादा प्यारा है...बस .... मैं नहीं चाहती कि तू किसी बुरी लत का शिकार हो।''

''अन्नी, तेरी कसम–जब तक जिऊँगा–कोई भी नशा नहीं करूँगा....बस आज के लिए क्षमा कर दो।'' तभी बाबूजी ने भी जेब से सिगरेट की डिबिया निकाली और जलते चूल्हे में फेंकते हुए बोले, ''लो....मैं भी आज से नहीं पिऊंगा–प्रण करता हूँ''।

''यदि पेट में दर्द हुआ तो?'' माँ ने व्यंग्य किया। ''तो क्या.....सह लूँगा....सहूँगा..... कुछ दिन में सहने इतना भी नहीं कर सकता?'' ''रतन सिर्फ तुम्हारा है क्या? मैं भी तो उसका बाबूजी हूँ।'' कृतज्ञता व प्रेमाभार के भावों से माँ–मामू का चेहरा दिपदिपा उठा था। मैंने भी राहत की साँस लेते हुए आकाश की ओर मुँह किया तो देखा–बेमौसमी काले बादल उड़ रहे थे जिसके पीछे से पूनम का चांद झांक उठा था। मेरे भीतर स्वतः ही एक संकल्प जन्म ले रहा था।

समय पंख लगाकर बीतता गया–मैं भी बड़ा हो गया हूँ। मामू पुलिस में भर्ती हो गये–ट्रेनिंग के बाद लौटे तो हट्टे–कट्टे गभरू जवान लग रहे थे। माँ ने माथा चूमा–हंसकर मुँह सूंघने लगी। मामू बोल उठे, अन्नी–आपकी सौगन्ध खाई है.....तोड़ूँगा नहीं।'' माँ चहकी, ''पुलिस में भी सिगरेट पीना मना हो गया है क्या''?

''मेरी पुलिस तो तुम हो अन्नी।''

तभी भीतर से बाबूजी हंसते हुए निकले मामू को गले लगाते हुए बोले, ''मेरी तो थानेदार है भई..... तुम्हारी अन्नी।'' और सभी ठठाकर हंसने लगे थे...।

जब भी यह घटना याद आ जाती है.....तो राधा मौसी को जी भरकर दुआएं देता हूँ। उन्हीं के कारण हमारा परिवार व्यसन मुक्त जीवन जी रहा है।

सोच रहा हूँ.....ऐसे अनाम रिश्तों को क्या फिर से जीवित नहीं हो जाना चाहिए?

● **राजकुमारी शर्मा**
राजकीय उच्च माध्यमिक कन्या विद्यालय,
छत्तरपुर, दिल्ली

पठारी

उसने यह घटना घरवालों, गांव वालों, यार–दोस्तों सबको सुनाई। मोहर सिंह का पठारी आना–जाना बंद कर दिया गया। पर उसने तो शिक्षा के पुनीत कार्य को करने का बीड़ा उठा रखा था। अब वह अपने परिवार सहित पठारी में रहने लग गया था।

शाहाबाद पंचायत समिति के भयावह जंगल में बसा गांव पठारी। आज भी स्थानीय व्यक्ति की सहायता के बिना इस गांव में जाना आसान नहीं है। पठारी का दुर्गम रास्ता ऊँची–नीची, उबड़–खाबड़ चट्टानें, चट्टानों पर से गुजरती अनजान पगडंडी जो दल–बदलू नेता की तरह कभी इधर तो कभी उधर दिखाई पड़ती है। छोले, थौकड़े, शीशम, सागवान व तेन्दू के पेड़ों भरा हुआ जंगल, बीच–बीच में बबूल, खीजड़ा, करीर, जाल जैसे कंटीले छोटे–छोटे पौधे रास्ते में अपना सक्रिय सहयोग प्रदान करते हैं। गांव के एक तरफ पहाड़ी है तो दूसरी तरफ तलहटी घाटी। जंगली जीवों और डाकुओं के एकछत्र साम्राज्य में किसी का हस्तक्षेप नहीं। ये अपने इस स्वतंत्र वनराज्य में खुले आम विचरण करते हैं।

इस पठारी गांव में पास के ही एक गांव के मोहर सिंह नामक युवक का शिक्षाकर्म में शिक्षाकर्मी के लिए चयन हो गया। चयनोपरान्त प्रशिक्षण के दौरान बताया गया था कि शिक्षक साझेदार मालिक और कमाण्डो होता है। एक बार परिचय करते हुए सचिव, शिक्षकर्मी बोर्ड एस. एन. सेठी ने भी मोहर सिंह को कमाण्डो कहा था, इसलिए मोहर सिंह अब अपने आपको कमाण्डो ही समझने लगा था।

विद्यालय में शत–प्रतिशत नामांकन हेतु सर्वे क्षेत्र के कामकाजी बच्चों सहित 6 से 12 आयु वर्ग के समस्त बच्चों को विद्यालय से जोड़ना अत्यावश्यक था। प्रहर पाठशाला चलाने के लिए मोहर सिंह रोजाना शाम को पठारी आता और वापस अपने गांव जाता। जंगल के रास्तों से वह परिचित था, इसलिए 7–8 बजे तक आने–जाने में उसे कोई परेशानी नहीं थी। एक दिन उसने कहा, अरी! धन्नों गुरुजी आगवां, आजइयो जल्दी से, देर ना लगाइयों।''

''हाँ, मैं आय रही हूँ, तो सन्नों, बादाम को बुलाये ला। मैं रामी, थाप बुलाये लात हूँ''। धन्नो ने चमेली से कहा।

छः–सात बालिकाएं एक तरफ से आईं और तीन–चार बालक दूसरी तरफ से। सभी प्रहर पाठशाला के नियत स्थान पर आकर इकट्ठे हो गये। गुरुजी पढ़ाने लगे। सभी ने ध्यानपूर्वक पढ़ा, लिखना सीखा। जाते–जाते चमेली ने कहा, ''गुरुजी, हमार घर चलो ना ब्याह में। ''हाँ मैं...मैं वहीं जाने वाला था। चलो।''

मोहर सिंह शादी में खाना खाने गया। वहाँ उसे अपने मित्र मिल गये। बातों–बातों में समय का ध्यान तो रहा नहीं। रात के दस बज गये। अब अपने गांव में जाना तो संभव नहीं था। वह स्कूल में आया, दरी पट्टी बिछाई और चद्दर ओढ़ कर सो गया।

विद्यालय गांव से बाहर लगभग 100 मी. की दूरी पर है। रात के बारह बजे थे कि किसी ने कुण्डी खटखटाई, ''गुरुजी! गुरुजी!! जरा बाल्टी दये दो।'' मोहर सिंह ने सोचा कि कोई मेहमान है, पानी पीने के लिए बाल्टी मांग रहा है। कुन्डी खोली और कहा, ''ले लो वह कोने में।'' बाल्टी लेने वाले को वहीं भगोना भी मिल गया।

थोड़ी देर बाद मोहर सिंह को लघुशंका की शिकायत हुई। वह उठा और बाहर आया। बाहर स्कूल की दीवार की तरफ देखा तो उसकी आँखें फटी की फटी रह गईं, छाती पर साँप लौट गये, शरीर में काटो तो

खून नहीं। दीवार के सहारे एक–एक करके कई बन्दूकें खड़ी थीं। चार मुस्टण्डे पुलिस की वर्दी में बन्दूकें तानकर खड़े थे। मोहर सिंह झूठ–मूठ लघुशंका का नाटक करके दबे पांच भीतर चला गया। अपने ईश्वर को याद करे हर साँस में ईश्वर से मन्नत माँगने लगा अपने जीवन दान की। भगवान भी ऐसे समय में ही तो याद आता है।

डाकुओं ने जगरा जलाया, दाल बनाई, बाटियां सेकी, खाना खाया और जाने की तैयारी की। एक व्यक्ति भगोना और बाल्टी लेकर गुरुजी के पास गया, ''लो गुरुजी भगोना में दाल है और बाल्टी में बाटियाँ, आप भी खा लो। ''न''.....नहीं, मैंने.....खाना खा लिया है।'' मोहर सिंह की घिग्गी बंधी हुई थी। उस व्यक्ति ने दरवाजे के पास दोनों बर्तन रख दिये।

पेट पूजा करके डाकुओं ने अपनी राह ली। मोहर सिंह ने डरते हुए चुपके से बाहर देखा तो उसकी जान में जान आई। ईश्वर का शुक्रिया अदा किया, जान बची लाखों पाए यह सोचकर पुनः लेट गया, परन्तु अब उसे नींद नहीं आई। घर–परिवार, बाल–बच्चों को याद करते सवेरा हो गया।

उसने यह घटना घरवालों, गांव वालों, यार–दोस्तों सबको सुनाई। मोहर सिंह का पठारी आना–जाना बंद कर दिया गया। पर उसने तो शिक्षा के पुनीत कार्य को करने का बीड़ा उठा रखा था। अब वह अपने परिवार सहित पठारी में रहने लग गया था।

लगभग चार–पाँच महीने बीत गये। फागुन का महीना आया। जंगल में टेशु के फूल अंगारों की तरह जलते हुए दिखाई देने लगे। आदिवासी लोग जंगली उपज से अपने परिवार का पालन–पोषण करते हैं। उनकी आजीविका का मुख्य साधन सम्पन्न किसानों के यहाँ मजदूरी करना तथा जंगल में पैदा होने वाली उपज–शहद, गोंद, तेन्दू पत्ता, लकड़ी आदि बेचना है। गांव में रहने वाले सहरिये, गरासिये और भील जाति के लोग रोजगार की तलाश में अपने माल को लाद कर पलायन कर जाते हैं। थोड़ी बहुत मक्का, बाजरी, ज्वार पैदा हुई उससे अब तक चार–पांच महीनों का काम चल गया। आगे का गुजर–बसर चलाने के लिए ये लोग गांव से पलायन की तैयारी कर रहे थे।

इन्हीं परिवारों के दस–बारह छात्र, जिनमें बालिकाएं भी थीं, मोहर सिंह को इनके पलायन से पूर्व ही पता चल गया। वह चिन्तित था कि इन बच्चों में से एक भी शिक्षा से वंचित नहीं होना चाहिये। परन्तु इसका उपाय क्या किया जाए? इस प्रकार के मौसमी पलयान से नामांकन कम होने व ड्राप–आउट की सूचना बोर्ड में भी पहुँच चुकी थी। तत्कालीन सचिव एस. एन. सेठी भी इस विषय में कोई कार्य योजना बनाना चाहते थे परंतु मोहर सिंह तो अपनी ही कार्य योजना बना चुका था। वह इन छात्र–छात्राओं के अभिभावकों से मिला। वे बच्चों को छोड़ने पर सहमत हो गये।

अब बारी थी खाने–पीने की व्यवस्था करने की। उसने ग्राम के भामाशाहों से आग्रह किया। आसपास के गांव के लोगों से भी मिला, किसी से पैसे तो किसी से अनाज, आटा जो कुछ उसे प्राप्त हुआ, इकट्ठा किया और इन बच्चों के लिए खाने–पीने की व्यवस्था जुटा ली। अब मोहर सिंह के घर पर अल्पावधि छात्रावास चलने लगा था।

मोहर सिंह के इस प्रयोग की खबर संदर्भ इकाई मामोनी पहुँच चुकी थी। बोर्ड सचिव श्रीमान् सेठी साहब अवलोकनार्थ क्षेत्र में पधारे। उन्होंने संदर्भ इकाई में पलायन, ड्राप पर चर्चा की तो प्रशासन समन्वयक ने बताया कि आपका कमाण्डो मोहर सिंह पठारी में एक प्रयोग कर रहा है। उन्होंने इस प्रयोग को देखने की इच्छा जाहिर की।

अपनी पूरी टीम के साथ डॉ. सेठी पठारी पहुँच गये। उन्होंने गांव वालों से छात्रों के खाने–पीने, आवास व शिक्षा के बारे में जानकारी प्राप्त की। ग्रामीण शिक्षा समिति के संदर्भ व गाँव के अन्य लोगों ने मोहर सिंह गुरुजी की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

हर कोई गुरुजी की प्रशंसा के पुल बाँध रहा था। उन्होंने मोहर सिंह को बुलाकर कहा–''तुम बहुत–बहुत साधुवाद के पात्र हो मोहर सिंह। ''तुमने आज हमें ''न्यू कॉन्सेप्ट'' एक ''नवीन सम्प्रत्यय'' दिया है अल्पावधि छात्र का। तुम इसके जन्मदाता हो। हम बोर्ड स्तर पर सम्पूर्ण राजस्थान में इसका प्रयोग करेंगे।

''जी सर! यही मेरा लक्ष्य था कि इन बच्चों को किसी भी हालत में शिक्षा से वंचित नहीं होने दूंगा।'' मोहर सिंह ने उत्तर दिया।

डॉ. सेठी ने मोहर सिंह को अपने पास बिठाया और विद्यालय की शैक्षिक उपलब्धि पर चर्चा करने लगे। मोहर सिंह ने डाकुओं वाली घटना डॉ. साहब को बताई तो उन्होंने इस पर आश्चर्य प्रकट किया और कहा, ''हमारे कमाण्डो का डाकू क्या बिगाड़ सकते हैं?'' मोहर के कन्धे पर हाथ रखते हुए बोले, ''तुम शिक्षाकर्मी सिक्कों में 'मोहर' हो मोहर सिंह।'' मोहर सिंह की खुशी का ठिकाना नहीं था। उसका दिल सीने में नहीं समा रहा था, वह धन्य हो गया सचिव महोदय का आशीर्वाद पाकर।

वर्तमान में मोहर सिंह के पढ़ाये हुए इसी विद्यालय के छात्र नरपत सिंह व सुघर सिंह पठारी गांव में शिक्षक हैं।

● **योगेश कुमार शर्मा**
विद्याश्रम पब्लिक स्कूल, कोटा,
राजस्थान

संकल्प

हम खाई के किनारे–किनारे चल रहे थे। अचानक मैंने सोहन से कहा कि तुम्हारा गणित तो बहुत अच्छा है। क्या तुम बता सकते हो कि यह खाई कितनी गहरी होगी? बेचारे सोहन को क्या पता कि इस गणित के पीछे कौन–सी कुचाल है। जैसे ही वह रुककर खाई की गहराई को देखने लगा, मैंने बिना देर लगाए उसे खाई में धक्का दे दिया। उस समय वहाँ से कोई नहीं गुजर रहा था।

आज सुबह उठा तो आँखें लाल थीं। माँ ने पूछा, ''बेटा, क्या रातभर सोए नहीं?'' मैंने माँ के प्रश्न को सुना–अनसुना कर दिया और कॉलेज जाने के लिए तैयार होने लगा। कॉलेज जाकर भी पढ़ाई में मन नहीं लग रहा था। एक के बाद एक क्लास बीत रही थी लेकिन न जाने आज क्यों मैं अपना मन किसी भी विषय में एकाग्र नहीं कर पाया। अंतिम क्लास के बाद घर की ओर चला। ऐसा लग रहा था कि जाना कहीं और चाहता हूँ लेकिन जा कहीं और रहा हूँ।

इससे पहले मेरे साथ ऐसा कभी न हुआ। रह–रहकर एक ही आवाज़ मन को झकझोर रही थी लेकिन मैं उसे दबाता ही जा रहा था। उस आवाज़ को जैसे मैं सुनना ही नहीं चाहता था। आखिरकार अंतरात्मा की आवाज़ मुझ पर हावी हो गई और मैं सुन्न रह गया। वह आवाज़ यही कहती रही कि 'तूने अच्छा नहीं किया, नहीं किया अच्छा, ऐसा नहीं करना चाहिए था। धिक्कार! धिक्कार है तुझे व तेरे मानव–जीवन पर। अतीत का सारा दृश्य जैसे आँखों के सामने घूम गया। फिर याद आया वह दिन जब मैंने अपने ही हाथों से उसके प्राण लेने चाहे थे लेकिन क्यों? क्या दोष था उसका?

सोहन बहुत अच्छा लड़का था। सब अध्यापक उसे बहुत चाहते थे। वह कॉलेज में सबका चहेता था। वह अपने से बड़ों का सदा सम्मान करता था और छोटों से सदा स्नेह–सिक्त व्यवहार करता था। मैं पढ़ाई में ठीक–ठीक था। सोहन सदा प्रथम स्थान पाता था। एक दिन मेरे पिताजी ने मुझसे कहा, ''रोहित, यदि तुम इस बार की परीक्षा में प्रथम स्थान पर आए तो मैं तुम्हें मोटरसाइकिल दिला दूँगा।''

इस बात को सुनकर मैं मन ही मन सोचने लगा कि मैं परीक्षा में सोहन से अधिक अंक कैसे लाऊँ? परीक्षाएँ नज़दीक आ रही थीं। मन पढ़ाई में न लगकर सोहन से अधिक अंक लाने के विषय में सोचने लगा। मैंने सोचा, हो न हो सोहन को मुझे परीक्षा में नकल करवानी ही पड़ेगी। अनुक्रमांक के अनुसार परीक्षा भवन में मुझे सोहन से पीछे वाली सीट पर बैठना था।

परीक्षा का प्रथम दिन था। मेरा मन इसी चिंतन में था कि आज मुझे सोहन की उत्तर–पुस्तिका पर ही नज़र रखनी है। जैसे ही प्रश्न–पत्र बाँटे गए, उसके पाँच मिनट बाद ही मैं इस कोशिश में लग गया लेकिन सोहन अपना प्रश्न–पत्र हल करने में इतना तल्लीन था कि उसने न मेरे संकेतों को समझा, न ही मुझे नकल करने का अवसर दिया। मैं मन ही मन क्रोधित हो रहा था। मेरे मन में एक के बाद एक विचार आ रहे थे कि सोहन के रहते मैं कभी इससे अधिक अंक प्राप्त नहीं कर पाऊँगा। तब मैंने नकल करने का विचार छोड़ दिया। यह स्वार्थी मन फिर कुछ और ही सोचने लगा।

परीक्षा समाप्त हो गई। सब परीक्षा–भवन से बाहर आ गए। मेरी नज़र सोहन पर ही थी। मैंने उसका पीछा किया। सोहन जिस रास्ते से घर जाता था, उस रास्ते में एक खाई पड़ती थी। सोहन की किसी से न दोस्ती और न ही दुश्मनी थी। वह सबके साथ समान व्यवहार करता था। मेरे स्वार्थ ने मुझे अंधा कर दिया था। मैं रास्ते में सोहन से मीठी–मीठी बातें करने लगा।

हम खाई के किनारे–किनारे चल रहे थे। अचानक मैंने सोहन से कहा कि तुम्हारा गणित तो बहुत अच्छा है। क्या तुम बता सकते हो कि यह खाई कितनी गहरी होगी? बेचारे सोहन को क्या पता कि इस गणित के पीछे कौन–सी कुचाल है। जैसे ही वह रुककर खाई की गहराई को देखने लगा, मैंने बिना देर लगाए उसे खाई में धक्का दे दिया। उस समय वहाँ से कोई नहीं गुजर रहा था।

एक चीख के बाद शांति हो गई और वहाँ से भागकर मैं घर की ओर चल पड़ा। अपने–आपको संयत किया और सोचा कि अब सारी परीक्षाओं को देकर मैं कक्षा में अधिक अंक ला सकूँगा और पिताजी मेरा सपना

पूर कर देंगे। मन में थोड़ी खुशी थी। प्रतिदिन परीक्षा में सोहन की अनुपस्थित लगती रही। सोहन अनाथालय में पला–बढ़ा था। बचपन में ही उसके माता–पिता नहीं रहे। किसी दूर के रिश्तेदार ने बुढ़ापे का सहारा समझकर उसे शरण दी थी, इसीलिए किसी ने उसकी अब तक खोज–खबर भी नहीं ली थी।

परीक्षाएँ समाप्त हो गईं। परीक्षा–परिणाम का दिन आ गया। अपना प्रगति–पत्र लेकर मैं घर की ओर दौड़ा व पिताजी को दिखाया। पिताजी ने अपना वचन पूरा किया व मुझे मोटरसाइकिल दिला दी। रात हो गई, सारी रात करवटें बदलता रहा। एकाएक सोहन का चेहरा मेरी आंखों के आगे घूम गया। मैं उसे अनदेखा करना चाहता था। मैंने आंखें बंद कर लीं लेकिन बंद आंखें भी उसकी छवि को स्पष्ट देख रही थीं व एक ही प्रश्न पूछ रही थी, ''क्या तुम सचमुच खुश हो? क्या तुमने जो पाया उसकी कीमत तुम्हें मालूम है? क्या किसी की जान की कीमत तुम्हें खुशी दे सकती है? क्या तुम्हारा यह कर्म उचित था? मेरा क्या अपराध था? क्या दोष था? बताओ,.....।'' आज मेरे पास उसके प्रश्नों का कोई उत्तर न था।

माँ की आवाज के साथ अतीत की तंद्रा टूटी। माँ को अहसास हुआ कि जिस मोटरसाइकिल को पाने के लिए मैं उत्सुक था, उसे पाकर मैं आज उतना प्रसन्न नहीं हूँ जितना होना चाहिए था। माँ का दिल अनकही बात भी जान जाता है। मैंने माँ की ओर देखे बिना ही मोटरसाइकिल उठाई और बाहर निकल गया। मोटरसाइकिल पर आज मेरा पहला दिन था लेकिन सोहन का चेहरा और प्रश्न अब भी मेरा पीछा कर रहे थे। मेरा मन–मस्तिष्क अब उन्हीं प्रश्नों में घिर गया था कि पीछे से आती बस के हॉर्न की आवाज़ भी मुझे सुनाई नहीं दी और वह बस मुझे छूकर तेज़ गति से आगे बढ़ गई। मैं वहाँ गिरते ही अचेत हो गया। होश आया तो अपने–आपको अस्पताल में पाया। डॉक्टर साहब मेरे माता–पिता को बता रहे थे कि खून अधिक बह गया। यदि समय पर अस्पताल न लाया गया होता व खून न दिया गया होता तो आज आप अपने बेटे को खो देते।

मेरी आँखों के सामने मेरे माता–पिता व सगे–संबंधी थे। डॉक्टर ने बताया, इनमें से किसी का भी खून मेरे ब्लड–ग्रुप से नहीं मिला। माँ का खून मिला था लेकिन मेरी दुर्घटना के विषय में सुनकर वह बेहोश हो गई थी, अतः उसका खून मुझे नहीं दिया गया। मेरी उत्सुकता अब बढ़ने लगी, मैं उस फरिश्ते को देखना चाहता था जिसने मेरी जान बचाई। डॉक्टर ने कहा कि उसने अपने बारे में बताने से मना किया है। मेरे ज़िद करने पर डॉक्टर साहब उसे मेरे सामने लाए। उसे देखते ही मेरी स्थिति यह हो गई कि काटो तो खून नहीं अर्थात् मैं जड़ हो गया, अवाक् रह गया, सो.....ह.....न.....मुख से यह शब्द निकलने में मानो कितना ही समय लग गया हो। लेकिन ''मैंने तो तुम्हारे साथ....'' ''कुछ मत कहो, रोहित।''

''हाँ, मैं जीवित हूँ।'' सोहन बोलता चला गया, ''उससे कुछ ही क्षण बाद किसी राहगीर का खजाना उस खाई में गिर गया था। खजाने को निकालते वक्त ईश्वरीय कृपा से मेरी बिखरती साँसें भी जैसे लौट आईं। उस राहगीर ने मुझे बचा लिया। उसके बाद मैंने पढ़ाई छोड़ दी और अब डॉक्टर साहब के संरक्षण में यहीं काम करता हूँ। ''सोहन, आज तुम्हारी इस दशा का जिम्मेदार मैं ही हूँ। केवल और केवल मैं। मेरे कारण तुम्हें ये दिन देखने पड़े। मैंने तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार किया और तुमने मेरी ही जान बचाई।''

''रोहित, यह जीवन एक कर्मक्षेत्र है। यहाँ जो जैसे कर्म करता है, उसे उसका फल अवश्य मिलता है। कोई भी कर्म निष्फल नहीं रहता। तत्काल या कुछ समय बाद कर्म का फल मिलता अवश्य है। यदि उन्हीं कर्मों के फल से हम सीख प्राप्त करें तो अपना व दूसरों का भावी जीवन सुधार सकते हैं।''

''सोहन, मैं संकल्प करता हूँ कि मैं किसी भी निरपराध प्राणी का अनिष्ट करने का विचार मात्र भी अपने मन में नहीं लाऊँगा। सदैव सन्मार्ग पर चलूँगा, ईर्ष्या–द्वेष से कोसों दूर रहूँगा। शेष जीवन हिंसामुक्त व्यतीत करूँगा। हो सका तो युवा–पीढ़ी को दिग्भ्रमित होने से बचाऊँगा। आत्मकथा का अनुभव बताकर उन्हें सत्कर्मों के लिए प्रेरित करूँगा। इसी संकल्प को अपने जीवन का आधार बनाऊँगा व आमरण इसी अणुव्रत का पालन करूँगा। जगत के समस्त प्राणियों के कल्याणमय जीवन की कामना करते हुए...।''

● **सरिता मिगलानी**
केंटरबरी पब्लिक स्कूल,
बी–ब्लाक, यमुना विहार, दिल्ली

वीरादित्या

आदित्या के इस परिवर्तन को माँ–बाप समझ नहीं पा रहे थे। परीक्षा में कम अंक होना और दो–तीन बार विद्यालय से शिकायत आने से शारीरिक दण्ड के अलावा पिताजी को दूसरा रास्ता मालूम नहीं था। सिर्फ माँ ही उसका एकमात्र सहारा थी, जो कभी–कभी उसे समझने की कोशिश कर रही थी।

आदित्या बहुत ही नटखट बालक था। वह हमेशा दूसरों से बातें करता नहीं तो अपनी कुर्सी छोड़कर दूसरों के पास जाता। उस दिन अंतिम पीरियड इतिहास का था। श्रीमती शबनम इतिहास पढ़ा रही थी। कक्षा में आते ही श्रीमती जी को क्या सूझा पता नहीं अचानक उन्होंने बोल दिया कि आज तत्काल परीक्षा (सर्पैस टेस्ट) है। अध्यापिका बोली, ''सिर्फ पाँच मिनट का समय है तब तक आप लोगों को रिवज़न कर लेना है।'' बच्चे तुरन्त कापी लेकर दोहराने लगे।

ठीक पाँच मिनट के बाद श्रीमती शबनम ने पाँच प्रश्नों को श्याम पट्ट पर लिख दिया और दो–तीन बार घूमकर आई और कुर्सी पर बैठ गई। आदित्या ने बहुत मुश्किल से तीन प्रश्नों के उत्तर तो लिख दिए। चौथा जवाब लिखना शुरू किया मगर बीच में ही भूल गया। अब क्या करें? थोड़ी देर सोचने लगा मगर फायदा कुछ नहीं हुआ।

पूरी कक्षा में एक–आध को छोड़कर सारे बच्चे सिर झुकाकर पैंसिल से रगड़ रहे थे। श्रीमती शबनम छत की ओर देखते हुए विचार मग्न थी। अब आदित्या के मन में विचित्र सूझा। उसने इधर–उधर देखकर कापी ली और नकल करने लगा। बगल में बैठे रघुवीर ने पहले इसकी ओर ध्यान नहीं दिया। लिखना समाप्त करने पर जब उसने आदित्या की ओर देखा तो समझ गया। वह चुपचाप अध्यापिका के पास गया और उसने आदित्या के बारे में शिकायत की।

यह सुनकर टीचर को बहुत क्रोध आ गया। तेज़ी से आकर उन्होंने कापी छीन ली और बुरी तरह डाँटने लगी। यह सब पूरी क्लास स्तब्ध होकर देख रही थी। अध्यापिका ने सज़ा सुनाई। आदित्या को पूरी कक्षा के सामने अपना सिर झुकाना पड़ा।

पीरियड के अंत में श्रीमती शबनम बोली, ''तुम तो पक्के धोखेबाज निकले हो। यह तो पहली बार है, इसलिए प्राचार्या के पास नहीं ले जाती। लेकिन बाकी अध्यापिकाओं से अवश्य कहूँगी।'' यह कहते हुए वह बाहर चली गई। आदित्या की आँखें आँसू बहाने लगी।

यह घटना आदित्या के मन में पत्थर की लकीर के समान बैठ गई। श्रीमती शबनम भी हर बार 'धोखादित्या' के नाम से चिढ़ाती थी, यह वाक्य हर बार कोमल मन को जख्मी करा देती। इसके बाद दो–तीन पेंसिल, स्केल आदि को लेकर जो झगड़ा हुआ था, हर बार आदित्या को ही संदेह की दृष्टि से देखा गया। धीरे–धीरे आदित्या का कोमल मन कठोर होने लगा।

आदित्या जब भी पढ़ने बैठ जाता, उसका मन पढ़ाई में नहीं लगता था। बार–बार अध्यापिकाओं का मज़ाक शब्द 'धोखादित्य' याद आता था। इसकी वज़ह से उसका मन पढ़ाई से धीरे–धीरे हटने लगा। आजकल आदित्या छोटी–मोटी चीजों के लिए भी जिद करने लगा और झूठ बोलना भी उसकी आदत हो गई।

आदित्या के इस परिवर्तन को माँ–बाप समझ नहीं पा रहे थे। परीक्षा में कम अंक होना और दो–तीन बार विद्यालय से शिकायत आने से शारीरिक दण्ड के अलावा पिताजी को दूसरा रास्ता मालूम नहीं था। सिर्फ माँ ही उसका एकमात्र सहारा थी, जो कभी–कभी उसे समझने की कोशिश कर रही थी।

अब आदित्या सातवीं कक्षा में पहुँच गया। अब भी सब 'धोखादित्या' नाम से उसे चिढ़ाते थे। एक बार संस्कृत के अध्यापक उत्तर पुस्तिका वितरण कर रहे थे। उनकी यह आदत थी कि खुद न गिनके पूर्णांक बच्चों से करवाते थे। उस दिन भी बच्चों ने ही टोटल करके बताया। जब आदित्या की बारी आई तब उसने पचहत्तर कहा। अध्यापक ने भी तुरंत लिख दिया अचानक पता नहीं क्या सूझा था कि मास्टर उत्तर–पुस्तिका लेकर खुद गिनने लगे। कुलांक तो सिर्फ पैंसठ ही आ रहा था। अध्यापक ने आदित्या को बुरी तरह डाँटा और पाँच अंक भी कम करा दिए। आदित्या ने रोते हुए माफी भी माँगी लेकिन अध्यापक मानने के लिए तैयार नहीं हुए।

हर साल सातवीं कक्षा में स्काउट का चुनाव होता था। स्काउट मास्टर शर्माजी से सह अध्यापक–अध्यापिकाओं ने बताया कि आदित्या को न चुनें। शर्माजी भी यही सोच रहे थे कि उसे कैसे टालें। बच्चे जिस तरह मार्च करते उसके आधार पर चुन लिया जाता था। जब आदित्या की बारी आई तो वह अकड़कर खड़ा हो गया और छाती ऊँचा करके उसने मार्च किया।

शर्माजी को दूसरा रास्ता न होने पर उसे चुन लिया। सह अध्यापक–अध्यापिकाओं से पूछने पर उसने बताया कि आदित्या ने जिस शान से मार्च किया उस तरह और किसी ने नहीं किया। जिसका दिल कच्चा होता है, वह इस तरह मार्च नहीं कर पाएगा। इसलिए मुझे उसे चुनना पड़ा। इसके बाद स्काउट क्लास में ठीक समय पर उपस्थित होता और लगाव भी दिखाता था।

उस साल के जिल्ला कैंप में भी आदित्या का नाम शामिल था। वरिष्ठ बच्चों को यह पसन्द नहीं आया कि मास्टर ने उसे क्यों शामिल किया है। प्राचार्या ने भी चेताया कि उसे न ले जाए, लेकिन शर्माजी अपने निर्णय में अडिग रहे और उन्होंने कहा कि इस तरह के कैंप आदित्या जैसे बच्चों के लिए बहुत आवश्यक है। इसलिए मैं उसे ले जा रहा हूँ।

कैंप पाँच दिन का था। पहले दो दिन जैन विद्याश्रम बच्चों के बीच कुछ समस्या न रही। तीसरे दिन पता नहीं बच्चों को क्या सूझा था कि अनुज का बटुआ लेकर आदित्या के बैग में डाल दिया और कक्षा पर चले गए। दोहपर को जब अनुज लौट आया तो अपने बटुए को न देखकर इसकी शिकायत की।

सब बच्चों ने बटुए की खोज की लेकिन नहीं मिला। सबने मिलकर शर्माजी से शिकायत की। शर्माजी ने सबका बैग तलाश करने की आज्ञा दी। शर्माजी के सामने तलाशी की गई। जब आदित्या की बारी आई तब सारे बच्चे उत्सुक हुए। आदित्या के बैग में से बटुआ निकला। यह देख आदित्या स्तब्ध रह गया। उसकी आँखों में से आँसू डबडबाने लगे। उसने अपनी माँ के नाम पर कसम तक खाई लेकिन फायदा कुछ नहीं हुआ। शर्माजी ने चोरी की गलती के लिए यह सज़ा सुनाई कि आज शाम को ग्रुप गैम में आदित्या शामिल न हो पाएगा और सेंट्री ड्यूटी करके खाना भी परोसना है।

आज आदित्या बहुत उदास हो गया। बटुआ घटना ने आदित्या के मन को चूर–चूर कर दिया। माँ की याद भी आई। अपमान का जो घूँट पिया वह हलाहल के समान गले पर रह गया। उसे पहली बार अपने दोस्तों पर बहुत क्रोध आया। बदला लेने की भावना उठ रही थी। शाम को ग्रुप गेम में भाग नहीं ल सका। वह अपने तंबू के बाहर बैठकर खेलते हुए बच्चों को देख रहा था। बीचों–बीच सेंट्री का काम भी कर रहा था।

हाथ में लकड़ी लेकर विचार मग्न आदित्या सेंट्री ड्यूटी कर रहा था। अचानक उसने देखा एक साँप तम्बू नं.–दो में घुस गया। साँप को देखकर आदित्या भी तम्बू के अन्दर घुस गया, जो सख्त मना था, जिसे बाकि बच्चों ने भी देख लिया। सबने मिलकर शर्माजी से शिकायत की। शर्माजी के साथ सब चुपचाप आ रहे थे।

इधर तम्बू के अन्दर घुसकर आदित्या एक–एक बैग निकालकर देखने लगा। दो–तीन ही निकाले होगे और चौथा बैग निकालने वाला ही था, अचानक पीछे से बच्चों ने चिल्लाया कि देखिए जी! आदित्या बैग निकाल रहा है। बस हाथ से बैग छूट गया और बगल में सटे हुए साँप ने आदित्या के पाँव पर डस दिया और तेज़ी से गायब हो गया।

आदित्या साँप–साँप कहते हुए पाँव पकड़कर बैठ गया और असहनीय वंदना से तड़पने लगा। सारे बच्चे डर के मारे सहम गए। शर्माजी को गम्भीरता मालूम हुई। उन्होंने तुरंत गाड़ी पकड़कर आदित्या को अस्पताल में दाखिल करवाया। आपत्तिकाल वार्ड में चिकित्सा होने लगी।

इधर जैन विद्याश्रम के बच्चे बहुत डर गए। उन्होंने मान लिया कि बटुआ वाली घटना आरोपित है। प्राचार्य के साथ सभी अध्यापक–अध्यापिकाएँ अस्पताल पहुँच गए। जब आदित्या ने अपनी आँखें खोलीं तो उसके सामने शर्माजी खड़े थे। उन्होंने आदित्या से कहा–''आदित्या तुम आज से 'धोखादित्या' नहीं, वीरादित्या हो। वार्ड में हँसी बिखर गई थी।

● **डॉ. एन. श्रीनिवासन,**
चिन्मया विद्यालय, जेड–ब्लॉक, बेल्लि एरिया,
अन्नानगर, चैन्नई, तमिलनाडु

बेड़ियाँ

कुछ ही दिनों में पिताजी स्वस्थ होने लगे। अपनी पत्नी व बेटी की निःस्वार्थ सेवा ने उनकी आँखें खोल दीं। मैंने पहली बार पिताजी व दादी की आँखों में माँ व दीदी के लिये स्नेह व सम्मान देखा। मेरी आँखों में भी खुशी के आँसू छलक आए। घर का वातावरण बदलने लगा।

'अभागन, मनहूस, कर्महीन' शायद यही शब्द मेरी दीदी की पहचान बन गए थे। चुपचाप बेबसी के आँसू पीते हुए दीदी घर का सारा काम करती रहती, परंतु दादी किसी न किसी काम में कमी निकालती और दीदी को कोसती रहती। पिताजी ने दादी की बात का कभी भी विरोध नहीं किया। हाँ, जब कभी माँ हिम्मत बटोरकर दादी से अपशब्द कहने के लिये मना करती तो दादी, माँ को भी खरी–खोटी सुनाती तथा एक बेटी को जन्म देने के लिये अपमानित व प्रताड़ित करती। माँ व दीदी तिरस्कार की आग में झुलसती रहती।

दीदी का एक मात्र सहारा सिर्फ माँ ही थी। बेटा होने के नाते परिवार में मेरा विशेष स्थान था। ख़ास तौर पर दादी मेरा बहुत लाड़ करती तथा मेरी हर इच्छा पूरी करती। पढ़ाई में मेरी रूचि न होने के बावज़ूद दादी व पिताजी ने मेरा दाखिला एक अच्छे पब्लिक स्कूल में करवाया जबकि दीदी का दाखिला एक सरकारी स्कूल में करवाया गया था। दीदी का स्कूल जाना दादी को नाग़वार गुज़रता था व उनका मानना था कि लड़कियाँ तो घर का कामकाज करने के लिये होती हैं। अब मैं धीरे–धीरे समझने लगा कि मेरे घर में लड़के व लड़की में भेद किया जाता है और मुझे यह बात मानसिक रूप से पीड़ित करती।

मैं चाह कर भी दादी को समझा नहीं पाया कि लड़कियाँ भी स्नेह व सम्मान की हकदार होती हैं। देखते ही देखते मैं दसवीं कक्षा में पहुँच गया व दीदी बारहवीं में। मेरी दीदी गृहकार्य में दक्ष होने के साथ–साथ व्यवहार कुशल भी थी। वह स्कूल से आकर घर का कामकाज करती तथा उसके बाद पढ़ने बैठ जाती। दादी को दीदी का पढ़ना भाता नहीं था। वह दीदी को ताना मारकर कहती, ''पढ़–लिखकर कलेक्टर नहीं बन जाएगी'' व दीदी उसी वक्त किताबें उठा कर रख देती तथा पुनः घर के काम सँवारने लगती। धैर्य व सहनशीलता जैसे सद्‌गुण तो दीदी को माँ से विरासत में मिले थे।

वह देर रात तक पढ़ाई करती व सुबह जल्दी उठकर माँ के काम में हाथ बँटाती, फिर स्कूल जाती। जब माँ दीदी को दूध का गिलास देती तो दादी क्रोधित हो जाती व कहती कि लड़की को दूध देना ज़रूरी नहीं है तथा वह गिलास मेरे हाथ में थमा दिया जाता। घर में इस प्रकार लिंग भेद होते देख मेरी आत्मा आहत हो जाती। मैं पिताजी से अपेक्षा करता कि वे इस विषय में दादी को अवश्य समझाएँगे परंतु वे मूकदर्शक बनकर खड़े रह जाते थे। उन्होंने कभी भी दीदी के सर पर हाथ नहीं रखा था।

दीदी की खामोश निगाहों में एक प्रश्न मुझे सदा दिखाई देता, मानो वह कह रही हो, ''क्या बेटी होना एक अभिशाप है?'' दीदी की निगाहें मुझे भावुक कर देती व मैं सोचता, ''कब तक पुरुष प्रधान समाज में नारी शोषित व तिरस्कृत होती रहेगी व कब हमारा समाज कुरूढ़ियों की बेड़ियों से स्वतंत्र होगा?'' इस प्रश्न का उत्तर सोचते हुए मुझे कब नींद आ गई पता ही न चला।

अगले दिन सवेरे, माँ व दादी के चीखने की आवाज़ सुन मैं उठ बैठा। पिताजी को अचानक दिल का दौरा पड़ गया था। शीघ्र ही उन्हें अस्पताल ले जाया गया। कई महीनों तक पिताजी नौकरी पर न जा सके। पिताजी ही घर का खर्चा उठाते थे परंतु आकस्मिक बीमारी के कारण वे कुछ नहीं कर पा रहे थे। परिणामस्वरूप घर की आर्थिक स्थिति बिगड़ने लगी।

ऐसी विषम परिस्थिति में, माँ व दीदी ने घर की ज़िम्मेदारी अपने कंधों पर ले ली। पाक–कला में निपुण माँ ने घर में अचार, बड़ियाँ व पापड़ बनाकर बेचने शुरू कर दिये। दीदी ने बच्चों को ट्यूशन पढ़ाना प्रारंभ किया व कुछ ही दिनों में घर की आर्थिक दशा सुधरने लगी। माँ व दीदी न सिर्फ़ काम करतीं बल्कि तन–मन से पिताजी की सेवा भी करती। कुछ ही दिनों में पिताजी स्वस्थ होने लगे। अपनी पत्नी व बेटी की

निःस्वार्थ सेवा ने उनकी आँखें खोल दीं। मैंने पहली बार पिताजी व दादी की आँखों में माँ व दीदी के लिये स्नेह व सम्मान देखा। मेरी आँखों में भी खुशी के आँसू छलक आए। घर का वातावरण बदलने लगा।

पिताजी ने दीदी को बारहवीं कक्षा में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होने पर न सिर्फ उपहार दिया बल्कि एक अच्छे कॉलेज में दाखिल भी कर दिया। दिन–प्रतिदिन दीदी सफलता के सोपान चढ़ने लगी तथा परीक्षा में अव्वल आई। समय का चक्र चलता रहा तथा सुशिक्षित व सुसंस्कृत होने के नाते, दीदी का रिश्ता एक अच्छे परिवार में तय हो गया। पिताजी ने दीदी का विवाह बहुत धूमधाम से किया।

विदाई की घड़ी आने पर माँ के साथ–साथ पिताजी भी भाव विह्वल हो गए। वे दादी को अपनी स्नेहिल छाया से वंचित करने के लिये पछता रहे थे। आज़ मेरी दीदी सुखी–विवाहित जीवन व्यतीत कर रही है व मैं भी एक बेटी का पिता बन चुका हूँ। मैंने अणुव्रत लिया है कि मैं जीवन भर अपनी बेटी को स्नेह से पोषित करूँगा व उसे सुशिक्षित करूँगा तथा सामाजिक कुरूढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूँगा।

● **अपर्णा कश्यप**
केन्टरबरी पब्लिक स्कूल,
बी–ब्लॉक यमुना विहार, दिल्ली

सुबह का सूरज

श्यामा ने कुछ रोटियाँ सेंकी और बच्चों को खिलाकर खुद ने खाई। उसे अपने निरीह बच्चों के लिये सब कुछ करना पड़ता है। वह घरों में जा–जाकर बर्तन माँजती है। बेचारी बच्चियाँ भी कड़कती धूप में उसके साथ घूमती रहतीं और इतनी मेहनत के बावजूद भी उनको मिलती तो सिर्फ दो जून की रोटियाँ!

कुन्दन गरीबी की चादर ओढ़े जीवन जी रहा था या यूं कहें कि ढो रहा था। वह सूर्योदय के पूर्व उठकर टीन के डिब्बे में रूखी–सूखी रोटियां रखता और चल पड़ता अपने काम पर। वह पड़ौस की झोपड़ी से बिहारी को लेता हुआ, जो कि उसी के साथ ठेला चलाने का काम करता था, रास्ते पर निकल पड़ा।

उसकी पत्नी श्यामा और तीन लड़कियाँ थीं। निद्रा देवी के अंक से उठकर वे भी अपनी माँ के साथ काम पर जाने को तैयार हो रहे थे। स्कूल जाते हुए कुन्दन की तीनों लड़कियाँ–एक तीन साल की, दूसरी पाँच की और तीसरी सात साल की ललचाई नजरों से टुकुर–टुकुर देख रही थीं।

नियति इंसान की राहों में कहीं चमन का गुलिस्तां अर्पित करती है तो कहीं क्रूर पथरीली राहों पर उसे ठोकरें खाकर संघर्ष करते रहने को मजबूर कर देती है। तीनों लड़कियाँ मैले–कुचैली फ्राक पहने इधर से उधर घूम रही थीं।

अहा! प्रकृति की विडम्बना! जहाँ उसकी डालियों पर असंख्य पत्ते और फूल उसके तन का सौन्दर्य निखार देते हैं, वहीं उसकी गोद में पलने वाले मासूम इतने जर्जर कपड़ों में कि उनके तन की लाज भी नहीं ढ़क पाते।

श्यामा ने कुछ रोटियाँ सेंकी और बच्चों को खिलाकर खुद ने खाई। उसे अपने निरीह बच्चों के लिये सब कुछ करना पड़ता है। वह घरों में जा–जाकर बर्तन माँजती है। बेचारी बच्चियाँ भी कड़कती धूप में उसके साथ घूमती रहतीं और इतनी मेहनत के बावजूद भी उनको मिलती तो सिर्फ दो जून की रोटियाँ!

आज श्यामा काम पर गई तो उसका मन कहीं नहीं लग रहा था। जब वह काम से लौटी तो थक कर निष्प्राण हो चुकी थी। कुन्दन जब थका–हारा घर लौटता तो भूख उसे ही खाने लगती।

आज शाम को श्यामा घर लौटी और बच्चियों को चावल राँदकर खिलाये और स्वयं खाने को हुई तो खाना ही रुक गया और भूखी ही दरवाजे पर बैठ गई। वह सूनी आँखों से कुन्दन की राह देखने लगी। सात बज गए किन्तु कुन्दन अभी तक नहीं आया।

उसकी बड़ी लड़की चन्दा ने पूछा, ''माँ, आज बाबा अभी तक नहीं आये, क्या हुआ माँ मेरे बाबा को।'' श्यामा का कलेजा मुँह को आ गया। उसकी आँखें अश्रुमय हो गईं। उसने चन्दा की फ्राक पकड़कर, जो बिल्कुल झीनी हो गई थी, उसकी पीठ साफ दिखाई दे रही थी, सीने से लगा लिया और सिसकने लगी।

इस संसार में बिना तन को कष्ट दिये ऐशो–आराम का जीवन जीने वालों की भी कमी नहीं पर नसीब के बिना कुछ नहीं मिलता। जिन्हें मिलता है, उनमें से कई वैभव के नशे में इतने मस्त हो जाते हैं कि पशुवत् व्यवहार करने से नहीं चूकते।

श्यामा सोच रही थी कि उसकी मालकिन ने चंदा को इतना बुरा–भला कहा कि वह कोने में खड़ी दुबक कर सिसकने लगी। बात सिर्फ इतनी थी कि चन्दा मालकिन की बेटी के साथ खेलने लगी थी जो उन्हें रास नहीं आ रहा था।

श्यामा अपने साथ हुए अत्याचार को याद करके इतनी डूब चुकी थी कि उसे यह भी याद न था कि कुन्दन अभी तक नहीं आया है। उसकी छोटी बच्ची मुन्नी ने मानों हिला–हिलाकर जगाया, ''माँ! बाबा कब

आयेंगें? ''श्यामा का मन काँपने लगा। वह तीनों बच्चों को झोंपड़ी में सुलाकर स्वयं दरवाजे के पास आकर बैठ गई।

तभी एक आदमी राह पर आते दिखा। वह समझी कि कुन्दन है किन्तु करीब आने पर देखा कि वह तो उसका पड़ौसी सोहन है जो कुन्दन के साथ ठेला चलाता था। श्यामा ने उसके ठेले पर दृष्टि डाली तो मानों दृष्टि जम गई हो। उसमें कुन्दन की.....खून से लथपथ लाश पड़ी थी। उसने एक दृष्टि ठेले पर डाली और बेहोश होकर गिर पड़ी।

सोहन श्यामा के पास आकर अपनी पत्नी को बुलाते हुए कह रहा था–''जरा! बाहर आकर इसे सम्हालो।'' उसकी पत्नी के बाहर आते ही सोहन रो–रोकर कहने लगा–''बड़ा बुरा हुआ। कुन्दन जब ठेला चला रहा था तब पीछे से एक ट्रक ने टक्कर मार दी जिसको नशे में धुत ड्राइवर अंधाधुंध ट्रक चला रहा था।'' कहते–कहते सोहन जमीन पर निढाल बैठ गया।

श्यामा की बेहाशी बनी रही। आस–पास के घरों की दो–चार औरतें उसे घेरकर बैठी रहीं। रात ढलने पर सूर्य की किरणें श्यामा पर पड़ीं और उसकी आँखें खुलीं तो तीनों बच्चियाँ उसकी गोद में पड़ी थीं। टुकुर–टुकुर उसे देखकर मुन्नी कहने लगी, ''माँ तुम्हें क्या हुआ? अंदर चलो।'' वह होश आते ही चीखकर रोने लगी। अब वह बच्चों को क्या कहेगी? शायद वह बच्चों को कभी नहीं कह पायेगी कि उनके पिता इस दुनिया में नहीं रहे। सूरज की धूप में भी उसे अंधकार ही अंधकार दिखाई दे रहा था।

जीवन की सूनी राहों में उसकी बच्चियों के साथ उसे निडर होकर आगे बढ़ना होगा। पर जिस विधाता ने उसको दुःख दिया, वही उसे सहने की शक्ति भी देगा। अनाथों का नाथ वही उनके अंधेरे जीवन में आशा की एक किरण भरेगा। तभी तो सुबह का सूरज सही अर्थों में उनके लिये सुबह का सूरज बन पायेगा।

● **रजनी अग्रवाल**
श्री बा. ग. मारवाड़ी कन्या विद्यालय,
इंन्दौर, मध्यप्रदेश

बहुत कुछ खोने के बाद

देखते ही देखते सारा शहर जहाँ के तहाँ ठप हो गया। तभी शंकर के पास गाँव से फोन आया। वह उसका भाई था। उसके भाई ने बताया कि माँ की हालत बहुत खराब है। हम उसे एम्बूलेंस से शहर ला रहे हैं।

शंकर एक राजनैतिक दल से सम्बन्ध रखता था। वह बहुत अच्छा आदमी था। लोगों के छोटे–बड़े, तहसील, कोर्ट–कचहरी, ब्लाक आदि के काम करता था। उसको नेताओं का आशीर्वाद प्राप्त था। किंतु उसकी एक बुरी आदत थी कि वह हर झगड़े को सड़क पर ले आता था। हर छोटी–बड़ी बात पर सड़क जाम कर देता था।

समाज के लोगों ने कई बार समझाया कि वह ऐसा न करे। सड़कें जीवन रेखा है, इनको बंद करने से राष्ट्र और समाज की भारी क्षति होती है। जरा सोचो, इसमें अंतिम सासें गिनने वाले मरीजों की एम्बुलेंस फंसती है। परीक्षा देने तथा इन्टरव्यू देने वाले छात्र फंसते हैं। दैनिक जीवन का सामान ले जाने वाले ट्रक फंसते हैं। शादी–विवाह समारोह में जाने वाले सार्वजनिक वाहन फंसते हैं। रोजमर्रा नौकरी, मजदूरी करने वाले यात्री फंसते हैं। इससे लाखों–करोड़ों का पैट्रोल बर्बाद होता है। लाभ कुछ नहीं।

इस पर शंकर नपे–तुले अंदाज में जवाब देता, ''पहली बात कि मुझे मज़ा आता है, दूसरी बात जिन सड़कों पर जाम लगता है, वहाँ के दुकानदारों की चाँदी हो जाती है। वहाँ हर माल दस रुपये का सौ रुपये में बिकता है। फिर हमारी शान भी बढ़ती है।'' ऐसा कह कर मूँछों पर ताव देता हुआ वह बाहर चला जाता है। शंकर धीरे–धीरे काफी फेमस हो गया। उसने अपने कई चेले पाल रखे थे जो उसके एक इशारे पर जाम लगा देते थे।

एक दिन की बात है कि बड़े जोरों से आँधी आई। इस आँधी में एक बड़ा सा होर्डिंग पास बनी झोंपड़ी पर जा गिरा जिससे कई परिवार व मवेशी दब गए। कई बकरियों ने तो दम तोड़ दिया। लोगों ने बड़ी मेहनत से बाहर निकाला। एक बूढ़ी महिला ने तो दम तोड़ दिया यह खबर आग की तरह फैल गयी।

जब शंकर ने यह सुना वह आग–बबूला हो गया। उसकी भृकुटी तन गयी, आंखों से अंगारे बरसने लगे। वह पूरी टीम के साथ वहां गया और जाम लगा दिया। जिन सड़कों के पास उसका घर था, वह तो बन्द था ही बल्कि शहर के अन्य मार्ग भी बन्द करा दिये थे। शंकर के साथियों को मजा आ रहा था। पुलिस और प्रशासन जाम खुलवाने का प्रयास कर रहा था।

होर्डिंग मालिक समझौता करने को तैयार था। वह मुआवजा देने को भी तैयार था किंतु वह डी. एम. और एस. पी. को मौके पर बुलाना चाहता था। देखते ही देखते सारा शहर जहाँ के तहाँ ठप हो गया। तभी शंकर के पास गाँव से फोन आया। वह उसका भाई था। उसके भाई ने बताया कि माँ की हालत बहुत खराब है। हम उसे एम्बूलेंस से शहर ला रहे हैं।

शंकर उदास हो जाता है। उसके मन में तरह–तरह की शंकाएं घर कर लेती हैं। थोड़ी देर बाद फिर फोन आता है। उसका भाई बताता है कि भईया हम इस जाम फंस गए हैं। शंकर कहता है कि तुम वापस दूसरे शहर चले जाओ। उसका भाई गाड़ी घुमाता है किन्तु तब तक भीड़ इतनी बढ़ जाती है कि वापस जाना भी संभव नहीं हो सका।

शंकर अपना सिर पीट लेता है। वह भाई से कहता है, ''जिन लोगों ने जाम लगा रखा है, मेरी उनसे बात करा दे।'' दूसरी तरफ से आवाज आती है ''वह जगह बहुत दूर है किन्तु मैं फिर भी जा रहा हूँ।'' शंकर का भाई भागता हुआ उस जगह पहुँचता है और बात भी करा देता है। किन्तु वहां लोग बताते हैं कि हम अपनी मांगों के लिए अड़े हैं। शंकर की बहुत मिन्नत करने के बाद एम्बूलेंस को रास्ता मिल जाता है किंतु तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।

रात भर चलने के बाद एम्बूलेंस शंकर के घर पहुंचती है। पूरा घर शोक में डूब जाता है। सभी ढांढस बधाते हैं। तभी शंकर का भांजा, जिसका आज इंटरव्यू था, वह भी पहुंचता है। बातों ही बातों में पता चलता है कि आज का इंटरव्यू छूट गया। सभी लोग समझाते हैं कि भगवान को यही मंजूर था किंतु शंकर मानने को तैयार नहीं था।

वह कहता है कि सड़कें जीवन रेखा है, यदि इन्हें बंद करोगे तो कोई माँ दम तोड़ देगी। अपनी छोटी–छोटी बातों के लिए हम फिर जीवन रेखाओं को नहीं रोकेंगे नहीं तो फिर कोई न कोई दम तोड़ देगा। किसी का बेटा अनाथ होगा, किसी की परीक्षा छूटेगी, इतनी सी बात लोगों को समझ में क्यों नहीं आती, मेरे तो आ गई किन्तु बहुत कुछ खोने के बाद। क्या आपकी समझ में आई? यह प्रश्न हवा में उत्तर खोज रहा था।

कृष्ण कुमार वर्मा
राजकीय सर्वोदय सहशिक्षण
उ. मा. विद्यालय,
आनन्द विहार, दिल्ली

आखिरी प्रश्न

माँ भौंचक्की थी। जिस बात को वह रंजना को पिछले दो सालों से समझा रही थी कि रंजना हमारी भाषा, रीति–रिवाज, आचार–विचार सुनील के परिवार वालों के साथ मेल नहीं खाते, तुम वहाँ कैसे एडजैस्ट करोगी। नया–नया प्यार है, सब कुछ अच्छा लगता है फिर बाद में दिक्कत आती है। पर रंजना पर तो सुनील के प्यार का नशा था। वह तो कुछ सुनना ही नहीं चाह रही थी।

''रंजना–ओ–रंजना, उठना नहीं है क्या? सूरज सिर पर आ गया है और तुम सो रही हो।'' माँ कब से आवाज लगा रही थी पर रंजना तो जैसे कल की बातों में ही डूबी हुई थी। कई विचार उसके मन में हिलौरे मार रहे थे। अचानक किसी ने उस पर पड़ी चादर खींची, ''उठ कब तक सोती रहेगी।''

''ओह माँ तुम!'' ''बुखार तो नहीं है फिर क्यों ऐसे पड़ी है।'' ''माँ एक बात बताओ क्या हम बैकवर्ड हैं?'' ''क्या बोल रही है!'' माँ ने रंजना के सिर पर हाथ रखते हुए पूछा। ''हाँ माँ, कल जब मैं सुनील के परिवार के साथ उसका जन्मदिवस मना पार्कव्यूह रेस्टोरेन्ट में गई तो सुनील व उसके घर वालों ने चिकन करी का आर्डर दिया। फिर सुनील ने मेरी तरफ देखा और कहा, ''और घास–फूस पार्टी तुम क्या लोगी?''

मैंने मटर पनीर का आर्डर दिया। यह अपना गोलू उन्हें चिकन खाता देखता छी–छी करने लगता और सुनील की भाभी और बच्चे चूस–चूस कर हड्डियाँ खा रहे थे। ''गोलू, क्या घास खा रहा है, ले एक पीस ट्राई कर, सेहत बन जाएगी, दिमाग दौड़ने लगेगा।'' भाभी बोली। मैं बस उसे चुपचाप व्यस्त रखने की कोशिश कर रही थी।

''माँ, एक बात बताओ, क्या शाकाहारी होना शर्म की बात है? क्या माँसाहारी होना हाई स्टेट्स का प्रतीक है? क्या ताकत, विटामिन्स, तेज दिमाग केवल मांस में है।'' माँ जरा सी चोट लगने पर हम कितना कराह उठते हैं तो उन मूक पशुओं का क्या होता होगा जिन्हें बूचड़खाने में हर रोज़ हमारे स्वाद के लिए मार दिया जाता है। नहीं माँ नहीं, सुनील को फैसला करना ही पड़ेगा?''

माँ भौंचक्की थी। जिस बात को वह रंजना को पिछले दो सालों से समझा रही थी कि रंजना हमारी भाषा, रीति–रिवाज, आचार–विचार सुनील के परिवार वालों के साथ मेल नहीं खाते, तुम वहाँ कैसे एडजैस्ट करोगी। नया–नया प्यार है, सब कुछ अच्छा लगता है फिर बाद में दिक्कत आती है। पर रंजना पर तो सुनील के प्यार का नशा था। वह तो कुछ सुनना ही नहीं चाह रही थी।

माँ तुम तो पुराने ख्यालात की हो, तुम्हें नहीं पता जमाना बदल गया है। ''फिर कल रात ऐसा क्या हुआ?'' माँ ने मन मन सोचा रंजना गुसलखाने से बाहर निकली और फोन लगाकर बोली, ''सुनील एक बात बताओं, क्या तुम अपनी उँगली मसाले लगाकर खा सकते हो, अपने बच्चों की हड्डियों को चूसकर प्लेट में छोड़ सकते हो।''

'' सुबह–सुबह ये क्या बातें करने लगी हो रंजना। अरे कितना सुहावना मौसम है, चलो कुछ प्लान करते हैं। ''

''नहीं सुनील आज तुम्हें मेरे साथ चलना होगा। ठीक ग्यारह बजे तैयार रहना।'' रंजना सुनील को मुर्गीखाने, बूचड़खाने में ले गई व कटते हुए मूक पशु दिखाती रही और अन्त में बोली, ''सुनील बताओ, क्या हमारा पेट मरघट है जिसमें हम रोज़ हजारों पशुओं को दफ़नाते हैं?''

सुनील यह प्रश्न मैं तुम्हारे लिए छोड़े जा रही हूँ। हमारी गृहस्थी की शुरूआत किसी की कब्र पर नहीं हो सकती''। सामने लगे पोस्टर की तरफ इशारा करते हुए रंजना वहां से चली गई। सुनील भौंचक्का खड़ा पोस्टर पढ़ने लगा, लिखा था।

अ : अमृत, हिं : हिंसा रहित, स : संतुलित, क : कल्याणहारी, आ : आनन्ददायी, हा : हाजमेदार, र : रस पूर्ण

पोस्टर पढ़ने के बाद रंजना का प्रश्न सही उत्तर तलाशने लगा था।

● **राखी आर्य**
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय,
आमेट, जिला : राजसमंद, राजस्थान

जैसे को तैसा

माधव ने खाली पोटलियां दिखाते हुए कहा, ''सेठ जी, आपने पोटली कस कर क्यों नहीं बाँधी? सारे साँप और ततैये निकल कर भागने लगे। तभी तो डर के मारे मैं पेड़ पर चढ़ गया। सेठजी समझ चुके थे। उसने माधव को उनका पीछा छोड़ने के लिए कहा। माधव ने शर्त याद दिलाई। सेठ ने अपनी चोटी काट कर उसे दे दी।

माधव और भोला अपनी माँ के साथ एक गाँव में रहते थे। दोनों भाइयों में बड़ा स्नेह था। माधव बहुत होशियार था और पेशे से पटवारी था। भोला सीधा–सादा था। दुनियादारी और चालाकी अभी तक उससे दूर थी। वह अक्सर घर पर ही रहता था व घर के छोटे–मोटे काम किया करता था।

एक दिन भोला के पड़ोसी दीनू ने उसे भड़काया और कहा, ''तुम्हारी माँ तुमसे अधिक स्नेह नहीं करती। वह तो माधव से अधिक स्नेह करती है। माधव के लिए अच्छा खाना पकाती है और बचा–कुचा तुम्हें दे देती है। अरे भई! क्यों न करे अधिक स्नेह माधव से, वह कमाता जो है। तुम्हारी तरह इधर–उधर घूमकर समय थोड़े ही बर्बाद करता है।''

भोला के तो मानो कलेजे पर साँप लोट गया हो। उसने कहा, ''नहीं। तुम झूठ कहते हो। तुम हम दोनों भाइयों से जलते हो इसलिए ऐसा कहते हो।'' उसने दीनू को जवाब तो दे दिया पर दीनू की बात उसे बुरी तरह चुभ गई। घर पर आकर उदास होकर वह लेट गया। उसकी माँ और माधव ने बहुत पूछा पर उसने कुछ नहीं कहा।

अगले दिन सुबह उसने माँ से कहा, ''माँ मैं भी काम पर जाया करूँगा। तुम मेरे लिए भी अच्छे–अच्छे पकवान बनाना।'' माँ ने उसे समझाया कि उसे दुनियादारी की समझ ज़रा कम है परंतु वह नहीं माना। माँ ने कहा, ''ठीक है, पहले बाज़ार से पाँच सेर ज्वार ले आ।'' माँ ने उसे पैसे देकर बाज़ार भेज़ दिया। दुकानदार ने उसे ज्वार दिखाई और सौदा तय हो गया। उसने पैसे देकर ज्वार की बोरी ले ली।

भोला ज्वार खरीद कर बहुत खुश हुआ। जब माँ ने ज्वार की बोरी को खोला तो पाया कि बोरी में ऊपर–ऊपर ज्वार और नीचे भूसा और मिट्टी थी। दोनों यह देखकर दुःखी हुए। माधव को जब यह सब मालूम हुआ तो उसने दुकानदार को सबक सिखाने की ठान ली।

उसने दो बोरी अच्छी ज्वार मँगाई और बड़े साहूकार ज्वार व्यापारी का भेष बनाया और ज्वार की बोरियाँ लेकर दुकानदार के पास गया। उन बोरियों में वह मिलावट वाली बोरी भी थी जो उस दुकानदार ने भोला को बेची थी।

दुकानदार माधव से बहुत प्रभावित हुआ। माधव ने बताया कि कई बड़े धनवान लोग उन्हीं से सामान लेते हैं और उसकी ज्वार बहुत उम्दा किस्म की है। दुकानदार तुरंत ज्वार खरीदने के लिए तैयार हो गया। माधव ने भी ज्वार की किस्म के अनुसार उसके अधिक दाम बताए थे।

सौदा तय हो गया और माधव पैसे लेकर घर आ गया। दुकानदार को सबक मिल चुका था। काम करने की कुछ शर्तें थीं जैसे भोजन दो वक्त मिलेगा ओर वह भी पत्तों पर। भोला ने चार पत्ते भोजन के लिए कहा। और दूसरी शर्त यह थी कि अपनी मर्ज़ी से काम छोड़ने पर सेठ उसकी चोटी काट ले।

भोला सेठ के घर काम करने लगा। बेचारा दिन भर काम करता पर जब खाने का समय होता तो कभी पीपल के पत्ते तोड़ लाता और कभी किसी और वृक्ष के। पत्ते बिछते और सेठानी उस पर भोला के लिए खाना चावल–दाल आदि खाना परोस देती। भोला का पेटा तक न भरता। कुछ ही दिनों में वह बहुत कमज़ोर हो गया। उसके सिर से अलग रहकर नौकरी करने का भूत अब उतर चुका था।

उसने तय किया कि वह सेठ की नौकरी छोड़कर घर लौट जाएगा। उसने सेठ से कहा तो सेठ ने जवाब दिया कि चोटी कटवानी पड़ेगी। सेठ ने उसकी चोटी काट ली। भोला बड़ा लज्जित हुआ पर करता भी क्या? अब तो वह हार मान चुका था।

भोला घर लौट आया। उसकी हालत देखकर माँ और माधव बहुत दुःखी हुए। माधव ने सेठ को सबक सिखाने की ठान ली। माधव सेठ के यहाँ नौकरी माँगने जा पहुँचा। सेठ की वही शर्तें थीं। माधव ने शर्तें मान लीं। माधव ने थोड़ा–बहुत काम किया फिर बाज़ार से सामान लाने के बहाने आसपास का ज़ायजा लिया और एक बगीचे का पता लगा लिया। उसने बगीचे के मालिक से बात भी कर ली। चार बड़े–बड़े केले के पत्तों के बदले दो पत्तों का खाना देना तय हुआ। माली मान गया।

जब खाने का समय हुआ तो माधव चार केले के पत्ते ले आया। सेठानी ने तो थोड़ा ही खाना बनाया था। उसे दुबारा खाना पकाना पड़ा। माधव के लिए चार पत्तों पर खाना लग चुका था। माधव ने एक अपने लिए रखा, दो माली को दिये और एक जानवरों को खिला दिया। यही सिलसिला कई दिनों तक चलता रहा। सेठ जी खाने पर होने वाले खर्च से बड़े चिन्तित थे पर करते भी क्या? माधव भोला की तरह इतना काम भी नहीं करता, बस बातों से ही सबको खुश कर देता।

एक दिन सेठानी ने माधव से कहा, ''जाओ जाकर सेठ जी को बुला लाओ। घर में बहुत जरूरी काम है।'' जब माधव वहाँ पहुँचा तो सेठ जी अन्य व्यापरियों के साथ बैठे कुछ सौदेबाजी कर रहे थे। माधव ऐसा मौका कहाँ जाने देता। उसने सबके सामने सेठानी जी का संदेश कह सुनाया। सेठ जी को बड़ा गुस्सा आया उसने माधव को एक तरफ़ बुलाकर कहा, ''जब मैं सब व्यापरियों के साथ बैठा हूँ तो मुझे इस तरह मत बुलाया करो। समझे।''

माधव ने कहा ''जी सेठजी।''

कुछ ही दिन बाद सेठ जी के घर आग लग गई। माधव सेठजी को बुलाने गया पर सेठ जी तो अन्य व्यापारियों के साथ बैठे बातें कर रहे थे। बेचारा भोला–भाला माधव भला उन्हें कैसे बुलाता। काफ़ी देर बाद जब सेठजी ने माधव से आने का कारण पूछा तो उसने बताया कि घर में आग लगी है। सेठ जी चिल्ला उठे ''तो अब तक चुप क्यों खड़े थे, बताया क्यों नहीं।'' माधव ने उत्तर दिया, ''आपने ही तो कहा था कि जब आप अन्य व्यापारियों के साथ बैठे हों तो आपको नहीं बुलाया करूँ।''

दोनों घर की तरफ दौड़े पर सब कुछ जल चुका था। सेठजी ने बचा हुआ सामान बाँधा और किसी अन्य जगह रवाना होने की सोची माधव। पीछे–पीछे चलने लगा। शाम को एक पेड़ के नीचे दोनों बैठ गए और घोड़े को बाँध दिया।

सेठ ने माधव को दो पोटली दिखाई और कहा इसमें ततैये और साँप हैं, इनको खोलना मत। मैं अभी आता हूँ। सेठजी के इधर–उधर होते ही माधव ने पोटली खोली, दोनों खाने के सामान से भरी थी। माधव ने जी–भरकर खाना खाया और बचा हुआ पेड़ पर छुपा दिया। माधव पेड़ पर चढ़कर बैठ गया। जब सेठ जी आए तो माधव से पूछा कि वह पेड़ पर क्या कर रहा है।

माधव ने खाली पोटलियां दिखाते हुए कहा, ''सेठ जी, आपने पोटली कस कर क्यों नहीं बाँधी? सारे साँप और ततैये निकल कर भागने लगे। तभी तो डर के मारे मैं पेड़ पर चढ़ गया। सेठजी समझ चुके थे। उसने माधव को उनका पीछा छोड़ने के लिए कहा। माधव ने शर्त याद दिलाई। सेठ ने अपनी चोटी काट कर उसे दे दी।

फिर माधव ने बताया कि वह भोला का भाई है और सेठजी को समझाया कि उन्हें किसी से ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए। माधव घर लौट आया। सभी बहुत खुश थे। भोला ने भी नौकरी का विचार अपने मन से निकाल दिया था और खेतीबाड़ी करने लगा था।

● **पूनम शर्मा**
एन. टी. आर. एम. सी. सै. स्कूल,
बी–3 ब्लाक, जनकपुरी, दिल्ली

सपना

दादाजी आज बहुत ही चिंताग्रस्त थे। दादीजी अपने घर के मंदिर में पोते को अच्छी राह पर चलने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती। घर का वातावरण चिंताजनक, उदास–सा हो चुका था। फिर भी कहीं एक आशा थी जो दादाजी को जीवित रखे थी। उनका सपना उनके पोते का करियर था और अच्छा आचरण भी। अचानक रोहित की मुलाकात आशुतोष से हुई।

आशुतोष अपने दादाजी के सम्मुख अपराधी की तरह बैठा हुआ था। आज उसने एक गलती की है। उसके दोस्त रितेश, उन्मेश, सलीम आज जबरन उसे पार्क में घूमाने ले गए और गुटखा खाने के लिए उकसाया था। आज पहली बार में ही दादाजी ने उसे पकड़ लिया था। सोहम अंकल ने उसे देखा और दादाजी के पास शिकायत पहुँच गई। फिर क्या था.....

दादाजी गंभीर ख्यालों में खोए थे...वे दिन..उनका बेटा आलोक जब घर आया तो....उसे देखने भर से दिल काँप उठा।

शरीर जीर्ण हो चुका था, थका–सा आज ही अस्पताल से केमो थैरेपी करके लौटा था। आलोक को मुँह का कैंसर हुआ था और वह भी अंतिम स्थिति तक पहुँच चुका था। दादाजी के लिए अपने पुत्र आलोक को तिल–तिल मरते देखना बहुत ही असह्य हो रहा था परंतु दादाजी करते भी क्या?

दादाजी इसके लिए खुद को हो जिम्मेदार समझते हैं। मेरी लापरवाही से मेरा पुत्र आज इस दौर से गुजर रहा है। उनका मन व्यथित हो उठा। आलोक को विद्यार्थी अवस्था में ही गुटखा खाने की आदत पड़ गई थी। आलोक की पत्नी अनुष्का तो आशुतोष को जन्म देकर पन्द्रह दिन को छोड़कर स्वर्ग सिधार गई।

इस बात को आज बारह वर्ष बीत गए, तब से दादा–दादी ही आशुतोष के माता–पिता बन गए। हर समय उसकी हर बात का ध्यान रखते, बड़े लाड़–प्यार से सँभाल रहे थे। उनकी बारह साल की तपस्या का यह फल....पुत्र की याद आयी। वे दिन.....आलोक मृत्यु के द्वार पर खड़ा था और उसके पिताजी उसकी किसी भी प्रकार की सहायता नहीं कर पा रहे थे। आखिर आलोक कुछ ही समय पश्चात चिर निद्रा में डूब गया। बूढ़े माता–पिता के सम्मुख युवा बेटे की मृत्यु असहनीय थी।

आज दादा–दादी का दुलारा पोता उसी राह पर... वही गलती दोहरा रहा है। दादाजी ने आशुतोष को उसके पिताजी की सारी राम कहानी सुना दी। उसे न डाँटा, न धमकाया परंतु प्रेम से समझाया। स्वार्थी मित्रों से दूर रहने की ताकीद दी।

दादाजी को आशुतोष की चिन्ता होने लगी। वे उसकी ओर पूरी तरह ध्यान रखने लगे। आशुतोष कक्षा नौवीं में पढ़ता था और नौवीं यानि दसवीं बोर्ड की नींव। दादाजी ने आशुतोष की कक्षा के दूसरे छात्रों से मुलाकात की, उनके आशुतोष की तरफ ध्यान देने को कहा। उन्हीं के माध्यम से दादाजी आशुतोष की सारी जानकारी हासिल करते थे। इधर आशुतोष दादाजी के बातों से थोड़ा सतर्क रहा। परंतु वे गलत छात्र उसे अपनी ओर आकर्षित करते। फिर एक बार....आशुतोष के कदम डगमगा गए। वह हर रोज गुटखा खाने लगा।

दादाजी आज बहुत ही चिंताग्रस्त थे। दादीजी अपने घर के मंदिर में पोते को अच्छी राह पर चलने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती। घर का वातावरण चिंताजनक, उदास–सा हो चुका था। फिर भी कहीं एक आशा थी जो दादाजी को जीवित रखे थी। उनका सपना उनके पोते का करियर था और अच्छा आचरण भी। अचानक रोहित की मुलाकात आशुतोष से हुई।

आशुतोष : अरे! रोहित, आज क्या खास बात है? इतने जच रहे हो।

रोहित : चल आ। बताता हूँ, आज मेरा जन्मदिन है। चल मेरी तरफ से तुझे पार्टी.....आ.....होटल में...क्या आर्डर करना है?

आशुतोष : गंभीर मुद्रा में बैठा खाने की प्रतिक्षा में कहीं खोया हुआ सा...।

रोहित : क्या हुआ तेरा मुँह क्यों उतरा हुआ है?

आशुतोष : अरे यार! आज तुझे देने के लिए मेरे पास बधाई के सिवा और कुछ भी नहीं है।
रोहित : अरे तू यह क्या कर रहा है? तेरे लिए दादाजी व दादीजी कितने चिंतित हैं। उनका आधार तू है, और तू ही उन्हें निराधार बना रहा है। क्या तू ये भी भूल गया कि नशाखोरी से ही तेर पिता के प्राण गए। नशीली चीजों के सेवन से कितनी बीमारियाँ फैल रही हैं। गुटखा खाने से तो कैंसर जैसा भयानक रोग होता है। नशा सेहत के लिए हानिकारक होता है। पाठशाला में हमें अध्यापक नशीली चीजों और मादक पदार्थों से दूर रहने की शिक्षा देते हैं। तू क्यों अपना दुश्मन बना जा रहा है। तू अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहा है। चल केके आ गया। केक काटेंगे।
आशुतोष : जन्मदिन मुबारक हो, मेरी ओर से बधाई। ओह! आज मेरे पास तुझे देने के लिए तोहफा नहीं है। यार....क्या दूँ'' आँखों में आँसू आ गए।
रोहित : आज यदि तू सचमुच मुझे कुछ देना चाहता है तो मुझे वचन दे कि आज के बाद कभी भी गुटखा नहीं खाएगा और मन लगाकर पढ़ेगा। अपने दादाजी का सपना पूरा करेगा। कम ऑन यार....
आशुतोष जोर–जोर से रोने लगाा....थोड़ी देर पश्चात् उसके मन का बोझ हल्का हुआ।
आशुतोष : मैं तुझे वचन देता हूँ कि आज के बाद गुटखा नहीं खाऊँगा और नशीली चीजों से दूर रहूँगा। नशीली चीजों के खिलाफ कार्य करूँगा। नशे के वश में फँसे विद्यार्थियों को मुक्त कराऊँगा और मन लगाकर पढ़ूँगा। दादाजी का सपना जो पूरा करना है इसे ही मेरा तोहफा समझकर स्वीकार कर। मेरे प्यारे दोस्त तूने मेरी आँखें खोल दीं।

एक वर्ष पश्चात.....आशुतोष आज जल्दी–जल्दी घर भागा जा रहा था, मानो उसके पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। आज दसवीं बोर्ड का परीक्षाफल उसे अपने दादाजी को सुनाना था। उसे 85 प्रतिशत अंक मिले थे।

आशुतोष : दादाजी.....ओ दादाजी, आप कहाँ हो? ओ दादाजी..। दादाजी। शयनकक्ष में आराम से कुर्सी पर लेटे हुए। दादाजी देखो आपका पोता अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हुआ है। परंतु आशुतोष की बात सुनने के लिए दादाजी अब इस दुनियाँ में नहीं रहे थे।
हाय! दुर्भाग्य आशुतोष का । प्रसन्नता पलभर में दुख में परिणित हो गई। आज दादाजी से लिपटकर आशुतोष बहुत रोया था। दादाजी की अर्थी को अग्नि देते हुए उसने उनका सपना पूर्ण करने की प्रतिज्ञा ली।

आशुतोष कैंसर स्पेशलिस्ट बना। नशाखोरी के विरोध में कार्यरत हुआ। समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त की। काश आज दादाजी जिंदा होते तो कितने खुश होते।

● **सौ. विजया सुभाष महाजन**
ध. ना. चौधरी बहुउद्देश्यीय विद्यालय,
डोंबिवली पूर्व, जिला : ठाणे, महाराष्ट्र

झुमकी

बड़े अनमने भाव से घर लौटी। तो ये हैं हमारे देश का भविष्य जिसकी बुनियाद ही झूठ पर रखी गई है। जिस के लिये जीवन मूल्य कोई मायने नहीं रखते। जिन्हें मेहनत करने के बजाय दीन–हीन बना कर भीख मांगना सिखाया जा रहा था। ऐसे बच्चों के लिये गणतंत्र दिवस, देश की स्वाधीनता अथवा गांधी जयंती का कोई औचित्य नहीं था।

विद्यालय का वह मेरा पहला दिन था। नई नौकरी, नई उमंग, नया जोश, पूरा दिन काम समझने में समय का पता ही नहीं चला। दोपहर को घर वापिस जाते समय रेडलाइट पर जब मेरी कार रुकी तो एक तेरह–चौदह वर्ष की बच्ची बैसाखियों के सहारे खट–खट की आवाज़ करते हुए धीरे–धीरे मेरी कार की खिड़की के पास आकर हाथ फैला दिये।

मैंने उसकी तरफ ऊपर से नीचे तक देखा तो सिहर गई। बिखरे बाल, तंग हाल चेहरे से रक्ताल्पता साफ झलकती थी, नंगे पैर, बेचारगी की प्रतिमूर्ति। देखकर रहा नहीं गया। झट से एक दस का नोट निकाला और इसके पहले कि ग्रीन लाइट हो, उस बच्ची के हाथ में थमा दिया। बड़ी तसल्ली हुई अपने आप में कि मैंने आज कुछ अच्छा कार्य किया।

मेरा रोज़ का रास्ता वही था, अतः अगले दिन भी मेरी निगाहें क्रासिंग पर पहुँचते ही उसको ढूँढने लगी। एक रुँआसा चेहरा, दीन–हीन भाव मुखड़े पर लिये वो मेरे सामने खड़ी थी। फिर धीरे से कुछ पैसे उसके नन्हें हाथों में थमा अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ एक पुण्य का काम करने का अंहकार भाव मन के साथ–साथ चेहरे पर भी अपनी छाप छोड़ गया। आँखों में एक चमक सी आ गई। तीन–चार दिन लगातार मिलने पर उस लड़की से कुछ लगाव सा हो गया। फिर एक दिन जब वो नहीं दिखी तो मेरी निगाहें उसे ढूँढने लगीं।

शायद मेरी निगाहों ने जो देखा वह कभी न देखती तो एक भ्रम तो बना रहता। ऐसा लगा जैसे आँखों के सामने विश्वास रूपी काँच टूट कर चकनाचूर हो गया। वही निरीह सी दिखने वाली बच्ची हाथों में बैसाखियाँ उठाये अपने टाँगों से क्रासिंग में भागकर दूसरी तरफ की गाड़ियों से भीख माँगने जा रही थी। मैंने जल्दी से कार क्रासिंग के पार ले जाकर उस बच्ची के पास रोक ली और उसे रंगे हाथों पकड़ लिया। चोरी पकड़ी जाने पर वो अचकचा कर मेरी ओर देखने लगी। ज़रा सा धमकाने पर उसने सारी सच्चाई उगल दी।

उसका नाम झुमकी था। उसके पिता को टी. बी. था और वह अक्सर बीमार रहते थे। इसके अलावा उसकी तीन छोटी बहनें व एक भाई था। उसकी माँ सुबह–सवेरे अपने बच्चों और चार जोड़ी बैसाखियाँ लेकर चौराहे पर आ जाती थी। वह खंभे के पीछे छुप जाती थी और बच्चों को झूठी बैसाखियाँ लगा कर भीख माँगने पर मजबूर करती थी। जब मैं झुमकी की माँ से मिली तो उसने बताया कि पिता के इलाज के लिये पैसे नहीं हैं और बच्ची को छोड़ कर वह कहीं काम करने नहीं जा सकती, अतः बच्चों से भीख मंगवाती है।

बड़े अनमने भाव से घर लौटी। तो ये हैं हमारे देश का भविष्य जिसकी बुनियाद ही झूठ पर रखी गई है। जिस के लिये जीवन मूल्य कोई मायने नहीं रखते। जिन्हें मेहनत करने के बजाय दीन–हीन बना कर भीख मांगना सिखाया जा रहा था। ऐसे बच्चों के लिये गणतंत्र दिवस, देश की स्वाधीनता अथवा गांधी जयंती का कोई औचित्य नहीं था। भारी मन से रात को बिस्तर पर करवटें लेती रही परंतु सुबह का सूरज एक नई किरण लेकर आया। आसमान साफ हो चुका था और चिंता के बादल छँट चुके थे। जल्दी से स्कूल के लिये तैयार होकर घर से निकली। अणुव्रत के मूलमंत्र कानों में गूँज रहे थे।

आज मैं सचमुच किसी का जीवन सुधारने के प्रयास में थी। चौराहे से दोनों बहनों को गाड़ी में बिठाया और उन्हें अपने स्कूल ले गई। सर्व शिक्षा अभियान की नीति के अन्तर्गत उनका अपने विद्यालय में प्रवेश दिलाया। वर्दी और पुस्तकें भी मिल गईं और विद्यालय से मिड–डे–मील के अर्न्तगत खाना भी मिलने लगा।

अगले दिन दोनों छोटे भाई–बहनों को पास के आंगनवाड़ी में दाखिला करवा दिया जहाँ उन्हें पौष्टिक नाश्ता, खेल व दोपहर का खाना भी मिलता था। उनकी माँ ने तीन–चार घरों में सफाई का काम शुरू कर दिया जिससे उनका घर खर्च सुचारू रूप से चलने लगा व पिता का इलाज भी शुरू हो गया।

बरसों बाद आज वही झुमकी अपनी माँ के साथ मिठाई का डिब्बा लिये मेरे सामने खड़ी थी। वह आज एक नामी कंपनी में मैनेजर के पद पर नियुक्त हो गई थी। एक बारगी तो मैं उसे पहचान ही नहीं पाई। मुझे गर्व हो रहा था आज अपनी झुमकी पर और आज मैं उसे भींच कर गले लगाये बिना न रह सकी।

● **विवेक साहनी,**
रा. उ. मा. कन्या विद्यालय,
विवेक विहार, दिल्ली

घोंसला

मेरी दृष्टि सहसा बंद खिड़की के अंदर पड़ी। स्थिति समझते देर न लगी। सब कुछ साफ़ था–बंद खिड़की के दोनों ओर चिड़िया थी। बाहर की चिड़िया मुक्त, आक्रोश और झुँझलाहट से भरी हुई और भीतर की चिड़िया भूखी, प्यासी, थकी, सहमी–सी। लगभग परास्त, काँच पर निरंतर प्रहार करती–सी।

लगभग अक्टूबर–नवंबर के महीने में प्रायः सभी घरों में चीं.....चीं.....चीं..... का स्वर अवश्य सुनाई देने लगता है। कुछ ऐसा ही स्वर मेरे घर में भी गूँजने लगा। प्रतिदिन एक चिड़िया कभी अलमारी के ऊपर कभी ए.सी. पर तो कभी बुक शेल्फ़ पर अपने नीड़ के निर्माण के लिए स्थान खोजने को आतुर रहती । मैं साफ़–सफ़ाई के दौरान उसके द्वारा लाई गई चीजों को समेटती रहती और शी...शी... कर उसे बाहर धकलने का प्रयास करती रहती। घर के शेष सदस्य भी उसी क्षण मेरे साथ उसे उड़ाने के कार्यों में लग जाते, परंतु वह बड़ी ही चपलता से पुनः अपना स्थान घर में ढूँढ ही लेती। उसे उड़ाते–उड़ाते सब थक चुके थे और उसकी ज़िद के आगे हार चुके थे।

अब धीरे–धीरे वह मेरे घर का एक हिस्सा बन चुकी थी। जब वह अत्यंत दयनीय दृष्टि से मेरी ओर देखती तो ऐसा लगता था मानो वह मुझसे पूछ रही हो कि मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? तुम क्यों नाराज़ हो? उसकी बेचैनी, सरलता और आत्मीयता को देख मैं करुणा और दुलार से भर जाती। अंततः मैंने उसके घर में नित्य प्रवेश करने का स्थान (खिड़की) खोल दिया और बड़े प्यार से पूछा – ''अब तो खुश हो न!'' घरवालों ने मुझे फिर समझाया कि इससे पार पाना आसान नहीं।

कुछ घंटे बीत गए। शाम तक चिड़िया अपना घोंसला बनाकर उस पर बैठी मुझे देख रही थी मानो मुझे चिड़ा रही हो। तभी अचानक मेरे भाई ने मेरा ध्यान सामने के घर की बंद खिड़की की ओर आकृष्ट किया। मैंने देखा पड़ोसी के घर की खिड़की बंद है और एक चिड़िया खिड़की के काँच पर चोंच मार रही है। शायद वह खिड़की से अंदर की ओर प्रवेश करना चाहती हो।

मेरी दृष्टि सहसा बंद खिड़की के अंदर पड़ी। स्थिति समझते देर न लगी। सब कुछ साफ़ था–बंद खिड़की के दोनों ओर चिड़िया थी। बाहर की चिड़िया मुक्त, आक्रोश और झुँझलाहट से भरी हुई और भीतर की चिड़िया भूखी, प्यासी, थकी, सहमी–सी। लगभग परास्त, काँच पर निरंतर प्रहार करती–सी। घर के शेष सदस्य भी इस दयनीय स्थिति को दिल थाम कर देख रहे थे। ऐसा लग रहा था कि अगर थोड़ी भी देर और हुई तो उस चिड़िया का प्राणांत हो जाएगा। मैं सोच में पड़ गई करूँ तो क्या करूँ।

तभी एक पत्थर का टुकड़ा मैंने उठाया और सीधे भाई के साथ छत पर पहुँच गई। भाई के हाथ में पत्थर का टुकड़ा देते हुए कहा ''तोड़ दो काँच।'' एक ही क्षण में काँच टूट गया। कांच के टूटते ही चिड़िया एकदम आकाश में उड़ने लगी। वह उड़ते–उड़ते आँखों से ओझल हो गई। उस निरीह प्राणी की रक्षा का आनंद मुझे आज भी महसूस होताहै।

इंदिरा दबे
डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल
बसंतकुंज, दिल्ली

और फिर

उसने पूछा, ''सोहन वर्मा कहाँ है? वह व्यक्ति बिना कुछ बोले महेश से लिपटकर जोर–जोर से रोने लगा, '' मैं ही तुम्हारा सोहन हूँ।'' कहकर फिर रोने लगा। अपने मित्र की यह दशा देख महेश भी अपने आँसुओं को नहीं रोक सका।

बहुत समय पहले की बात है। एक गाँव में दो मित्र रहते थे। एक का नाम सोहन और दूसरे का महेश। वे दोनों मेहनती, ईमानदार और पढ़ाई में होशियार थे। दोनों ने एक ही कॉलेज से बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। परीक्षा परिणाम आने के कुछ दिनों बाद ही सौभाग्य से सोहन को एक बड़ी कंपनी में नौकरी मिल गई और वह मुम्बई चला गया।

महेश गाँव में ही खेती करता और साथ ही साथ उसने बी. ए. कर ली। दो वर्ष बाद महेश को सरकारी स्कूल में नौकरी मिल गई। नौकरी लगने के दो माह बाद ही उसका विवाह एक सुन्दर व सुशील कन्या गौरी से हो गया। वे दोनों पति–पत्नी सुखपूर्वक गाँव में ही अपना जीवन–निर्वाह करने लगे।

एक दिन अचानक रात को ग्यारह बजे महेश के मोबाईल की घण्टी बजी। महेश ने हड़बड़ी में फोन उठाया तो आवाज़ आई, ''हैलो, माय डियर कैसे हो।'' आवाज़ कुछ पहचानी सी लगी किन्तु पहचान न सका। महेश बोला, ''मैं तो ठीक हूँ पर आप कौन हैं? सोहन ने अपना परिचय दिया तो महेश अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक उठ खड़ा हुआ। दोनों ने एक–दूसरे से हालचाल पूछे। सोहन ने बताया की उसने उसी कंपनी में काम करने वाली लड़की से शादी की है। अब उसके एक लड़की है। उसने मुम्बई में फ्लैट खरीद लिया है। उसके पास कार भी है।'' सोहन ने महेश को मुम्बई आने का निमंत्रण देकर अपना पता लिखवा दिया। मोबाईल कट गया।

महेश अपने मित्र सोहन की खुशी व प्रगति को दखकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ। उसने मन ही मन सोहन से मिलने मुम्बई जाने का निश्चय किया।

करीब छः साल बाद महेश सोहन से मिलने मुम्बई पहुँचा। मित्र के बताए पते पर पहुँचकर उसके मकान की घंटी बजाई तो अन्दर से एक दुबला–पतला, बढ़ी हुई दाढ़ी वाला व्यक्ति लंगड़ाता हुआ बाहर आता है। महेश ने सोचा यह नौकर होगा। उसने पूछा, ''सोहन वर्मा कहाँ है? वह व्यक्ति बिना कुछ बोले महेश से लिपटकर जोर–जोर से रोने लगा, '' मैं ही तुम्हारा सोहन हूँ।'' कहकर फिर रोने लगा। अपने मित्र की यह दशा देख महेश भी अपने आँसुओं को नहीं रोक सका।

पूछने पर सोहन आप बीती बताने लगा। ''आज से पाँच साल पूर्व तक मेरा परिवार अच्छा चल रहा था। किन्तु उसी दौरान मैंने शराब पीना शुरू कर दिया। एक दिन मैं अपने बीवी–बच्चों के साथ घूमने निकला। पत्नी के मना करने के बाद भी मैंने चुपके से श्राब पी ली। मैं कार ड्राइव कर रहा था कि अचानक मेरी कार सामने से आ रहे ट्रक से भिड़ गई। हादसा इतना भयंकर था कि मेरी पत्नी और बच्चे कार में ही फँस गए और वहीं उनकी मौत हो गई। मेरा दाँया पैर कट गया। छः माह तक अस्पताल में भर्ती रहा। कंपनी से निकाल दिया गया।

मेरे इलाज व खर्चे में यह फ्लैट बिक गया। अब मैं इस फ्लैट में एक नौकर की हैसियत से रह रहा हूँ। यह कहते कहते सोहन जोर–जोर से रोने लगा। महेश दूसरे ही दिन सोहन को अपने साथ अपने घर ले गया। इस प्रकार व्यसन ने एक हँसते–हँसते खेलते परिवार को बर्बाद कर दिया।

● **गायड़ सिंह चुण्डावत**
तुलसी अमृत विद्यापीठ पब्लिक,
सी. सै. स्कूल, आमेट, जि. राजसमंद, राजस्थान

आखिरी कोशिश

उसने घर पर नहीं बताया और रोज़ सुबह जाकर उन सट्टेबाज़ों के पास जाकर बैठ जाता। जो पैसे मिलते, उन्हें सट्टे में लगाता। कभी जीतता तो कभी हारता परंतु एक दिन छापे में पकड़ा गया। जब पिता को पता चला कि बेटे की क्या करतूतें रहीं, तो वे सदमा बर्दाश्त नहीं कर पाए और परलोक सिधार गए।

जीवन का शुरूआती दौर, बचपन का समय शायद जीवन का सबसे सुंदर और मधुर दौर होता है। न दुनियादारी की फिक्र न घर चलाने की चिंता, न रोटी कमाने की ज़रूरत। बस खुशी, प्रेम और बहुत सारा प्रेम यही होता है बचपन। एक बच्चे का दिल ऐसा होता है जो पत्थर पर भी गुलाब खिलते देखना चाहता है।

बचपन ही तो वह समय है जिसके सारे मौसम बड़े मेहरबान दोस्त होते हैं, पेड़ बाँहें फैलाए खड़े रहते हैं बचपन को छांव की ओढ़नी पहनाने के वास्ते। शाम को सब सितारे बहुत मुस्कुराते हैं। बचपन को देखकर आती–जाती हवाएँ कोई गीत जैसे खुशबू का गाती छोड़ती गुज़र जाती, ऐसा होता है बचपन।

जब तक एक बालक छठी कक्षा में पढ़ता था, पढ़ाई में भले ही आगे न हो परंतु क्रिकेट, इससे उम्दा क्रिकेट यहाँ शायद ही कोई खेलता था, इस बात का अहंकार भी था उसमें और यह विश्वास भी कि कभी भारत के लिए ज़रूर खेलेगा। यदि यह देखकर आपको अच्छा लगा, तो ज़रा इस बालक के अति आत्मविश्वास का नमूना देखिए।

यहाँ वह बालक ध्रुव क्रिकेट खेलता था। आपको एक दृश्य यहाँ उसी के जीवन का देखने को मिलेगा। ध्रुव बल्लेबाज़ी कर रहा है। तीन गेंदों में उसे चौदह रन बनाने हैं। पहली गेंद पर घुमा कर छक्का लगाया और दूसरी पर चौका, परंतु आखिरी गेंद खाली निकल गयी। ध्रुव दूसरे खिलाड़ी को दो सौ रूपये देता है। यदि आप नहीं समझे तो मैं आपको बताता हूँ। वह छठी कक्षा का बच्चा अपने खेल पर जूआ खेलता था। जिस उम्र में कोई आम बालक जूए का अर्थ भी ढंग से समझ ना पाए, उस उम्र में वह जूआ खेलता था।

इसी तरह उसकी पहचान ऐसे लोगों से बढ़ी कि दसवीं कक्षा में आते–आते उसने कोई गलत कार्य बाकी नहीं छोड़ा। धूमपान, मंदिरा पान, सट्टा खेलना यह सब तो उसके लिए आम हो गया था। परंतु मुश्किल तो अभी आनी थी। एक मैच पर वह लड़का भारी सट्टा खेल गया और बदकिस्मती से हार गया। उसके पैरों के नीचे से ज़मीन खिसक गई। इतनी बड़ी रकम लाए तो लाए कहां से। कर्ज़ा लिया, ब्याज पर पैसे उठाए, जैसे–तैसे कर बुक्की को तो पैसे दे दिए परंतु कर्ज़दारो ने उसका जीना दुश्वार कर दिया। कई बार उसे मारा–पीटा, लहूलुहान कर दिया, फिर भी घरवालों को नहीं बताया। बताता भी तो कैसे? पिता को पहले ही दो दिल के दौरे आ चुके थे। ज़रा सोचिए कि यह सोच तब कहाँ चली गयी थी जब वह सट्टा खेल रहा था।

उस समय इसे उस दलदल में इस व्यसनयुक्त जीवन ने ही खींचा था। फिर एक दिन जब इसे और कोई मार्ग नज़र न आया तब उसने अपनी माताजी को सब बता दिया। माँ को सिर्फ उसके बेटे की मुश्किलें नजर आईं, उसकी गलतियाँ नहीं और थोड़ा डॉट–फटकार कर उसे पैसे दे दिए। बेटे ने भी कसम खाई कि वह व्यसनमुक्त जीवन जीयेगा। लेकिन आप ही बताइए, जब तक बुराई को पनाह मिलती रहेगी, वह कहाँ समाप्त होगी।

ध्रुव की माँ की ममता ही ध्रुव की दुश्मन बन गई। ध्रुव छः महीने बाद फिर सट्टेबाज़ी में लग गया। जैसे–तैसे वह उसने ने अपनी दसवीं पास की, उसके बाद उसे स्कूल से निकाल दिया गया। उसने घर पर नहीं बताया और रोज़ सुबह जाकर उन सट्टेबाज़ों के पास जाकर बैठ जाता। जो पैसे मिलते, उन्हें सट्टे में लगाता। कभी जीतता तो कभी हारता परंतु एक दिन छापे में पकड़ा गया। जब पिता को पता चला कि बेटे की क्या करतूतें रहीं, तो वे सदमा बर्दाश्त नहीं कर पाए और परलोक सिधार गए।

माँ ने यह देख उसे घर से निकाल दिया। वह सड़क पर धक्के खाने लगा। तब किसी ने उसे अपनाया, खाना दिया, रहने को जगह दी और काम दिया। काम भी सिर्फ एक जगह से दूसरी जगह कुछ सामान ले जाने का था। ध्रुव का जीवन कट रहा था। उसने कभी कोई सवाल भी नहीं किया।

एक दिन वह उसी तरह अपना काम कर रहा था, जब दो लोगों ने उसका पीछा करना शुरू किया। वह डर कर भागने लगा। जब उन दोनों ने भी भागना शुरू किया तो ध्रुव ने उन पर अपना सामान फेंका और भाग गया। वे दोनों पुलिस वाले थे और उस सामान में ड्रग्स थे। अगले ही दिन ध्रुव को एक स्मगलर घोषित कर दिया गया।

ध्रुव किसी तरह अपनी माँ के पास पहुँचा परंतु माँ ने बिना कुछ सुने उसे दरवाज़े से लौटा दिया। ध्रुव सड़कों पर अपने जीवन, अपने कर्मों और अपने आप को कोसता हुआ चलता गया। अचानक पुलिस के सामने पड़ गया। उन्होंने हाई अलर्ट घोषित किया और ध्रुव का पीछा करने लगे। वह जिस तरफ जाता, वहाँ फँस जाता परंतु भागता रहा। पुलिसवालों ने उसे रोकने की आखिरी कोशिश की पर वह नहीं माना और आखिर में उन्हें उस पर गोली चलानी पड़ी। तीन गोलियाँ लगी! वह धरती पर गिरता हुआ कह रहा था, "मुझे एक और जीवन दो, मैं व्यसनमुक्त जीवन जिऊँगा।" लेकिन इस बार भगवान ने भी उसकी न सुनी। उसके परिवार ने भी उसका अंतिम संस्कार करने से इंकार कर दिया।

● **रीता कपूर**
लवली पब्लिक सी. सै. स्कूल,
प्रियदर्शिनी विहार, लक्ष्मीनगर, दिल्ली

खुशी के आँसू

घर में बीज लाकर वह छोटे–छोटे पौधे बनाता। वह पौधे सभी दोस्तों को देता और अपने घर में और आसपास में लगाने को कहता। धीरे–धीरे बाहर के लोग भी उससे पौधे लेने के लिए आते। अब उसने अपनी नर्सरी का नाम अपनी माँ के नाम से 'कमला–नर्सरी' रखा।

कहीं से भगवान के नाम की और कहीं से रोने और चिल्लाने की आवाज़ें आ रही हैं। सोलह साल का अमित अपनी माँ के शव के पास बैठा है। रिश्तेदार और पंड़ित दाह संस्कार की औपचारिकता में व्यस्त हैं। अमित अपने बचपन से लेकर अब तक की सारी बातें याद करता है। वह अतीत में खो जाता है।

उसके पिता जी एक कारखाने में काम करते थे और माँ लोगों के कपड़े सिलने का काम करती थी। माँ का सपना था अमित और उसकी छोटी बहन अंकिता अच्छा पढ़ लिख जायें।

उसे याद आ रहे थे वह दिन जब उसकी माँ सारा दिन काम में लगी रहती। सुबह–सुबह सबको चिल्ला–चिल्ला कर जगाती, ''बेटा अमित–अंकिता, जल्दी उठो! स्कूल जाने का समय हो रहा है।'' दोनों के टिफिन बैग में डालती और दूध लेकर पीछे–पीछे घूमती। पिता जी भी सुबह–सुबह नहा–धोकर नाश्ता करके कारखाने के लिए चले जाते। बाद में माँ सारा काम करके कपड़े सिलती।

बड़े आराम से जिंदगी चल रही थी। कुछ वर्षों बाद पिता जी की तबीयत खराब रहने लगी। वह काम से आते और बड़ी मुश्किल से साँस लेते। माँ उन्हें काम पर में जाने के लिए मना करती, पर वो नहीं मानते। धीरे–धीरे पिता जी की साँस की तकलीफ बढ़ती गई। डॉक्टर से जाँच करने पर पता चला कि उन्हें दमे की बीमारी है।

डॉक्टर ने पिता जी का कारखाने जाना बंद कर दिया क्योंकि कारखाने के धुएं और कैमिकल के प्रयोग से ही पिता जी को दमे की बीमारी हुई थी। पिता जी घर में बैठ गए। माँ का काम और बढ़ गया। माँ दिन–रात पिता जी की सेवा करती और घर का सारा काम करती। पिता जी के घर बैठ जाने के कारण आय कम पड़ गई और घर का गुजारा मुश्किल से होता।

मैंने अपनी पढ़ाई के साथ ट्यूशन का काम शुरू कर दिया, जिससे माँ को कुछ मदद मिल जाती। पिता जी की तबीयत बहुत ही खराब हो गई। उनको कानों से भी कम सुनने लगा और बिस्तर से उठ भी नहीं पाते थे।

एक सुबह जब मैं उठा तो माँ ने पिता जी को चाय देने के लिए भेजा। मैंने पिता जी को चाय देने के लिए आवाजें लगाईं लेकिन वे चुप थे। बोलते भी कैसे क्योंकि अब वे इस दुनिया से सदा के लिए जा चुके थे। माँ की हालात तो देखी नहीं जा रही थी। उसकी तो दुनिया ही वीरान हो चुकी थी।

मैं और मनु भी अपने आप को रोक न सके। रोने–चिल्लाने की आवाजें सुनकर आस–पड़ौस वाले इक्ट्ठे हो गए। धीरे –धीरे रिश्तेदार भी पहुँचने लगे। रस्म–क्रिया के बाद सब अपने–अपने घर चले गए। पिता जी की याद हमको बहुत सताती।

धीरे–धीरे माँ संभली, लेकिन जिस घर में हम रहते थे, वह घर खाली करवा लिया गया क्योंकि तीन महीने से उसका किराया नहीं दिया गया था। हमने एक बस्ती में एक कमरे वाला घर ले लिया। जिस बस्ती में हमने घर लिया वह बहुत ही गन्दी बस्ती थी। आसपास कूड़ा–करकट ऐसे ही पड़ा रहता। कूड़े से आने वाली बदबू से दम घुटने लगता। नल से जो पानी आता वह भी गंदा आता।

माँ के पेट में दर्द रहने लगा। अंकिता घर के काम में माँ का हाथ बंटाती। लेकिन माँ की तबियत इतनी खराब रहने लगी कि अब उससे सिलाई का काम नहीं हो पाता था। एक रात माँ को तेज़ बुखार हो गया। अस्पताल जाने से पहले ही रास्ते में माँ ने भी दम तोड़ दिया।

तभी अमित के मामा ने आवाज लगाई, ''बेटा उठो, दाह संस्कार का समय हो गया है।'' अमित अतीत से वर्तमान में आ गया और दाह–संस्कार की रस्म पूरी की। तब वह फूट–फूट कर रोया। अपनी रोती हुई बहन अंकिता को गले लगाया। उसने सोचा जिस प्रदूषण की वजह से उसके माता–पिता इस दुनिया से चले गये उस प्रदूषण को कम करने का वह अवश्य प्रयास करेगा और प्रण किया कि वह पर्यावरण के प्रति जागरूक रहेगा।

कुछ समय बीता। अमित और अंकिता बड़ी मुश्किल से दुःख को भुला पाये। अमित ने पढ़ाई के साथ ट्यूशन का काम बढ़ा दिया और अंकिता घर का काम करती। शाम को कुछ समय निकालकर वह और अंकिता अपने कुछ दोस्तों को लेकर थोड़ा–थोड़ा कूड़ा बस्ती से दूर नगरपालिका की गाड़ी में गिरा कर आते। उसने बस्ती वालों को समझाया कि हमें इस बस्ती को साफ–सुथरा बनाना होगा ताकि बीमारियों से बचा जा सके।

घर में बीज लाकर वह छोटे–छोटे पौधे बनाता। वह पौधे सभी दोस्तों को देता और अपने घर में और आसपास में लगाने को कहता। धीरे–धीरे बाहर के लोग भी उससे पौधे लेने के लिए आते। अब उसने अपनी नर्सरी का नाम अपनी माँ के नाम से 'कमला–नर्सरी' रखा। अब तो उसकी बस्ती बिल्कुल साफ–सुथरी हो गई थी।

नर्सरी की कमाई से उसने बस्ती की पानी की पाईपें बदलवाईं और बस्ती से बाहर ट्रीटमैंट प्लॉट लगाया। बस्ती में पानी भी साफ आने लग गया। सब अमित का गुणगान करते। एक दिन नगरपालिका का प्रधान बस्ती का दौरा करने आया। बस्ती के बदलते वातावरण को देखकर वह बहुत खुश हुआ। बस्ती वालों ने बताया कि इसका श्रेय अमित को जाता है। प्रधान ने अमित की प्रशंसा की और उसका नाम राष्ट्रीय–पुरस्कार के लिए नामांकित किया।

अमित को 5 जून (पर्यावरण दिवस) वाले दिन दिल्ली में पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पुरस्कार लेते हुए अमित की आँखों में खुशी के आंसू आ गये। उसने बताया कि यह पुरस्कार उसके माँ–बाप को समर्पित है।

आज हर नवयुवक और नवयुवती के ओठों पर अमित का नाम था। काश! इसी तरह प्रत्येक नागरिक जागरूक हो जाए तो सारी दुनिया ही बदल जाए।

● **ईता सैनी**
अमरावती विद्यालय,
अमरावती एन्कलेव, पंचकूला,
हरियाणा

वचन

निशांत ने जो वचन माँ को दिया था, उसने पूरा करके दिखाया। अब वह बहुत शांत और सबकी मदद करने वाला, अपने मौहल्ले का प्रिय युवा बनकर उभरा। आज वह समाज का जिम्मेदार नागरिक, पुलिस अफसर है जिस पर उसके माता–पिता और समाज गर्व करता है।

बहुत साल पुरानी बात है जब निशांत लगभग आठ वर्ष का था और अपने माँ–बाप की आँखों का तारा था। अपनी शांत व तीव्र बुद्धि के कारण स्कूल में भी सभी अध्यापकों व दोस्तों का चहेता था, लेकिन एक साल बाद से उसके व्यवहार में कुछ परिवर्तन आने लगा था।

वह बात–बात पर, माँ–बाप पर चिल्लाता, अपनी छोटी बहन श्रेया से झगड़ता, उसकी हर वह वस्तु छीनता जिसे वह बहुत प्यार करती। उसके स्वभाव में यह परिवर्तन स्कूल में भी नज़र आने लगा था। निशांत, जो किसी समय सभी का अच्छा दोस्त हुआ करता था, वहीं आज मारपीट करने वाला, गालियाँ देने वाला उदण्ड बालक बन चुका था। स्कूल व आस–पड़ोस के लोग भी अपने बच्चों को उससे दूर रहने की सलाह देते थे।

एक दिन निशांत ने पार्क में खेलने वाले अपने सबसे अच्छे मित्र अनमोल का ही सिर फोड़ दिया था, लेकिन ऐसा करके भी उसके मन में पछतावा नहीं था। अनमोल के माता–पिता उसे अस्पताल ले गए, लेकिन यह तो शुरूआत थी मुसीबतों की क्योंकि पड़ोसियों ने उसके माता–पिता को फ्लैट छोड़ने के लिए मज़बूर कर दिया था।

निशांत के माता–पिता उसे और श्रेया को लेकर नई जगह चले गए थे, जहाँ सभी ने उनका बहुत स्वागत किया। निशांत की माँ ने भी वहाँ पहुँचते ही सबसे पहले उसे समझाया था कि वह किसी से हाथापाई नहीं करेगा, किसी को जवाब नहीं देगा लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

उसका हिंसात्मक रूप सभी के सामने आ ही गया। तब शाश्वत की माँ ने निशांत को मनोचिकित्सक को दिखाने की सलाह दी। निशांत के माता–पिता उसे लेकर उनके पास गए और उनके कहे अनुसार अब वे निशांत को श्रेया से अधिक प्यार जताते, उसकी इच्छाएं पूरी करते।

जैसे–जैसे समय बीतता जा रहा था, निशांत की हिंसात्मक प्रवृत्तियां बढ़ती ही जा रही थीं। वह अब केवल शाश्वत के पिता की ही कुछ बातें सुनता था, क्योंकि शायद वे उसके लिए भी रोज़ चॉकलेट लाते, उसके साथ खेलते। धीरे–धीरे समय गुजरता गया। शाश्वत के पिता भी अपने काम में व्यस्त होते गए। वही अपने परिवार का पालन–पोषण करते थे।

एक दिन अचानक टी. वी. पर समाचार आया कि सरोजनी नगर में बम विस्फोट हुआ है जिसमें बहुत जान–माल की हानि हुई। अनेक लोग मारे गए। तभी दरवाज़े की घण्टी बजी। शाश्वत की माँ घबराई हुई आई और उन्होंने निशांत के पापा को अपने साथ अस्पताल चलने को कहा। निशांत भी उनके साथ चल दिया।

अस्पताल का वातावरण दिल दहलाने वाला था। बहुत से घायल लोग दर्द से कराह रहे थे। किसी का पैर कट गया था तो किसी का हाथ, किसी के सिर से खून बह रहा था, तो बच्चे रो रहे थे, लोग चिल्ला रहे

थे। एक बच्चा, जो सरोजनी नगर की एक दुकान में काम करता था, उसके दोनों पैर कट चुके थे और वह दर्द से चिल्ला रहा था।

कुछ लोग अपने प्रियजन की मृत्यु की वज़ह से रो रहे थे। जब निशांत के पापा ने शाश्वत के पापा के बारे में नर्स से पूछा तो उसने, उन्हें मरे हुए लोगों की सूची दिखा दी जिसमें उनका भी नाम था। यह देखकर शाश्वत की माँ के होश उड़ गए, उनकी आँखें आँसुओं से भर गईं, गला रुंध गया माना उन्हें अब होश ही न हो।

वे बार–बार एक ही बात दोहरा रही थीं–''मेरी तो दुनिया ही उजड़ गई, मैं कहाँ जाऊँ, इन बच्चों को कैसे पालूँ, कैसे बड़ा करूँ। मुझसे कुछ नहीं हो पाएगा। हे भगवान, मुझे भी अपने पास बुला ले.....।''

यह दृश्य देखकर निशांत गुमसुम हो गया और कुछ दिन बाद उसने अपनी माँ से शाश्वत और उसकी माँ के बारे में पूछा, लेकिन इस समय निशांत की आवाज़ में दर्द था, करुणा थी क्योंकि उसने हिंसा का जीता–जागता ताण्डव अपनी आँखों से देख लिया था। उसने एक हँसते–खेलते परिवार को उजड़ते देख लिया था।

इस समय निशांत ने माँ से कहा, ''माँ, आज मैं समझ गया हूँ, क्यों आप मुझे दूसरों को मारने–पीटने, पीड़ा पहुँचाने, तोड़फोड़ करने से मना करती थीं। मैं कितना गलत था। आज मैं आपको वचन देता हूँ कि मैं अब कभी हिंसा नहीं करूँगा, तोड़फोड़ नहीं करूँगा।

निशांत ने जो वचन माँ को दिया था, उसने पूरा करके दिखाया। अब वह बहुत शांत और सबकी मदद करने वाला, अपने मौहल्ले का प्रिय युवा बनकर उभरा। आज वह समाज का जिम्मेदार नागरिक, पुलिस अफसर है, जिस पर उसके माता–पिता और समाज गर्व करता है।

● **डॉ. शिल्पी सेठ**
लीलावती विद्या मंदिर सी. सै. स्कूल,
शक्तिनगर, दिल्ली

अपराध–बोध

अनूप अंतिम सांसें लेते हुए आत्मग्लानि से बड़बड़ा रहा था, ''मुझे माफ कर देना। मैं जा रहा हूँ पर मेरे चिराग को नशे की इस बुरी लत से बचाना।'' हम सब जब घर लौटे तो सब कुछ समाप्त हो चुका था। माँ और पापा शर्म और दुःख से ज़मीन में गड़े ज्यों के त्यों खड़े रह गए। नशे की लत ने दो जिंदगियों को लील लिया था।

घर में चारों तरफ वीरानगी फैली हुई थी। भैया और दीदी की मृत्यु के दुःख का सन्नाटा। हर कोई उस दुःख के पत्थर को कलेजे पर रख एक–दूसरे से नज़रें चुरा कर अपने काम में लगे थे। हमारे दुःख में शामिल होने जो भी आता, उससे भी हमें नज़रें चुरानी पड़ रही थीं क्योंकि उनके प्रश्नों के जवाब देने का साहस हममें से किसी के पास भी नहीं था।

और भाभी .....भाभी तो अपराध–बोध से दबी कमरे से बाहर ही नहीं निकली थी। नन्हा चिराग बार–बार भाभी के आँचल से लिपटकर रो रहा था ''पा.....पा.....पापा.....'' पर भाभी के पास उसे पुचकार कर चुप कराने के लिए भी मानों स्नेह भरे शब्द नहीं थे। वह स्वयं को अपराधी महसूस कर रही थी।

अभी दो वर्ष पहले ही तो भाभी नववधू बन हमारे घर आई थी। मुझे आज भी अच्छी तरह याद है, सुलभा भाभी के साथ जब अनूप भैया का रिश्ता तय हुआ तो माँ के पाँव खुशी के मारे ज़मीन पर ही नहीं पड़ते थे। माँ हरेक के आगे इतरा कर भाभी के घरवालों की रईसी, भाभी के गोरे रंग और तीखे नैन नक्श की बातें बताया करती थीं।

ब्याह में माँ ने पूरे मोहल्ले को ही तो न्यौता दे डाला था। सुलभा भाभी के पिता खानदानी रईस और व्यवसायी थे। उन्होंने बहुत जोर–शोर से अपनी लड़की का विवाह पूर्ण प्रदर्शन और वैभव से किया था। सुलभा भाभी अपने साथ इतना ढेर सारा दहेज़ लेकर आई थी कि घर छोटा पड़ने लगा था।

माँ, पिताजी, भैया और दीदी सभी सुलभा भाभी के आगे–पीछे घूमते। उनके मुँह से निकली हर बात को पूरा करने को आतुर हो दौड़ पड़ते। भैया सुलभा भाभी के साथ प्रायः उनके मायके की शानदार पार्टियों में जाते तो वहाँ से देर रात में लड़खड़ाते कदमों से घर में प्रवेश करते। माँ देखकर भी अनदेखा कर देती। मैंने पापा को कई बार माँ से फुसफुसा कर यह कहते हुए सुना, ''तुम सुलभा से बात क्यों नहीं करती? इन दोनों का इतनी देर रात तक बाहर रहना और अनूप का यों पी कर घर आना मुझे कतई गवारा नहीं है।''

माँ उन्हें समझाते हुए कहती, ''बड़े घर के अलग कायदे–कानून होते हैं। तुम क्यों फिक्र करते हो? सोसायटी में अपनी इज्जत बनाए रखने को अगर अनूप दो–चार घूँट पी भी लेता है तो क्या फ़र्क पड़ता है?'' पिताजी खून का घूँट पीकर रह जाते। साल बीतते ही सुलभा की गोद भर गई। चिराग के जन्म के बाद पिताजी को विश्वास था कि अब सुलभा और अनूप का रातों को पार्टियों में जाना स्वयं ही बंद हो जाएगा।

शराब की बुरी लत से अनूप का पीछा छूट जाने की इस कल्पना से उन्हें बहुत राहत मिलती। पर यह क्या? महीने–दो महीने बाद ही सुलभा भाभी अपने दोस्तों को घर में बुलाकर पार्टियां आयोजित करने लगीं। शराब का वह दौर चलता कि माँ, पापा, दीदी और मैं पार्टी ख़त्म होने तक अपने कमरों में बंद ही रहते।

एक दिन पापा से रहा ही नहीं गया तो उन्होंने भैया को अपने कमरे में बुलाकर जोरों से डाँटा, ''अनूप! क्या तुम सारे संस्कार भूल गए हो? मेरे घर में यह सब नहीं चलेगा। भैया से तो कोई जवाब देते न बना पर तेज़ तर्रार सुलभा भाभी ने चट से जवाब दिया, ...''नहीं चलेगा.....तो.....तो पहले क्यों नहीं सोचा? आज की सोसायटी में तो दोस्ती बढ़ाने के लिए यह सब आवश्यक है पापा।''

पापा कुछ न कह सके, चुप रह गए। जिस बहू का रूप और पैसा बखानते माँ थकती नहीं थी, उस माँ ने आँखें बंद कर चुप रहना सीख लिया था। एक दिन माँ, पिताजी और मैं किसी उत्सव में सम्मिलित होने बाहर गए थे। घर में पार्टी का आयोजन था। दीदी को सबने समझा दिया था कि पार्टी चलने तक हर्गिज बाहर न निकले। दीदी देर रात तक अकेली बंद कमरे में बैठी हमारी प्रतीक्षा करती रही।

भैया ने उस दिन बहुत ज़्यादा पी ली। वे होश खो बैठे थे। दीदी को जब पार्टी ख़त्म होने का विश्वास हो गया तो वह कुछ देर बाहर बरामदे में टहलने के लिए चली आई। ....पर यह क्या! ...तभी अनूप भैया भीतर से बाहर आए। नशे में चूर अनूप भैया ने दीदी को सुलभा भाभी समझा उनका दुपट्टा खींच, उन्हें बाँहों में भर, प्यार दिखाने की ज्यों ही उतावली दिखाई तभी उनके कानों में दीदी का छटपटाता स्वर टकराया, ''भैया, छोड़ो, छोड़ो भैया छोड़ो।''

एक क्षण में अनूप भैया का सारा नशा उतर गया। भैया जड़वत वहीं खड़े रह गए और दीदी अपने कमरे की तरफ भागी। तभी सुलभा भाभी बाहर आईं और वह बिना कुछ कहे ही सारा माज़रा समझ गईं। सुलभा भाभी दीदी को संभालने उनके पीछे दौड़ी पर तब तक दीदी ने स्वयं को उसी दुपट्टे से पंखें पर लटका लिया था, जिसे अनूप भैया ने छीना था। सुलभा स्तब्ध हो, पलट कर अनूप की तरफ दौड़ी। कमरा बंद था पर जरा सा धक्का देते ही खुल गया।

अनूप अंतिम सांसें लेते हुए आत्मग्लानि से बड़बड़ा रहा था, ''मुझे माफ कर देना। मैं जा रहा हूँ पर मेरे चिराग को नशे की इस बुरी लत से बचाना।'' हम सब जब घर लौटे तो सब कुछ समाप्त हो चुका था। माँ और पापा शर्म और दुःख से ज़मीन में गड़े ज्यों के त्यों खड़े रह गए। नशे की लत ने दो जिंदगियों को लील लिया था।

इस नशे से जो घृणित मृत्यु भैया और दीदी ने की थी, उससे सारा मान–सम्मान चकनाचूर हो गया था। सुलभा भाभी अपराधिन सी रोते चिराग को गोदी में छिपा, ऐसे अपनी बाँहों के घेरे में कसे जा रही थीं मानों उसे दुनिया के हर नशे से बचा अपना अपराध–बोध कम करना चाहती हों।

● **शकुन्तला मित्तल**
लीलावती विद्या मंदिर सी. सै. स्कूल,
शक्ति नगर, दिल्ली

भ्रष्टाचार

बेचारा गोपाल सरकारी नौकर कमरतोड़ मँहगाई में बड़ी कठिनता से घर का खर्च चलाता था। ज्यादा क्या दे सकता था। पर बेटी का दाखिला तो कराना ही था। उसने अपनी बेटी को साधारण स्कूल में दाखिला दिला दिया और अपने सपने को अपनी बेबसी, दूसरों के लालच और व्यवस्था के पंगुपन की भेंट चढ़ा दिया।

एक शहर में राधा और गोपाल नाम के दम्पत्ति रहते थे। उसकी एक बेटी थी। गोपाल सरकारी नौकरी करता था। अपने वेतन से घर का गुजारा चलाता था। उसका एक सपना था कि बेटी को डॉक्टर बनाए और मानवता की सेवा में लगाए क्योंकि उसकी अपनी माँ इलाज न हो पाने के कारण उसे बचपन में छोड़कर स्वर्ग सिधार गई थी।

अब उसकी बेटी तीन साल की हो चुकी थी। दाखिला स्कूलों में शुरू हो चुका था। गोपाल ने आसपास के सभी नामी स्कूलों में फॉर्म भर दिया था। सोचा कि अच्छे स्कूल में बेटी पढ़ेगी तो उसका भविष्य उज्ज्वल होगा। परंतु जब पहली सूची निकली तो गोपाल ने सोचा कि दिन अच्छा होगा और बेटी का नाम कहीं तो आ गया होगा। पर जब उसने सभी स्कूलों में एक–एक करके पहली सूची देखी तो कहीं भी उसकी बेटी का नाम नहीं था। वह बड़ा निराश हुआ। उसने स्कूल में जाकर पूछा तो उन्होंने कहा कि आप दूसरी सूची का इन्तजार करो।

कुछ विद्यालयों में दूसरी सूची कब आई, उसे पता ही नहीं चला और कुछ स्कूलों ने दूसरी सूची निकाली ही नहीं। गोपाल ने जब पूछा तो विद्यालय वालों ने पहले उनसे प्यार से बातें कीं, पूछा–''क्या काम करते हैं, कितना कमाते हैं घर में कौन–कौन है।'' आखिर में उससे पूछा, ''आप कितना दे सकते हैं?'' गोपाल समझा नहीं, पर बाद में वह समझ गया कि वे लोग क्या माँग रहे हैं।

बेचारा गोपाल सरकारी नौकर कमरतोड़ मँहगाई में बड़ी कठिनता से घर का खर्च चलाता था। ज्यादा क्या दे सकता था। पर बेटी का दाखिला तो कराना ही था। उसने अपनी बेटी को साधारण स्कूल में दाखिला दिला दिया और अपने सपने को अपनी बेबसी, दूसरों के लालच और व्यवस्था के पंगुपन की भेंट चढ़ा दिया।

● **बी. नीलावेणी,**
आन्ध्रा एजूकेशन सोसायटी सी. सै. स्कूल,
बी–3 ब्लाक, जनकपुरी, दिल्ली

बीती ताहि बिसारि दे

यशोधर बाबू ऐसे इंसानों में से थे जिन्होंने कभी भी समस्याओं से हार नहीं मानी। एक बार जिस लक्ष्य को ठान लिया, उसको पूरा करके ही चैन लेते थे। रोज की तरह सुबह उठकर टहलने निकल पड़े। रास्ते में उनके मन में एक तरीका सूझा कि इस योजना को हम ग्राम सभा के सम्मुख रखेंगे। इस निश्चय से उनका मन आज अखबार में नहीं लगा।

सुबह गाँव की पगडंडियों से होकर पाँच–छह किलोमीटर घूमने की आदत थी यशोधर बाबू की। एक बाबू के पद पर कार्य करते हुए सेक्सन अफसर तक का सफर तय करके वे एक साल पहले रिटायर होकर अपने पैतृक गाँव माधोपुर वापस आ गए। गाँव के अधिकांशतः लोग किसान थे, जो सुबह उठकर खेती के कार्यों में लग जाते थे, इसलिए सुबह टहलने के कार्य को अकेले ही अंजाम देना अच्छा समझा यशोधर बाबू ने। गाँव की पगडंडी एक सड़क से जाकर मिलती थी। उसी के कोने पर चाय की एक गुमटी थी जहाँ लौटकर यशोधर बाबू चाय पीते और अखबार पढ़कर वापस घर आते थे।

यशोधर बाबू चिंतनशील व्यक्ति थे। देश की समस्याओं और पुरानी एवं नई पीढ़ी के अंतराल पर हमेशा ही चिंतन करते थे। आज सुबह थोड़ा पहले ही उठे गये और रोज की तरह अपने गंतव्य पर निकल पड़े। उनके चैतन्य मन में आज कुछ ज्यादा ही सवाल उठ रहे थे। तर्क–वितर्क के द्वारा किसी निष्कर्ष पर पहुँचने की कोशिश कर रहे थे। बचपन से ही उनकी आदत कर्म को प्रधानता देने की रही है परंतु आज गाँव में किसी सामाजिक कार्य को अंजाम देने का भाव बार–बार उन्हें बेचैन कर रहा था।

टहलकर वापस आकर चाय की चुस्की ली और जेब से चश्मा निकाल अखबार पर निगाह गड़ाए बैठ गए। मुख्य पृष्ठ को पढ़ जब आगे बढ़े तो सम्पादकीय पृष्ठ पर लिखा शीर्षक पर्यावरण के मोर्चे पर शिकस्त आज कुछ ज्यादा ही आकर्षक लगा। उनके अंदर चल रहे तर्क–वितर्क को जैसे कोई नया रास्ता मिल गया हो।

अखबार पढ़ते समय एक सवाल गहराई से उनके जेहन में बैठ गया कि आखिर पर्यावरण संरक्षण का अभियान असफल क्यों हो जाता है? आत्मा सुरक्षा जैसी चीजों पर भी लोगों में जागरूकता क्यों नही आ पाती? यशोधर बाबू को लगा कि जो भी योजनाएं हमारे यहाँ चलाई जाती हैं, उनके उद्देश्य को हम आम जन तक सही अर्थों में पहुँचा नहीं पाते। सवालों और जवाबों में उलझे यशोधर बाबू ने अखबार पढ़ने में ज्यादा ही समय लगा दिया। वे पढ़ते तो जाते थे लेकिन उनके अंदर पर्यावरण की सुरक्षा का ही विकल्प चल रहा था।

यशोधर बाबू ने घड़ी देखी, सुबह के नौ बजे गये हैं, अब चलना चाहिए। अखबार को टेबल पर रखा और चल पड़े। रास्ते में आते समय उन्होंने निश्चय किया कि अपने स्तर पर पर्यावरण संरक्षण के प्रति कम से कम अपने गाँव में अवश्य ही जागरूकता पैदा करूँगा। घर आकर स्नान–ध्यान के उपरांत अपनी योजना को कार्यरूप देने के लिए गाँव के बच्चों को इकट्ठा किया। रविवार का दिन था, छुट्टी होने के कारण गाँव के लगभग सारे बच्चे इकट्ठा हो गए। बच्चों से उन्होंने पर्यावरण के विविध स्वरूपों पर चर्चा की और पर्यावरण की सुरक्षा में पेड़ों के महत्व को बताया।

एक बच्चे ने प्रश्न किया, ''क्या हमारे एक गाँव के जागरूक हो जाने ये समस्या का समाधान हो जाएगा?'' यशोधर बाबू ने कहा, ''नहीं! लेकिन इससे हम अपने कर्तव्य का पालन कर सकेंगे और निश्चित ही एक दिन लोग हमारे कार्यों को स्वीकार करेंगे।'' दूसरे बच्चे ने सवाल किया, ''आखिर इसके बदले हमें क्या मिलेगा?'' यशोधर बाबू ने जवाब दिया–इसके बदले मिलेगा हमें स्वच्छ पर्यावरण जिससे हमारा जीवन निरोग और खुशहाल होगा।

यशोधर बाबू की बातों का बच्चों पर गहरा असर हुआ और योजना को आगे बढ़ाने के लिए बच्चों की उनकी आम राय बन गई और निर्णय लिया गया कि सप्ताह में एक दिन हम दो घंटे का समय निकाल कर ग्राम सभा के समस्त पेड़ों की सिंचाई, निराई, गुड़ाई और देखरेख करेंगे।

रविवार का दिन था। शाम चार बजे यशोधर बाबू ने बच्चों को लेकर पेड़ों का घेरा बनाकर पानी डालना शुरू किया। अपने पेड़ों की सेवा करते देख गाँव वाले बिफर पड़े। गाँव वालों ने सोचा कि यशोधर बाबू की निगाह हमारे पेड़ों पर है, निश्चय ही वे हमारे पेड़ हथियाना चाहते हैं। सभी लोगों ने एक स्वर में विरोध किया, '' हम ऐसा नहीं होने देंगे।'' यशोधर बाबू के बहुत समझाने के बाद भी कि पेड़ आप के ही रहें, हम तो सिर्फ उनकी देखभाल कर रहे हैं, फिर भी गाँव वालों को उनके इस कार्य में कुछ न कुछ चालाकी ही नजर आई।

आज शाम को यशोधर बाबू घर पर ही बैठे रहे। उनका मन आत्म–ग्लानि से भरा था। गाँव वालों से उनको ऐसे व्यवहार की उम्मीद न थी। पत्नी ने भी समझाया, '' आप को इन सब कामों से क्या मतलब? आप के दोनों बेटे सर्विस में हैं, बेटी अपने ससुराल में! आपको तो आराम करना चाहिए, चले हो समाज सेवा करने।'' यशोधर बाबू कुछ नहीं बोले। रात का भोजन किया और बिस्तर पर पड़े अपने से ही विचार–विमर्श करते कब नींद आ गई, उन्हें पता ही नहीं चला।

यशोधर बाबू ऐसे इंसानों में से थे जिन्होंने कभी भी समस्याओं से हार नहीं मानी। एक बार जिस लक्ष्य को ठान लिया, उसको पूरा करके ही चैन लेते थे। रोज की तरह सुबह उठकर टहलने निकल पड़े। रास्ते में उनके मन में एक तरीका सूझा कि इस योजना को हम ग्राम सभा के सम्मुख रखेंगे। इस निश्चय से उनका मन आज अखबार में नहीं लगा।

वे घर न जाकर सीधे प्रधान जी के पास पहुँचे। उन्होंने प्रधान जी को अपनी सारी बात कह सुनाई। प्रधान जी ने बड़े ध्यान से सुना और कहा, ''बड़े बाबू! आपकी योजना तो बहुत अच्छी है। इस योजना में मैं आपकी हर संभव मदद करूँगा। गाँव वालों को पर्यावरण से लाभ और हानियों से अवगत कराया जायेगा, परंतु हमारी बात में गाँव वालों में कुछ न कुछ स्वार्थ नजर आएगा। इस बात को हम खण्ड विकास अधिकारी को बताएँगे और उन्हीं के द्वारा आपकी योजना के प्रति गाँव वालों को जागरूक कराएँगे।''

दोपहर के दो बजे बैठक सम्पन्न हुई। गाँव वालों के मन में यशोधर बाबू का कद काफी ऊँचा हो गया क्योंकि खण्ड विकास अधिकारी और दो डॉक्टरों की टीम ने अपने व्याख्यान से गाँव वालों को काफी प्रभावित किया। खण्ड विकास अधिकारी ने यशोधर बाबू की प्रशंसा करते हुए 5000 पेड़ मुफ्त में देने की घोषणा की और इसकी रोपाई यशोधर बाबू के निर्देशन में होने की सलाह दी। उन्होंने गाँव वालों को समझाया कि देखरेख यशोधर बाबू की रहेगी और पेड़ उन्हीं के होगें जिसकी जमीन रहेगी।

यशोधर बाबू की मेहनत रंग लाई। माधोपुर को जिला अधिकारी ने हरित गाँव घोषित किया। इस गाँव के विकास के लिए दो लाख का अतिरिक्त अनुदान और यशोधर बाबू को प्रशंसा पत्र देते हुए उन्हें पुरस्कृत किया। जिला मुख्यालय पर विकास भवन के सामने होर्डिंग पर उनकी फोटो और इनके कार्यों का उल्लेख किया गया। गाँव और जिले में एक ही चर्चा थी कि जब यशोधर बाबू हम सब के लिये इतना कुछ कर सकते हैं तो क्यों न अपने लिए वह करें जो यशोधर बाबू हमारे लिए कर रहे हैं।

डॉ. अरुण कुमार वर्मा
जवाहर नवोदय विद्यालय
सिरमौर, रीवा, मध्यप्रदेश

प्यारा मुज़रिम

बूढ़े माँ–बाप और बहन ने भी सोहन को माफ़ कर दिया। अब सोहन को इंतज़ार था तो सिर्फ रामू की बीवी की माफी का जिसका वो सबसे बड़ा मुज़रिम था। वह बहुत मेहनत से सारे दिन काम में लगा रहता था और घर के प्रत्येक सदस्य की ज़रूरत का ध्यान रखता था। हमेशा वह भगवान से प्रार्थना में माफी माँगता रहता था।

सोहन एक बिना माँ–बाप का लड़का था। गलियों ने उसे पाल कर बड़ा तो कर दिया पर प्यार और संस्कार देने वाला कोई न था। बड़े होकर पेट पालने के लिए उसने ट्रक चलाना शुरू कर दिया। वह कई शहरों में घूमा। तरह–तरह के लोगों से मिला। वह अपने अकेलेपन से भागने का कोई उपाय न ढूँढ पाया तो उसने शराब का सहारा लिया और धीरे–धीरे शराब उसकी हमसफर बन गई। हमेशा उसके हाथ में बोतल देखकर उसके मित्रों ने उसे समझाया कि व्यसन अच्छी चीज़ नहीं और ना ही किसी समस्या का हल है परंतु वह न समझा। उसे लगा कि यदि ज्यादा पीने से वह मर भी गया तो कौन है उसके लिए रोने वाला।

एक दिन सोहन रात को ट्रक में माल लेकर दूसरे शहर जा रहा था और साथ में थी उसकी वही हमसफर शराब। रात का समय, बारिश हो रही थी, सड़क पर भी कोई खास रौशनी नहीं थी। नशे की हालत में सोहन को आगे से साईकिल पर आता हुआ व्यक्ति नहीं दिखा और ट्रक उस पर चढ़ गया। जब तक सोहन सम्भल पाता, अनहोनी हो चुकी थी।

सोहन पछता रहा था परंतु अब क्या फायदा। उस व्यक्ति की मृत्यु हो चुकी थी। जज ने उसे फांसी की सज़ा सुनाई तो वह डर के मारे अंदर तक काँप गया। वह जज के पैरों में गिरकर रोया, गिड़गिड़ाया, अपनी ज़िदगी की भीख माँगने लगा। जज ने भी उसकी कम उम्र को देखते हुए उसके लिए ऐसी सज़ा चुनी जो शायद उसे सुधार दे। जज ने सोचा कि मृत्युदंड समस्या का हल नहीं होगा। हमें समाज के लोगों को व्यसन से होने वाले नुकसानों से अवगत कराना ज्यादा ज़रूरी है ताकि इसकी तरफ बढ़ने से पहले ही उनके कदमों को रोका जा सके। जज ने मृत्युदंड क्षमा कर दिया और उसे पाँच साल तक उस परिवार के साथ रहकर उसका पालन–पोषण करने की जिम्मेदारी दी जिसके मुखिया की मृत्यु का कारण वह बना था।

जब सोहन को लेकर पुलिस वाले उस गाँव में गए तो प्रत्येक व्यक्ति उसे नफ़रत की दृष्टि से देख रहा था। वह किसी से नज़रें नहीं मिला पा रहा था। जब वह उस व्यक्ति के घर में गया तो देखा उसके बूढ़े माँ–बाप थे जो उसे अपने बेटे का कातिल मानते थे। वह उठकर वहाँ से चले गए। एक जवान बहन थी, वह भी रोने लगी कि अब वह राखी किसे बाँधेगी। उसके ब्याह में देने के लिए मोटी रकम का इतज़ाम कौन करेगा। उस व्यक्ति की पत्नी ने नफ़रत भरी नज़रों से उसे देखा जो कटार की तरह उसकी आत्मा को चीरती चली गई और उसका एक मासूम छोटा बेटा जिसे पता भी न था कि उसके सिर से उसके पिता का साया छीनने वाला यही आदमी है।

सोहन रात भर सो न सका। उसे लग रहा था सबकी नज़रें उसे ही घूर रही हैं और उससे पूछ रही हैं कि उसने ऐसा क्यों किया। वह उन घूरती आँखों और सवालों का सामना नहीं कर पा रहा था। वह उठा और उसने उस गाँव से भाग जाने की सोची। भागते–भागते अचानक उसके कदम रुके और फिर सोचा कि मैं इन सबसे तो भाग जाऊँगा पर अपनी अंतर्रात्मा से कैसे भागूँगा। उसने दृढ़–निश्चय के साथ अपने कदम वापस गाँव की ओर मोड़ लिए।

दूसरे दिन की सुबह वह एक नए विश्वास के साथ उठा। वह गाँव के प्रत्येक व्यक्ति की मदद करता, सबसे प्यार से बोलता, बच्चों के साथ खेलता। धीरे–धीरे उसने गाँव वालों का दिल अपने अच्छे व्यवहार से जीत लिया। अब वह गाँव के सभी बच्चों का सोहन चाचा हो गया था। किसी को कोई काम हो, चाहे त्यौहार का या शादी–ब्याह का, सोहन के बिना पूरा न होता था।

सोहन ने देखा कि रामू के घर की हालत ठीक नहीं है तो वह उसकी बंज़र जमीन पर खेती करने का प्रयास करने लगा। सबने उसे समझाया कि इससे कोई लाभ नहीं। परंतु शायद भगवान भी उसकी नेक भावना में उसका साथ दे रहे थे। उसकी मेहनत रंग लाई और धरती हरी–भरी हो गई। फसल इतनी अच्छी हुई कि घर अन्न से भर गया और छोटी बहन के दहेज की चिन्ता भी खत्म हो गई।

बूढ़े माँ–बाप और बहन ने भी सोहन को माफ़ कर दिया। अब सोहन को इंतज़ार था तो सिर्फ रामू की बीवी की माफी का जिसका वो सबसे बड़ा मुज़रिम था। वह बहुत मेहनत से सारे दिन काम में लगा रहता था और घर के प्रत्येक सदस्य की ज़रूरत का ध्यान रखता था। हमेशा वह भगवान से प्रार्थना में माफी माँगता रहता था।

एक दिन रामू की बीवी आम के बगीचे में अचार के लिए आम बीनने गई थी। गाँव के साहूकार की बुरी नज़र उस पर पड़ी और वह मौके का फ़ायदा उठाने लगा। उसी समय सोहन वहाँ से गुज़र रहा था उसने साहूकार को मारकर वहाँ से भगाया और रामू की बीवी की इज्ज़त बचाई। इस घटना के बाद सोहन को जिस माफी का इंतज़ार था वह भी उसे मिल गई। अब घर और गाँव सब जगह से उसे प्यार और इज्ज़त मिल रही थी।

अचानक एक दिन दरोगा जी ने आकर ख़बर दी कि उसके अच्छे व्यवहार को देखकर उसकी सज़ा माफ़ कर दी गई है। अब उसे उस गाँव में रहने की आवश्यकता नहीं। यह सुनकर सोहन के साथ सभी दुखी हो गए। सोहन पुलिस वालों के साथ चला गया और एक बार फिर जज के पास जाकर गुहार लगाई पर इस बार सज़ा माफ कराने के लिए नहीं बल्कि खुद को उम्रकैद देने की गुहार।

सोहन ने कहा जिस परिवार और अपनेपन के न होने के कारण उसे शराब की लत लग गई थी, वह परिवार अब उसे मिल गया है। अब वह कभी व्यसन नहीं करेगा। जज की आँखें भर आईं और उसे उसका परिवार लौटा दिया। वह खुशी–खुशी गाँव वापस आ गया। उसे देख सारे बहुत खुश थे। इस बार गाँव आने पर सबकी आँखों में सोहन ने नफ़रत नहीं, प्यार देखा जिसके लिए वह कुछ भी कर सकता था और उसने अपनी बुरी आदत शराब को हमेशा के लिए छोड़ दिया।

● **सुषमा तिवारी**
गुरु हरकृष्ण पब्लिक स्कूल,
पुराना किला रोड,
दिल्ली

पारखी

अपनी वह सुबह याद आई जिसने मेरा जीवन बदल दिया। शाम को अपने पति के ऑफिस से लौटने पर मैंने एक ही सवाल पूछा, "आपने दहेज क्यों नहीं लिया"? "जो चाहिए था वह पा लिया तो दहेज लेकर क्या करता।" संक्षिप्त सा उत्तर देकर वह चुप हो गए। मेरा सिर श्रद्धा से झुक गया और आँखें नम हो गईं।

'**द**हेज न लूंगी' न दूँगी यह वाक्य बार–बार दोहराती थी। मन के विचार हर दिन दृढ़ से दृढ़तर होते जाते थे। विद्यालय से कॉलेज और कॉलेज़ से नौकरी तक पहुँचते–पहुँचते कब विवाह की दहलीज़ पर पहुँच गई पता ही नहीं चला। एक सुबह उठी तो घर में अफरा–तफरी मची हुई थी। माँ बदहवास सी पिताजी के निर्देश सुन रही थी। छोटी बहन हाथ में झाड़ू लिए इधर से उधर भाग रही थी। भाई हाथ में पैसे और थैला लेकर बाज़ार जाने को तैयार था।

ज्ञात हुआ सुबह ग्यारह बजे लड़के वाले मुझे देखने आने वाले हैं। सारा माज़रा एक ही पल में समझ आ गया। माँ ने मुझे तैयार होने के लिए कहा। सभी कुछ जैसे सुचारू रूप से पूर्ण हो गया। शाम को थकी हुई दिनभर के क्रिया–कलापों के बारे में सोच रही थी कि पिताजी ने पुकारा, "अंजलि" मैं सकपका कर उठी और उनके समक्ष जा खड़ी हुई। "तुम्हारी क्या राय है?" पिताजी ने बिना किसी भूमिका के पूछा।

मैंने कहा, "बिना दहेज़ की शादी। सिर्फ एक ही इच्छा है। बाकि आपको जो ठीक लगे।" पिताजी से कह तो दिया और सोचने लगी क्या आज के समाज में ऐसा संभव है। विद्यालय से लौट कर दैनिक कार्यों में व्यस्त थी कि पिताजी का फोन आया कहा, "लड़के वालों ने हाँ कर दी है। अगले हफ्ते संगाई है।" यकीन नहीं हुआ। "अच्छा!" कहकर मैंने फोन रख दिया।

समय बीतता गया। विदा होकर ससुराल आई और नए जीवन की शुरूआत में पिछला सब कुछ भूलने लगी। आज वर्षों बाद पड़ोस में दहेज के लालची लोगों ने एक बेटी को जला दिया। सुनकर परेशान हो उठी। अपनी वह सुबह याद आई जिसने मेरा जीवन बदल दिया। शाम को अपने पति के ऑफिस से लौटने पर मैंने एक ही सवाल पूछा, "आपने दहेज क्यों नहीं लिया"? "जो चाहिए था वह पा लिया तो दहेज लेकर क्या करता।" संक्षिप्त सा उत्तर देकर वह चुप हो गए। मेरा सिर श्रद्धा से झुक गया और आँखें नम हो गईं।

● **अंजलि मित्तल**
डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल,
बी–८ बसंत कुंज, दिल्ली

अनमोल रत्न

रात को जब उनके पिता लेटे तो उन्हें वह पुरानी बात याद आ गई जब श्याम के जन्मोत्सव पर उन्होंने रुपए कर्ज लेकर जलसा किया था और बेटी के पैदा होने पर घर में रुपए होते हुए भी एक कोड़ी भी खर्च नहीं की थी। पुत्र को रत्न समझा था, पुत्री को पूर्व जन्म के पापों का दंड। यह रत्न कितना कठोर निकला और यह दंड कितना मंगलमय।

रामकुमार और रामदुलारी अपनी बेटी से बहुत प्यार करते थे। छोटी उम्र में भी वह घर के काम में चतुर और खेती–बाड़ी में निपुण थी। उसका भाई श्याम् जो उम्र में बड़ा था, बड़ा ही कामचोर और आवारा था।

रामकुमार ने अपनी बेटी सुभागी और श्यामू दोनों की शादी कर दी। थोड़े दिन बीते। अचानक एक दिन बड़ी विपदा आ गई। सुभागी बहुत छोटी उम्र में विधवा हो गई। बेचारी को अपना जीवन पहाड़ लगने लगा था।

कुछ साल बीते। लोग रामकुमार पर दबाव डालने लगे कि लड़की की कहीं दूसरी जगह शादी कर दो। रामकुमार बोला, ''भाई में तो तैयार हूँ लेकिन सुभागी माने तो। वह किसी तरह राजी नहीं होती।'' लोगों ने उसे बहुत समझाया लेकिन वह बोली मेरा मन शादी करने को नहीं कहता।

इस पर उसका उजड्ड भाई बोला, ''तुम अगर सोचती हो कि भैया कमाएँगे और मैं बैठी मौज करूँगी, तो इस भरोसे न रहना।'' सुभागी ने गर्व से कहा, ''मैंने तुम्हारा आसरा भी नहीं लिया और भगवान ने चाहा तो कभी कहूँगी भी नहीं।'' अब सुभागी माँ–बाप के साथ रहने लगी।

उसने घर का सारा काम सँभाल लिया। बेचारी पहर रात से उठकर कूटने–पीसने लग जाती, चौका–बर्तन करती, खेत में काम करने चली जाती। रात में कभी माँ के सिर में तेल डालती, कभी उनकी देह दबाती। जहाँ तक उसका बस चलता, माँ–बाप को कोई काम नहीं करने देती।

मगर ये सब बातें उसके भाई को अच्छी नहीं लगती और उसकी पत्नी भी उसे सिखाती रहती। एक दिन उसका भाई आपे से बाहर हो गया और अपनी बहन से बोला, ''अगर इन लोगों का इतना मोह है तो क्यों नहीं अलग रहती हो इन्हें लेकर। तब सेवा करो मालूम हो कि सेवा कड़वी लगती है कि मीठी। दूसरों के बल पर वाहवाही लेना आसान है। बहादुर वह है जो अपने बल पर काम करे।''

सुभागी ने तो बात बढ़ जाने के भय से चुप्पी साध ली पर उसके पिता से न रहा गया। वे बोले, ''उस गरीबन से क्यों लड़ते हो। जब तक मैं जीवित हूँ तुम उसे कुछ नहीं कह सकते।'' इस पर श्यामू बोला, ''आपको बेटी बहुत प्यारी है तो उसे गले बाँधकर रखिए। मेरा हिस्सा मुझे दे दीजिए।''

रामकुमार बोला, ''अच्छी बात है। अगर तुम्हारी यह मर्जी है तो यही होगा। मैं कल गाँव के आदमियों को बुलाकर बँटवारा कर दूँगा। तुम चाहे अलग हो जाओ, सुभागी तो हमारे साथ ही रहेगी।''

रात को जब उनके पिता लेटे तो उन्हें वह पुरानी बात याद आ गई जब श्यामू के जन्मोत्सव पर उन्होंने रुपए कर्ज लेकर जलसा किया था और बेटी के पैदा होने पर घर में रुपए होते हुए भी एक कोड़ी भी खर्च नहीं की थी। पुत्र को रत्न समझा था, पुत्री को पूर्व जन्म के पापों का दड़। यह रत्न कितना कठोर निकला और यह दंड कितना मंगलमय।

दूसरे दिन रामकुमार ने पंचों के फैसले के अनुसार अपने पुत्र को अलग कर दिया। वह मन ही मन बोला कि लड़के से तो लड़की भली जो कुलवन्ती हो। सुभागी की माँ–बाप के प्रति सेवा देखकर पूरे गाँव वाले उसकी वाह–वाह करने लगे और साथ ही साथ कहते कि यह कोई देवी है।

थोड़ा समय बीत जाने पर रामकुमार को जोर का ज्वर चढ़ा आया। उसकी पत्नी उसके पास बैठी रो रही थी। यह देखकर सुभागी को चिन्ता हो गई। वह दौड़कर अपने भाई के पास गई और बोली, ''भैया, चलो देखो आज पिताजी न जाने कैसे हुए जाते हैं।''

श्यामू उसकी बातों को अनसुना करके बोला, ''क्या मैं डॉक्टर–हकीम हूँ कि देखने चलूँ।'' यह सब भाई के मुख से सुनने के बाद सुभागी चुपचाप गाँव के एक सज्जन व्यक्ति के पास गई। जिसका नाम सजन सिंह था। संजन सिंह को पिता की हालत का बयान किया। सजन सिंह रामकुमार के स्वास्थ्य के विषय में जानकर दौड़ा हुआ सुभागी के साथ उसके घर पहुँचा और रामकुमार की हालत देखकर हैरान हो गया और बोला, '' अब तुम्हारे जिन्दगी के दिन पूरे हो गए हैं।'' यह सुनकर रामकुमार ने अपने बेटी की जिम्मेदारी सजन सिंह को सौंप दी। पर अन्त समय तक रामकुमार ने अपने बेटे और बहू को देखने की इच्छा नहीं की।

जब अंत्येष्टि का समय आया और गाँव वालों ने उसके पुत्र को अंत्येष्टि के लिए कहा तो उसने साफ मना कर दिया और कहा, ''वह मेरा न पिता है औन न मैं उसका पुत्र हूँ।'' पुत्र के मना करने पर उसकी पत्नी ने उसका संस्कार किया। पुत्री सुभागी ने हिन्दू धर्म की परम्परा के अनुसार तैरहवीं तक का पूरा कार्य तन–मन, धन से किया जिसे देखकर गाँव वाले आश्चर्यचकित हो गए।

सुभागी के पिता के देहांत के पश्चात् उसकी माँ ही हालत भी दिनों दिन गिरती चली गई जिससे उसने जल्दी ही बिस्तर पकड़ लिया। सुभागी ने अपनी माँ की बहुत सेवा की फिर भी वह उसे बचा न सकी और पन्द्रह दिन बाद परलोक सिधार गई। लेकिन जाने से पहले अपनी बेटी को बहुत–सा आशीर्वाद दिया और कहा, ''तुम्हारे जैसी बेटी पाकर मैं धन्य हो गई, मेरा सारा क्रिया कर्म तुम ही करना। मेरी भगवान से यही प्रार्थना है कि अगले जन्म में भी तुम मेरी कोख से ही जन्म लो।''

माँ के देहान्त के बाद सुभागी ने रात दिन एक करके सजन सिंह का कर्ज चुकता कर दिया जो उसने अपनी माता–पिता की सेवा के लिए लिया था। उसके गुणों को देखकर चारों ओर से उसकी सगाई के पैगाम आने लगे। सभी उसको अपनी घर की बहू बनाना चाहते थे।

कर्ज चुकता होने पर सजन सिंह ने सुभागी से प्रार्थना की कि अगर तुम ठीक समझो तो मैं तुम्हें अपनी बहू बनाना चाहता हूँ। वैसे तो मैं जात–पात में विश्वास करता हूँ, मगर तुमने मेरे सारे बंधन तोड़ दिए हैं। तुम साक्षात् भगवती का अवतार हो। यह सुनकर सुभागी ने सजन सिंह से कहा, ''मैं तो आपको अपना पिता समझती हूँ। आप जो कुछ करेंगे, मेरे भले के लिए ही करेंगे।''

सजन सिंह ने उसके माथे पर हाथ रखकर कहा, ''बेटी, तुम्हारा सुहाग अमर हो। तुमने मेरी बात रख ली। मुझ–सा भाग्यशाली संसार में और कौन होगा?'' दोनों की आंखें सजल हो उठीं।

● **रीता जुनेजा**
विद्या भारती स्कूल
सूर्यनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

सच्चाई

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी कक्षा आठ की कक्षा में अध्यापिका बन गई। नया साल आरंभ हो गया। नई कक्षा नए छात्र और नया माहौल। सब कुछ ठीक–ठाक चल रहा था कि अचानक एक घटना ने मुझे झकझोर कर रख दिया।

हर दिन की तरह उस रोज़ भी जब कक्षा में पढ़ाने पहुँची तो देखा कक्षा में शोर मच रहा है। तीन छात्र आपस में लड़–झगड़ रहे थे। मुझें देखते ही सब अपने–अपने स्थान पर चले गए और वे तीनों आपस में हल्की–हल्की बहस करते रहे कि गलती किसी थी?

तीनों को डाँटा पूछने पर पता चला कि लड़ाई का विषय 'गाली' था। तीनों एक–दूसरे को दोषी ठहरा रहे थे। यह रोज़ की ही बात थी कहीं न कहीं किसी ने किसी बात पर छात्र आपस में अभद्र भाषा का प्रयोग कर लड़ते–झगड़ते थे और एक–दूसरे पर दोषारोपण करते थे। थोड़ा समझाने के बाद कक्षा में पढ़ाई आरंभ हो गई। सब कुछ सामान्य होने लगा। कक्षा के उपरांत तीनों को बुलाकर मैंने कहां कि इस तरह की गलती पर आपके माता–पिता से बातचीत की जाएगी।

तीनों चुपचाप सुनते रहे और सिर झुकाकर जाने लगें। अचानक एक छात्र रुका और कहने लगा कि इस बार क्षमा कर दें! आगे से ऐसा नहीं होगा। मैं हिंसा नहीं करूंगा, अभद्र भाषा का प्रयोग नहीं करूंगा। पता नहीं उसके स्वर में क्या सच्चाई थी कि मैंने उसे यह कहकर कि अगले कुछ दिन मैं तुम्हारे व्यवहार को देखकर कोई कदम उठाऊंगी, छोड़ दिया।

समय बीतता गया। मैं इस घटना को भूल गई। रोज विद्यलाय की गतिविधियां चलती रहीं और वार्षिक परीक्षाओं का समय निकट आ गया। कक्षा आठ का परीक्षा परिणाम बनाते समय अचानक मेरी निगाह एक नाम पर अटक गई दो बार पड़ा और एक बार फिर यकीन नहीं हुआ कि हर परीक्षा में फेल होने वाला छात्र आज सभी विषयों में अच्छे अंक लेकर पास हो गया है। उस दिन की घटना आँखों के सामने फिर से घूम गई और छात्र की सच्चाई से मेरी आँखें भी नम हो गईं।

● **अंजलि मित्तल**
डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल,
वसंतकुंज, दिल्ली

नाटक

अनुक्रम–2

नाटक

1. प्रयास	*राजेश शर्मा*
2. लाएंगे नया सवेरा	*सीमा शर्मा*
3. प्रकृति–भक्षक	*अनीता फोतेदार*
4. सुबह का भूला	*मीरा शर्मा*
5. शांति–संदेश	*संगीता*
6. अहिंसा परमोधर्म	*गायड़ सिंह चुण्डावत*
7. बुराई का अंत	*संगीता विनायका*
8. संतोष परमं सुखम्	*रमाकांत द्विवेदी*
9. जग की शोभा	*संतोष यादव*
10. संकल्प	*शमा अरोड़ा*
11. जानवर भी दोस्त हैं	*परमिंदर कौर*
12. फासले	*सीमा कौशिक*
13. अनोखी शपथ	*ज्योति सिहोटा*
14. प्रकृति–पुरुष	*मीना शर्मा*
15. जैसा करनी वैसी भरनी	*अविनाश कुमार मिश्रा*
16. कसम	*पायल जैन*
17. पर्यावरण की पुकार	*मंजू बख्शी*
18. अरावली का दर्द	*विनीता शर्मा*
19. प्रदूषण का भूत	*शशि गोयल*
20. बेटी का विवाह	*हरिशंकर द्विवेदी*

प्रयास

पात्र–परिचय

गुरुदेव : सब बच्चों के गुरु
10 से 15 बच्चे : जो ऊँ के उच्चारण के समय मंच पर ध्यान मग्न हैं। मंच के अनुसार बच्चे कम ज्यादा हो सकते है
बालक नं.1 व 2 : साथ में पढ़ने वाले बालक
बालक नं. 3 : चित्रकारी करने वाला बालक
बालक नं. 4 : क्राफ्ट कार्य करने वाला बालक
बालक ए : कवि
बालक बी : गायक
बालक सी : तबला वादक
बालक क व ख : वेट लिफ्टिंग का अभ्यास करनें वाले बालक
बालक अ, ब, स : अभिनय का अभ्यास करने वाले बालक
बालक च,छ, ज : कुश्ती का अभ्यास करने वाले बालक
पिता 1,2,3,4
कुछ शिक्षक : जो बच्चों को पारितोषिक स्वरूप गोल्ड मैडल एवं शिल्ड देते हैं

प्रथम दृश्य

(प्रातःकाल सूरज उगने से पूर्व का समय, वातावरण में प्राकृतिक गूँज, ठण्डी शीतल बहती हवा, पेड़–पौधे, नदी–झरनों का शोर, जो अपने होने का अहसास कराते हैं। नई तरंग, नया उत्साह, स्फूर्ति से भरपूर पशु–पक्षी भी अपनी–अपनी दस्तक देते हुए, चिड़िया का चहचहाना, कोयल का कूकना, गाय का रम्भाना, गाय के बछड़े का रम्भाना, मुर्गे का बांग देना फूल–पत्तियों का खिलना। ये सब मिलकर वातावरण को आनन्दमय, उत्साहमय और स्फूर्तिमय बना रहे हैं।
सारे वातावरण में ऊँ का उच्चारण गुँजायमान हो रहा है। वृक्ष के नीचे बैठे योगी पुरुष (गुरु) ऊँ के उच्चारण से उस पूरे वातावरण को सकारात्मक ऊर्जा में परिवर्तित करते हुए। गुरुजी के चारों तरफ भावी पीढ़ी के कर्णधार बालक बैठे हैं। गर्मी, सर्दी, बरसात, बसंत ऋतुओं का आना, कोई भी ऋतु हो, कोई भी मुश्किल हो, पर अडिग गुरु और बालकों का सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त करने का क्रम निरंतर सुचारू रहता है जो कि नियमबद्धता को प्रदर्शित करता है। वही मंच के पिछली तरफ संकल्पों और नियमबद्धता में बंधे सैनिकों का सीमा पर निरंतर गश्त लगाना। मंच पर सभी नेपथ्य से श्लोक गूँजता हुआ। ध्यान मग्न हैं)

अणुव्रत की आचार संहिता पर, हमको चलते जाना है।
कुरूढ़ियों, हिंसात्मकता को, जड़ से दूर भगाना है।।
ऋतु आयेंगी चली जायेंगी, ये प्रयास अड़िग–अपार है।
बाधाओं से लड़ने को अब, अणुव्रत बालक तैयार है।।
नई दृष्टि और संकल्पों से , जीवन का निर्माण हुआ है।
आध्यात्मिकता अमल हृदय है, नजर लक्ष्य पर केवल अब है।।

बालक : गुरुदेव, हम रोज ऊँ का उच्चारण क्यों करते हैं?

गुरु : यह एक प्रयास है ताकि हम सब ईश्वर के निकट रह सकें। हम सब ईश्वर की संतानें हैं। ईश्वर सकारात्मक ऊर्जा का सबसे बड़ा भण्डार है। जब हम पूरे विश्वास से उस ईश्वर के ध्यान में जाते हैं, उस समय हम ईश्वर के सबसे निकट होते हैं। उस समय हमारे शरीर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवेश सबसे अधिक होता हैं, जिससे हमारे शरीर को शारीरिक एवं मानसिक बल प्राप्त होता है। हमारे कार्य करने की क्षमता बढ़ती है, हमारी बुद्धि का विकास होता है। इन दोनों के तालमेल से हम सफलता की ओर अग्रसर होते हैं।

बालक : गुरुदेव सफलता क्या है?

गुरु : मानव जीवन कर्म प्रधान है। हम जैसा कर्म करते हैं, हमें फल भी वैसा ही मिलता है। हर कर्म के पीछे कोई न कोई उद्देश्य होता है, लक्ष्य होता है। हमारे द्वारा निर्धारित उद्देश्य या लक्ष्य की प्राप्ति तक अपने कर्म को पहुँचाने का प्रयास ही सफलता कहलाता है।

बालक : गुरुदेव सफलता के मार्ग को प्रशस्त कैसे किया जाये। क्या हर व्यक्ति अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के प्रयास में सफल होता है?

गुरु : प्रयासों का सफल होना या असफल होना कुछ बातों पर निर्भर करता है। कोई भी प्रयास सही दिशा में, सही समय पर और गुरु के नेतृत्व में किया जाना चाहिए। कोई भी कार्य जो आप करते हैं, उस कार्य की जानकारी से सम्बंधित स्त्रोत अधिक से अधिक आपके पास उपलब्ध होने चाहिए। इसके अलावा हमारे दिन भर का आचरण भी, हमारी सफलता और असफलता को प्रभावित करता है। हमारे सामने जो रुकावटें आती हैं, उसके मुख्य कारण हैं हमारी आदतें, हमारे जीवन में नियमों का अभाव होना, हमारे इर्द–गिर्द नकारात्मक ऊर्जा के स्त्रोत होना, ये सब असफलता के घटक हैं। इसके विपरीत यदि तुम सफलता की ओर अग्रसर होना चाहते हो तो अपने आप को पहचानो, अपने अन्दर अच्छी आदतों का समावेश करो, अपने जीवन को नियमबद्ध और अनुशासनमय बनाओ। अपने इर्द–गिर्द सकारात्मक ऊर्जा के स्त्रोतों को बढ़ाओ।

बालक : गुरुदेव, पर मुझे हमेशा डर लगता है कहीं मैं फेल न हो जाऊँ।

गुरु : बेटा, डर को जन्म देने वाले हम खुद होते हैं, और डर को पालने वाले भी हम खुद ही होते हैं। अगर हम उस कारण को जाने, जिस कारण की वजह से डर उत्पन्न हो रहा है, और उस कारण को दूर करने का प्रयास करें तो डर खुद–ब–खुद दूर हो जायेगा। तुम्हें लगता है कि तुम फेल हो जाओगे? फेल होने का मुख्य कारण है अध्ययन, इसका अर्थ है तुमने अध्ययन ठीक प्रकार से नहीं किया। तुम निरंतर अध्ययन ठीक प्रकार से करोगे तो तुम्हारे अन्दर बैठा डर खुद–ब–खुद भाग जायेगा, इसलिए अपने अध्ययन के प्रयास को और बढ़ाओ।

''करत करत अभ्यास ते, जड़मति होत सुजान।
रस्सी आवत जावत ते, सिल पर पड़त निसान।।

तुम्हें अपने लिए खुद प्रयास करना होगा। इस समय तुम्हारे अन्दर सबसे अधिक सकारात्मक ऊर्जा है। इस समय उस कार्य को प्रयास करो जो तुम्हें सबसे मुश्किल लगता है। या फिर वो कार्यकरो जिसे करने में तुम्हारी रुचि सबसे अधिक है। अर्थात् अपने अन्दर की कला को निखारो, उसे तराशों।

दूसरा दृश्य

(सब बच्चे गुरु को प्रणाम करके मंच पर से चले जाते हैं। मंच पर केवल गुरु रह जाते हैं। तभी मंच पर बच्चों का एक समूह प्रवेश करता है जिनका उद्देश्य पढ़ना है।

बालक 1: मुझे मैथ्स में सबसे ज्यादा प्रॉब्लम आती है। तुम्हारा मैथ्स कैसा है?

बालक 2: मेरा मैथ्स बहुत अच्छा है।

बालक 1: क्या तुम मेरी मैथ्स में सहायता करोगे?

बालक 2: हाँ....हाँ, क्यूँ नहीं। मैं कैमेस्ट्री का अध्ययन कर रहा हूँ। तुम्हें मैथ्स में कोई भी प्रॉब्लम आये तो मुझसे निःसंकोच पूछ लेना।

बालक 1: तुम कैमेस्ट्री पढ़ रहे हो, मेरी कैमेस्ट्री बहुत अच्छी है, यदि तुम्हें कोई प्रॉब्लम आये तो तुम भी मुझसे निःसंकोच पूछ लेना।

बालक 2: हाँ....हाँ ग्रुप में पढ़ाई करने का यही तो सबसे बड़ा फायदा हैं।

बालक 3: मुझे चित्रकारी करना सबसे अच्छा लगता हैं, इसलिए भई मैं तो पेंन्टिग करूँगा। मैं अपनी कल्पना को रंगों के माध्यम से इस कागज़ पर उतारने का प्रयास करता हूँ।

बालक 4: मुझे क्राफ्ट के पीरियड में सबसे ज्यादा डांट पड़ती है। मैं तो अपना क्राफ्ट वर्क करूँगा।

तीसरा दृश्य

(मंच के एक तरफ वो अभ्यास में व्यस्त हो जाते हैं, तभी दूसरा ग्रुप मंच पर प्रवेश करता है।)

बालक एः वाह! उत्तम, अति उत्तम। आज यह वातावरण मुझे नई रचना करने के लिए प्रेरित कर रहा है। यदि प्रयास किया जाये तो मैं कुछ अच्छा लिख सकता हूँ।

बालक बीः बिल्कुल कवि महोदय, आप जल्दी शब्दों की रचना कीजिए ताकि आपके शब्दों को हम अपने सुरों से संगीतबद्ध कर सकें।

बालक बी : (कवि रचना करता है)

बालक बी व सी : वाह! अति उत्तम। अब ज़रा कवि महोदय इसे कुछ इस तरह से कहें (बी गाता है और गिटार बजाता है एवं सी तबले पर साथ देता है)

(तभी मंच पर तीसरे ग्रुप का प्रवेश। वेट लिफ्टिंग का सामान लेकर आते हैं)

बालक क : इस बार मैं कोई गलती नहीं करना चाहता। इस बार नेशनल वेट लिफ्टिंग चैम्पियन बनना ही बनना है। पूरा प्रयास करना है।

बालक ख : अभी चैम्पियनशिप कॉम्पटीशन में बहुत वक्त है। अगर अभी से हम अपने अभ्यास का समय बढ़ा दें तो हमारी जीत निश्चित है।

बालक क : आज तुम्हारा बैंच प्रेस का टर्न है। तुम बैंच प्रेस शुरू करो। मैं आज सीट अप करूँगा। चलो–चलो जल्दी शुरू करो, समय बर्बाद मत करो।

(वो अपने अभ्यास में जुट जाते हैं, तभी मंच पर चौथे ग्रुप का प्रवेश)

बालक अ : चलो अपने अभिनय का अभ्यास शुरू करें।

बालक ब : हाँ..हाँ इतिहास के अलग–अलग चरित्रों को जीवंत करने का प्रयास करें, उनका अभिनय करने का अपना एक अलग ही आनंद है।

बालक स : तुम आज किस रस को जीना चाहती हो।

बालक ब : मैं आज वीर रस को जीना चाहती हूँ। इतिहास के पन्नों में गढ़ा गया, मेरा सबसे मनपसंद चरित्र महारानी लक्ष्मीबाई का चरित्र। आज मैं अपने जीवन में महारानी लक्ष्मीबाई के चरित्र को जीवंत करना चाहती हूँ।

बालक द : तो चलो–चलो जल्दी तैयार होकर लक्ष्मीबाई बनो।

(लक्ष्मीबाई को तैयार करते हैं, एक अंग्रेज लिबास पहनता है। एक स्क्रीप्ट लेकर खड़ा होता है)

बालक अ (अंग्रेज) : लक्ष्मीबाई तुम अपनी झाँसी अंग्रेजी सरकार को सौंप दो।
बालक द : ओहो...ऐसे नहीं, यह अंग्रेज का चरित्र है शब्दों को ज़रा तोड़–मरोड़ कर बोलो।
बालक अ (अंग्रेज) : ठीक है। लक्ष्मीबाई तुम अपना झाँसी अंग्रेजी सरकार को सौंप दो।
बालक ब (रानी) : ओ अंग्रेज के बच्चे, मैंने कोई बोटल का दूध नहीं पिया, मैंने अपनी माँ का दूध पिया है। अगर तुमने अपनी माँ का दूध पिया है,तो झाँसी में प्रवेश करके दिखा।
बालक अ (अंग्रेज) : टुम सरकार के अगेन्स्ट में बगावट करटा है।
बालक ब (रानी) : मैंने कहा ना मैं अपनी झाँसी किसी को नहीं दूंगी। किसी कीमत पर नहीं दूँगी। नहीं दूँगी... नहीं दूँगी ...नहीं दूँगी। झाँसी कोई गाजर–मूली नहीं जिसे तुम्हारी सरकार उखाड़ कर जेब में डाल लेगी। जाओ जाकर तुम्हारी सरकार से कह दो कि गोरों को धूल चटाने के लिए हिन्दुस्तान की नारियाँ ही काफ़ी हैं। दफा हो जाओ यहाँ से.....वरना मैं तुम्हारा मुँह नोंच लूँगी। (रानी अंग्रेज का मुँह नोंचती है)
बालक अ (अंग्रेज) : ये डायलॉग नाटक में नहीं है, छोड़ो मेरा गला।
बालक द : लगता है इस पर तो सच में झाँसी की रानी सवार हो गई।
(बच्चे रानी को अंग्रेज से दूर करते हैं और समझाते हैं। अंग्रेजी बालक अपने मुँह ओर गले को पकड़ता है, खांसता है।
बालक ब (रानी) : तुम्हारे लगी तो नहीं.... मैं क्या करूँ मैं अपने आप को रोक नहीं पाई।
बालक अ : इट्स ओके.....चलो आगे बढ़ते हैं **(वो फिर अपने अभ्यास में लग जाते हैं। तभी मंच पर पांचवें ग्रुप का प्रवेश, वह वहाँ पर नृत्य करते हैं।)**
(मंच पर छठे ग्रुप का प्रवेश)
बालक च : चलो जल्दी से अखाड़ा खोदो।
(दो युवक फावड़े से अखाड़ा खोदते हैं, अरगबत्ती जलाकर अखाड़े की पूजा करते हैं, हनुमान जी का श्लोक बोलते हैं)
बालक च : बोलो बजरंग बली की.....
बालक च, छ,ज एवं झ : जय.....। चलो कुश्ती शुरू करो।
(बालक ज और झ कुश्ती करते हैं)
बालक छ : शाबाश.....कस कर पकड़ो उसे, शाबाश दाव लगाओ।
(सब बच्चे अपने–अपने अभ्यास में जुट जाते हैं पीछे से श्लोक गूँजता है)
श्लोक : स्वयं विधाता हो हे मानव।
मानव तू खुद सक्षमता से, संघर्षों को वश में कर ले
अपने कर्मों की कोशिश से, जीवन पथ रोशन तू कर ले
कदम बढ़ाकर तू हिम्मत से, सही समय पर सही दिशा ले
हर प्रयास तेरा, बाधा से, डर को खुद से दूर भगा ले
मानव तू खुद सक्षमता से.....।

चौथा दृश्य

(मंच पर एक–एक करके बच्चों के अभिभावकों का प्रवेश)

पिता 1 : (चित्रकारी करते हुए बालक से) क्या हो रहा है ये? देखो मुझे, आज मैं इस शहर का नामी डॉक्टर हूँ। तुम एक डॉक्टर के बेटे हो। मैं चाहता हूँ तुम भी एक सफल डॉक्टर बनो और तुम दिन भर यह पेंटिग करते रहते हो, क्या है यह सब बेटा?

बालक 3: पिताजी, मैं डॉक्टर नहीं बनना चाहता, आप मुझे जबरदस्ती डॉक्टर क्यूँ बनाना चाहते हो, मैं पेंन्टिग में अपना भविष्य देखता हूँ।
पिता 1 : तुम्हारे लिए अच्छा क्या है, बुरा क्या है यह तुमसे बेहतर मैं जानता हूँ।
बालक 3: यह अन्याय है पिताजी (रोने लगता है) मंच पर से पिता का प्रस्थान। साथ ही दूसरे अभिभावक का प्रवेश।
पिता 2 : ये क्या बेटा, तुम दिन भर पढ़ाई करते रहते हो, अब और अधिक पढ़कर क्या करोगे?
बच्चा 1 : पिताजी मुझे पढ़ना बहुत अच्छा लगता है। मैं और आगे पढ़ना चाहता हूँ।
पिता 2 : अब और आगे पढ़कर क्या करोगे बेटा। तुम्हें पता है कितना बड़ा व्यापार है हमारा और सम्भालने वाला मैं अकेला, अब मुझे तुम्हारे सहारे की ज़रूरत है। कल से बिज़निस में मेरा साथ दो।
बालक 1: (रोते हुए) पिताजी.....।
(मंच पर से पिता का प्रस्थान, मंच पर तीसरे अभिभावक का प्रवेश)
पिता 3 : तुम्हें पता है तुम्हारे लिए मैंने और तुम्हारी माँ ने कितने सपने देख रखे हैं। मैं सिर्फ और सिर्फ तुम्हें इंजीनियर बनते देखना चाहता हूँ। आज से बंद करो अपने ये नाटक।
बालक ब : पिताजी मुझे अभिनय करना अच्छा लगता है। मैं यश और कीर्ति पाना चाहती हूँ। मेरा सपना है कि इस देश का बच्चा मुझे पहचाने।
पिता 3 : इस बार तुम्हारा इंजीनियरिंग में सलेक्शन नहीं हुआ तो मुझे अपनी शक्ल मत दिखाना।
बालक ब: पिताजी....(दुखी और हताश हो जाता है)
(मंच पर से पिता प्रस्थान मंच पर चौथे अभिभावक का प्रवेश)
पिता 4 : बेटा परिवार का बोझ ढ़ोते–ढ़ोते अब मेरी हड्डियों ने जवाब दे दिया है। तुम्हें पता है तुम्हारी पढ़ाई और तुम्हारे शौक के लिए कितना परिश्रम करना पड़ता है। और कितना गोश्त चढ़ाओगे अपने शरीर पर, ये मत भूलो तुम्हारी दो छोटी बहनें भी हैं, उनके हाथ भी पीले करने हैं मुझे।
बालक क : पिताजी, यह केवल मेरा शौक नहीं; यह मेरा लक्ष्य है। सिर्फ एक साल और दे दीजिए, इस बार मैं चैम्पियन ज़रूर बनूँगा....आपका नाम रौशन करूँगा पिताजी....।
पिताजी 4 : हूँ..... (नाराज होकर चले जाते हैं)
बालक क : पिताजी मेरा विश्वास.....
(मंच पर से पिता का प्रस्थान। सभी बच्चे हताश होकर मंच से चले जाते हैं। मंच खाली हो जाता है, सभी अभिभावक गुरुजी के पास जाते हैं)
डॉक्टर : गुरुदेव मैं चाहता हूँ मेरा बेटा डॉक्टर बने।
इंजीनियर : मेरा बेटा इंजीनियर।
बिज़निसमैन : मेरा बेटा बिज़निसमैन।
वकील : और मेरा बेटा वकील बने।
गुरुदेव : (डॉक्टर से) क्या मैं जान सकता हूँ कि आप खुद डॉक्टर ही क्यों बने।
डॉक्टर : क्योंकि मेरी रुचि थी डॉक्टर बनने में, इसलिए मैं डॉक्टर बना, सिर्फ डॉक्टर बनना, अपना खुद का अस्पताल खोलना मेरे जीवन का सपना था, मेरा उद्देश्य था।
गुरुदेव : (वकील से) और आप।
वकील : मुझे वकालत करना अच्छा लगता था, इसलिए मैं वकील बना।
गुरु : (व्यापारी से)
बिजनिसमैन : मेरी रुचि, मेरा लगाव शुरू से बिज़निस में था। इसलिए आज में एक सफल बिज़निसमैन हूँ।
गुरुदेव : और आज आप सब सफलता की चरम सीमा पर हैं।
सारे : जी हाँ!

गुरुदेव : क्या आप सब जानते हैं कि आपकी इस सफलता के पीछे मुख्य कारण क्या हैं। जब मनुष्य अपनी रुचि के अनुसार व्यवसाय करता है तो उसे सफलता अवश्य मिलती है, क्योंकि उस कार्य को करने में ही उसकी सबसे ज्यादा रुचि होती है। जब आपने अपने व्यवसाय अपनी रुचि अनुसार चुने हैं तो इसके विपरीत आप सब अपने सपनों को अपने बच्चों पर क्यों थोपना चाहते हैं। बच्चों को उनकी रुचि के अनुसार अपना लक्ष्य खुद चुनने दीजिए।

क्या आप लोग आये दिन अखबार में नहीं पढ़ते। जबरदस्ती लक्ष्य प्राप्ति की होड़ बच्चों को निराशा की ओर धकेल रही है। ऐसी अवस्था में आप किसे दोष देंगे–बच्चे को या अपने आप को? बच्चे से उसकी रुचि के विरुद्ध कार्य करवाना ठीक वैसा ही है जैसे आम के वृक्ष से अमरूद के फल की इच्छा करना। इसलिए अपने बच्चों के सपनों को जानने का प्रयास करें।

सब : आपने हमारी आंखें खोल दी गुरुदेव।

(सभी बच्चे खुश होकर मंच पर आते हैं और पुनः सारे बच्चे अपने–अपने अभ्यासों में जुट जाते हैं। एक–एक करके बच्चे अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं। सबसे पहले दो तीन शिक्षक आते हैं। पढ़ने वाले बच्चे को गोल्ड मेडल और डिग्री देते हैं और चले जाते हैं। फिर मंच पर दो–तीन शिक्षक आते हैं कवि, संगीतकार और गायक ग्रुप को शिल्ड देते हैं और मंच से प्रस्थान कर जाते हैं। फिर मंच पर खेल से संम्बधित कोच आते हैं और वेट लिफ्टिंग वाले बच्चे को चैम्पियनशीप की ट्रॉफी देकर चले जाते हैं। फिर दो–तीन शिक्षक आते हैं अभिनय ग्रुप को शिल्ड देते हैं.....नृत्यांगना को भी शिल्ड देकर चले जाते हैं)

नेपथ्य से गीत : घोर निराशा को आशा से, सबको अपने साथ में कर ले।
सजा है जीवन जो सपनों से, सपनों को मुट्ठी में कर ले।।
अपनी तपस्या से तू अपना, जीवन स्तर ऊँचा कर ले।।
आसमान से भी ऊँचा, नाम अमर तू अपना कर ले।।
मानव तू खुद सक्षमता से , संघर्षों को वश में कर ले।
अपने कर्मों की कोशिश से, जीवन पथ रौशन तू कर ले।।

(पर्दा गिरता है)

● **राजेश शर्मा**
सर पदमपत सिंघानिया स्कूल,
नया बोहरा, बारन रोड, कोटा, राजस्थान

लाएंगे नया सवेरा

पात्र–परिचय

तम्बाकू वाला, आम जनता, सूत्रधार, बीड़ी–सिगरेट, महाराज, शुभम् साक्षी, अनुराग, अंकित, आशीष, विपुल

पहला दृश्य

तम्बाकू वाला : तम्बाकू ले लो.... तम्बाकू ले लो...तीन गुणों वाली तम्बाकू ले लो।

आम जनता : तीन गुणों वाली तम्बाकू!! अरे! भाई साहब! आज तक तो हमने तम्बाकू के अवगुण ही सुने हैं और आप तो तम्बाकू के गुण बता रहे हो। हमें भी तो बताओ तम्बाकू के तीन गुण।

तम्बाकू वाला : तो लो जी हमार तम्बाकू का पहला गुण। जो हमार तम्बाकू खाई, उसके घर में कभी चोरी ना हुई।

आम जनता : अरे! तम्बाकू का चोर से क्या लेना–देना?

तम्बाकू वाला : लेना–देना है बहनजी, लेना–देना है। जो हमार तम्बाकू खाएगा, उसे खाँसी हो जाए और जिसे होए खाँसी वो पूरी रात खाँ–खाँ करेगा, तो बताओ चोर कहाँ से आएगा?

आम जनता : अच्छा–अच्छा दूसरा गुण बताओ?

तम्बाकू वाला : ये लो दूसरा गुण। जो हमार तम्बाकू खाए उसे कभी कुत्ता ना काटी।

आम जनता : वो कैसे?

तम्बाकू वाला : अरे अब आप खुद ही बताइए। जो हमार तम्बाकू खाई उसे हो जाई कमजोरी, और चलने के लिए उसे चाहिए लाठी और जिसके पास हुई लाठी उसे कुत्ता क्या कुत्ते का बाप भी ना काटे।

आम जनता : तीसरा गुण बताओ?

तम्बाकू वाला : अच्छा हमार तीसरा और सबसे अहम् गुण देखो भई, जो हमार तम्बाकू खाई, उसे कभी बुढ़ापा ना आई।

आम जनता : वो कैसे?

तम्बाकू वाला : देखो जो हमार तम्बाकू खाई उसका तो जवानी में ही 'राम नाम सत्य' हो जाई। तो फिर बताओ बुढ़ापा कहाँ से आई। तो बताओ लोगे–लोगे तम्बाकू?

आम जनता : अरे नहीं, नहीं.... अजीब पागल है अवगुण को गुण बता रहा है।

तम्बाकू वाला : लो जी ऐसे ही खाली–पीली समय बर्बाद कर दिया, हटो यहाँ से।
तम्बाकू ले लो.....

सूत्रधार प्रथम : बिल्कुल सही कहा अवगुणों में गुण ही तो देखते हैं तभी तो इतने शौक से इसका सेवन करता है।

सूत्रधार द्वितीय : हम सभी को पता है कि तम्बाकू खाने से ओरल कैंसर और सिगरेट पीने से लंग कैंसर और न जाने कितनी हॉर्ट डीज़िस होती है, तब भी न जाने कितने लोग इसका सेवन करते हैं।

सूत्रधार तृतीय : ये मालूम होते हुए भी कि तम्बाकू, कैंसर जैसी कितनी ही भयानक बीमारियों की जड़ है। तब भी कितने लोग इसका प्रचार व प्रसार करते हैं और भयानक बीमारियों को न्योता देते हैं।

सूत्रधार प्रथम : यही बात तो हम यहाँ समझाने आए हैं तो आओ बड़ी शान के साथ मिलकर छेड़ें एक तान ताकि मिटा सकें तम्बाकू का नामोनिशान।
नाटक होगा, नाटक होगा.....यहीं पे होगा, यहीं पर होगा।

दूसरा दृश्य

(बीड़ी–सिगरेट तम्बाकू से मिलने आती हैं)

बीड़ी–सिगरेट : दुहाई हो महाराज दुहाई हो।
महाराज : अरे क्या हुआ! क्यूँ इतने परेशान हो?
सिगरेट : अरे अरे! हमारे खिलाफ़ अभियान छिड़ गया है।
बीड़ी : तम्बाकू तो समाज के लिए श्राप, अभिशाप और न जाने क्या–क्या घोषित कर दिया है।
महाराज : अरे! तो ऐसा कौन सा पहली बार हो रहा है। हजारों बार हमारा अस्तित्व मिटाने की कोशिश की गई। पर जिसने कोशिश की उसी के तख्ते पलट गए, तो बीड़ी तुम चिंता मत करो, रिलेक्स।
बीड़ी : पर मुझे तो अपनी जान खतरे में लगती है। कही मेरा अस्तित्व खत्म हो गया तो?
महाराज : तुम्हारा अस्तित्व खत्म हो ही नहीं सकता क्योंकि जो भी तुम्हें मुँह से लगाएगा वह सिर्फ तुम्हारा ही होकर रह जाएगा। मुझ पर विश्वास नहीं होता तो खुद ही देख लो।
शुभम् : कहाँ गए, कहाँ गए?
साक्षी : अरे क्या ढूँढ रहे हो?
शुभम् : तू चुप कर।
साक्षी : नहीं मिलेंगे।
शुभम् : क्यों ?
साक्षी : मैंने झाड़ू लगा दी है।
शुभम् : अरे झाड़ू लगाने की क्या जरूरत थी, कुछ और काम नहीं कर सकती थी।
साक्षी : पर मैं तो रोज यही करती हूँ।
शुभम् : पर रोज़ दिल्ली तो बंद नहीं होती ना।
साक्षी : पर दिल्ली बंद होने से तुम्हें क्या फर्क पड़ेगा?
शुभम् : अरे! मैं बीड़ी कहाँ से लाऊँगा। रात को ही बीड़ी का स्टॉक इकट्ठा कर लेना चाहिए था।
साक्षी : स्टॉक! बीड़ी का स्टॉक।
शुभम् : और नहीं तो क्या?
साक्षी : हे भगवान! मैं बर्बाद हो गई। एक बीड़ी ने इन्हें कितना निकम्मा, नाकारा बना दिया है।
शुभम् : अरे! चुप कर मेरी माँ, मैं तेरा खून कर दूँगा।
साक्षी : एक बीड़ी के लिए।
शुभम् : मिल गया।
साक्षी : क्या।
शुभम् : बीड़ी का टोटा।
(बीड़ी जलैले, जिगर से पिया, जिगरमा बड़ी आग है)
साक्षी : फीटे मुँह.....
महाराज : तो देखा तुमने, बीड़ी कैसे लोग तुम्हारे दीवाने हैं। अरे तुम्हारे नाम पर तो गाने सुपर डुपर हिट हैं। और तो और अभिनेत्रियाँ भी तुम्हारे नाम पर ठुमकती हैं। तो फिर तुम्हारा अस्तित्व कैसे खत्म हो सकता है।

सिगरेट : अरे वहाँ देखो लोग कैसे मुझे पीने के बहाने ढूँढते हैं।
अनुराग : यार! बनाने वाले ने भी क्या चीज़ बनाई है। अगर यह सिगरेट ना होती तो बाई गॉड हमारी जिंदगी तो ना बर्बाद हो गई होती।
अंकित : अरे! ला यार मुझे भी दे।
अनुराग : क्यूँ, क्या हो गया, बता तो, बड़ा परेशान लग रहा है।
अंकित : अरे! कुछ नहीं यार! रोज वही घर की चिक–चिक। जब देखो कहते रहते हैं पढ़ो–पढ़ो। जाने कितना पढ़ाएंगे मुझे। मन करता है भाग जाँऊ।
आशीष : यार! मेरे घर की भी यही कहानी है। मेरे–माँ–बाप को तो मुझे दूसरों के बच्चों से कंपेयर करने में मजा आता है।
अनुराग : अरे! वो देखो वो आशिक चला आ रहा है।
विपुल : अरे छोड़ ना यार!
अनुराग : अरे तेरी बुलबुल कहाँ है?
विपुल : उड़ गई।
अनुराग : तभी तो उसका मुँह लटका हुआ है।
विपुल : हाँ यार, बहुत परेशान हूँ। समझ नहीं आता क्या करूँ।
अनुराग : कुछ खाने का मन नहीं कर रहा है तो ये ले सिगरेट, दो–तीन कस लगा ले।
विपुल : सिगरेट, यह तो बहुत खराब चीज़ होती है ना।
अनुराग : सीधा बोल! पीने की हिम्मत नहीं है। इसको पीने के लिए मर्द का जिगर चाहिए होता है।
विपुल : तू कहना क्या चाहता है?
अनुराग : वही जो तू समझ रहा है।
विपुल : तू कहना चाहता है कि मैं मर्द नहीं हूँ। मैंने ऐसा तो कुछ नहीं कहा। रहने दे! बच्चा है तू अभी।
विपुल : दे अभी पीता हूँ।
अनुराग : घबरा मत, पहली बार ऐसे ही होता है।
(विपुल सिगरेट पीता है)
अंकित : हाँ, ये हुई ना मर्दों वाली बात।
(कोरस हर फ़िक्र को धुएँ में उड़ाते चले गए)
सूत्रधार : और ज़िंदगी को खाक बनाते चले गए।
अंकित : तुम हमारे गाने की नकल क्यों उतार रहे हो?
सूत्रधार : ये सब छोड़ो, तुम इधर आओ। अरे! क्यूँ इन कमज़ोर लोगों की बातों में आ रहे हो तुम! सिगरेट पीना मर्दानगी की नहीं, कमजोरी की निशानी है। थोड़ी सी मुसीबत आई नहीं, थोड़ा सा प्रभाव पड़ा नहीं कि लगे सिगरेट के छल्ले उड़ाने।
अरे! कौन–सा पहाड़ टूट गया है तुम पर। एक लड़की ही तो गई है ना। एक लड़की चली गई तो दूसरी मिल जाएगी पर अगर जिंदगी चली गई तो लौट कर वापिस नहीं आएगी। तुम सिगरेट को नहीं बल्कि मौत को मुँह से लगा रहे हो। जानते हो एक सिगरेट को पीने से हमारी ज़िंदगी के सात मिनट कम हो जाते हैं। जिन लोगों को दिल का दौरा पड़ता है, उनमें से अधिकांश लोग सिगरेट पीने के आदी होते हैं। फेफड़े का कैंसर भी सिगरेट पीने से ही होता है। जो चीज़ हमें इतनी बीमारियाँ देती हैं, उसे पीने में कैसी शान!
विपुल : बाप रे बाप! इतने छोटी सी चीज़ को पीने से इतनी सारी बीमारियाँ लग सकती हैं।
सूत्रधार : इसे तो समझ आ गया है। अब आप भी समझ जाइए। जीवन अनमोल है, इसे तम्बाकू की लत लगाकर मत गवाइए।
(तम्बाकू आता है)

क्या हो गया है तुम्हें? क्यों पीछे पड़े हो हमारे।

सूत्रधार : हम तुम्हारे पीछे पड़े हैं? बल्कि तुम हमारे पीछे पड़े हो। हमारे पूरे समाज को तुम खोखला कर रहे हो। लोगों को तुम्हारी लत लग जाती है वो दो जून रोटी के लिए पैसे इकट्ठा हो या ना लेकिन तुम्हें खरीदने के लिए उनके पास पैसे होते ही हैं। और जो तुम्हें डायरेक्ट रूप में खाते हैं, उनके जबड़े खुलना बंद हो जाते हैं। वो अपनी पाँचों अँगुलियों को मुँह में नहीं डाल सकते। एक चम्मच डालने के लिए भी तरस जाते हैं।

महाराज : हम उन्हें बुलाते नहीं, वो खुद दुकानों में जाते हैं, पैसे खर्च करते हैं। हमें खाते हैं, पीते हैं और जिंदगी का मजा लेते हैं।

सूत्रधार : हाँ मजा लेते हुए वो अपनी आर्थिक स्थिति तो खराब करते ही हैं और अपनी आयु भी कम करते हैं। ऐसी चीज़ का क्या मज़ा जो हमसे हमारी जिंदगी ले ले।

अंकित : तो कर लो तुम प्रयास। दस–बीस लोगों को समझा लो। क्या फ़र्क पड़ेगा।

सूत्रधार : फर्क पड़ेगा। आज हम दस को समझाएंगे, कल बीस को और ये संख्या बढ़ती जाएगी।

सूत्रधार : फिर कहते हैं न इरादे नेक हों तो सपने भी साकार होते हैं अगर सच्ची लगन हो तो, रास्ते आसान होते हैं। होगा यह समाज तम्बाकू मुक्त।

(सब मिलकर कर गाते हैं)

लाएंगे–लाएंगे, लाएंगे,
हम लाएंगे नया सवेरा
लाएंगे, लाएंगे, लाएंगे हम लाएंगे नया उजाला।

● **सीमा शर्मा,**
ज्ञान मंदिर पब्लिक स्कूल,
नारायणा विहार, दिल्ली

प्रकृति–भक्षक

पात्र–परिचय

मोहन : मूर्ख राजा
सुरेश : मंत्री, एवं अन्य विद्यार्थी

पहला दृश्य

अध्यापिका : बच्चों शुभप्रभात।
बच्चे : शुभप्रभात अध्यापिका जी।
अध्यापिका : सभी विद्यार्थी अपना–अपना स्थान ग्रहण करें। आज हम जो विषय पढ़ने जा रहे हैं, उसको अभिनय द्वारा पढ़ाया जाएगा।
(सभी विद्यार्थी खुश होते हुए, अध्यापिका विद्यार्थियों को पात्रों अनुसार अभिनय समझाते हुए)
अध्यापिका : आज के नाटक का शीर्षक है ''प्रकृति भक्षक''।
मीरा : अध्यापिका जी 'प्रकृति भक्षक' का अर्थ क्या होता है?
अध्यापिका : प्यारे बच्चों! आप रक्षक का अर्थ समझते हो?
बच्चे : जी अध्यापिका जी, रक्षक का अर्थ है रक्षा करने वाला।
अध्यापिका : भक्षक का अर्थ है प्रकृति को नष्ट करने वाला। तो हम अभिनय शुरू करें।
विद्यार्थी : जी अध्यापिका जी।
राजा : मोहन (अपने मंत्री को पुकारते हुए) आज वीर सिंह कहाँ है?
मंत्री : जी हुजूर में यहाँ हूँ, अभी हाजिर होता हूँ।
राजा : मैंने तुमसे कितनी बार कहा है कि मुझे अपने महल के आसपान शोर–शराबा बिल्कुल पसन्द नहीं, फिर यह नगाड़े क्यों बजाए जा रहे हैं?
मंत्री : सुरेश जी महाराज, अभी पता लगाता हूँ।
मंत्री : (इधर–उधर झाँकते हुए, अन्दर प्रवेश करता है) महाराज आज गाँव के लोग सभी वनमहोत्सव मना रहे हैं।
राजा : (मूर्खता से) यह वनमहोत्सव क्या है? हमारे राज्य में तो केवल राज्याभिषेक का महोत्सव ही मनाया जाता है। यह नया महोत्सव मनाने की अनुमति इन्हें किसने दी?
मंत्री : महाराज, प्रकृति हरी–भरी रहे, वातावरण शुद्ध रहे, पशु–पक्षी रंभाते व चहचाहते रहें, इसलिए सभी लोग मिलकर पेड़–पौधे लगाते हैं, जिससे चारों ओर हरियाली छायी रहे, लोग आनंद के वातावरण में साँस ले सकें।
महाराज : घोर अपराध, मेरे राज्य में मुझसे पूछे बिना लोग तो क्या, पशु–पक्षी भी आवाज नहीं कर सकते। अभी जाकर सारे पेड़–पौधों को उखाड़ फेंको, दूर–दूर तक कोई पक्षी मुझे चहचाहते हुए नजर न आएं। मेरे राज्य में केवल मेरी ही आवाज चहुँ ओर गूँजनी चाहिए।
मंत्री : जी महाराज।
महाराज : (अन्य मंत्रियों को पुकारते हुए) हमारी बघ्घी निकालो, आज हम स्वयं सबका शिकार करेंगे।
(महाराज बघ्घी में जा रहे हैं, रास्तें में बघ्घी घास की वजह से ऊपर नीचे हिलोरे खा रही थी, तभी महाराज चिल्ला उठे)
महाराज : कितनी बार कहा है मेरे रास्ते में किसी भी प्रकार की रुकावट नहीं आनी चाहिए। दूर–दूर तक मेरे महल के आसपास कोई पेड़–पौधा, पक्षी दिखाई नहीं देना चाहिए। हमें केवल संगीत व मदिरा से ही प्यार है, उसने बिना हमें कुछ भी अच्छा नहीं लगता।
(राजा बड़े दुःखी मन से महल में वापिस आता है तभी मंत्री भी महल में घुसता है)

दूसरा दृश्य

(दरवाजा लगा हुआ है)

मंत्री : महाराज अपनी आज्ञानुसार पूरे राज्य में पेड़–पौधे उखाड़ फेंक दिए गए, पशु भी भगा दिए, अब आपके शान्त वातावरण में कोई दुविधा नहीं है।

महाराज : शाबाश!

(धीरे–धीरे समय बीतता गया, वातावरण में नीरसता आने लगी! गर्मी अधिक बढ़ने लगी। राज्य में वर्षा का कोई नामो–निशान नहीं रहा)

महाराज : (राज्य का भ्रमण करते हुए) चारों और सन्नाटा क्यों छाया है?

मंत्री : महाराज अधिक गर्मी के कारण लोग घरों में दुबक कर बैठे हैं, प्यास से व्याकुल हैं।

महाराज : तुम ठीक कहते हो। हवा का एक भी झौंका महसूस नहीं हो रहा, महलों में वापिस चला जाए।

मंत्री : महाराज आपके लिए निमंत्रण पत्र आया है।

महाराज : कहाँ से?

मंत्री : निकट के राज्य हमीरपुर के राजा ने एक यज्ञ का आयोजन किया है। आसपास के सभी राजाओं को आमन्त्रित किया है।

महाराज : हम अवश्य जाएँगे, देखें तो सही आखिर वह यह यज्ञ क्यों करवा रहे हैं?

मंत्री : महाराज! अवश्य जाइएगा।

(महाराज यज्ञ में जाते हैं)

महाराज : (अपने मंत्री से कहते हैं) ऐसा क्या कारण है कि हमारे राज्य में सन्नाटा छाया, जबकि यहाँ चारों ओर खुशहाली, हवा के झौंके, नदी, झरनों के स्वर गूँज रहे हैं, वातावरण मस्त कर देने वाला है।

मंत्री : महाराज! यह एक राज की बात है जिसे महल में जाकर ही मैं बताऊँगा।

(महाराज जैसे ही कुछ दिनों पश्चात् महल में प्रवेश करते हैं वैसे ही लोगों की भीड़ उनके महल के बाहर खड़ी चिल्ला रही थी)

महाराज : अपने मंत्री की ओर देखते हुए वीर सिंह! यह सब लोग यहाँ क्यों आए हैं? हमें जाँच कर शीघ्र ही इनके आने का कारण बताइए।

तीसरा दृश्य

(वीर सिंह मंत्री लोगों से वार्तालाप करते हुए महल में प्रवेश करते हुए)

मंत्री : महाराज! महाराज!! अनर्थ हो गया?

महाराज : वीर सिंह क्या हुआ?

वीर सिंह : महाराज हमारे राज्य की स्थिति दिन–प्रतिदिन खराब होती जा रही है। सूखा पड़ गया, अकाल की स्थिति हो गई, लोग भूखों मर गए। ऐसे में हमारे राज्य का नामोनिशान ही मिट जाएगा।

महाराज : जिसने भी ऐसी परिस्थितियाँ पैदा की; उसको हमारे सामने हाजिर कीजिए।

मंत्री : महाराज! यदि मैंने उसके बारे में बता दिया तो छोटा मुँह बड़ी बात होगी।

महाराज : क्या तुम मेरी आज्ञा का उल्लंघन करना चाहते हो? मुझे शीघ्र उसका नाम बताओ, अन्यथा मैं तुम्हें तुम्हारे पद से वंचित कर दूँगा?

वीर सिंह : (सिर झुकाते हुए, थरथराते हाथों को जोड़ते हुए) हुजु–हुजुर.....।

महाराज : यह हुजूर–हुजूर क्या लगा रखी है?

(वीर सिंह बहुत समझदार था। उसने हिम्मत जुटाई और महाराज को सच्चाई का आईना दिखाया)

वीर सिंह : महाराज, वह और कोई नहीं आप स्वयं हैं।

महाराज :(चिल्लाकर) वीर सिंह। जानते हो तुम क्या कह रहे हो?

वीर सिंह : जी महाराज, मैं सोच–समझ कर ही बोल रहा हूँ। यदि आज मैंने अपना मुँह नहीं खोला तो अनर्थ हो जाएगा।

महाराज : कैसा अनर्थ?

मंत्री : (वीर सिंह) महाराज दूसरे राज्य के राज की बात यही है, जिसे आप समझ नहीं रहे।

महाराज : (मूर्खता से) हमें विस्तार से समझाओ। हमसे पहेलियाँ मत बुझाओ!

(महाराज हमें अपने सुख में प्रजा का सुख नहीं ढूँढ़ना चाहिए, बल्कि प्रजा के सुख में ही एक अच्छे राजा का सुख है। आपने पेड़–पौधे कटवा कर, पशु–पक्षियों को मरवाकर जो घोर अपराध किया है, आज उसी का बदला प्रकृति आपसे ले रही है। हमें प्रकृति रक्षक बनना है, परंतु आप तो प्रकृति एवं प्रजा भक्षक बन बैठे हो। दूसरे राज्यों का खुशहाल होना, प्रगति करना इसी बात का सूचक है। हमें अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए प्रकृति को हानि नहीं पहुँचानी चाहिए।

महाराज आज जो घुटा–घुटा सा वातावरण है उसका कारण पेड़–पौधे न होना ही है। आप हवा के झोंके की कल्पना बिना पेड़–पौधों के कैसे कर सकते हैं? आपने पशु–पक्षियों एवं लोगों सबको कष्ट पहुँचाया है!

महाराज : घोर–घोर! यह हमसे घोर अपराध हुआ है! अनजाने में हम यह सब क्या कर बैठे? हम तो विधाता से क्षमा माँगने के भी काबिल नहीं रहे?

मंत्री : महाराज, अभी भी परिस्थितियाँ सुधारी जा सकती हैं।

महाराज : कैसे?

मंत्री : यदि हम आज ही पूरे राज्य में यह ऐलान कर दें कि सभी लोगों को एक–एक पेड़ अपने आँगने में लगाना होगा। उसे प्रतिदिन सींचना होगा। पशुओं को पालना होगा।

महाराज : क्या इससे हमारा वातावरण ठीक तो जाएगा।

मंत्री : जी महाराज! कुछ महीनों पश्चात् हमारा राज्य फूलों की खुशबू से महकने लगेगा। चारों ओर खुशी का वातावरण होगा।

महाराज : (मंत्री को ईनाम देते हुए) आज हम बहुत खुश हैं। कोई तो हमारे राज्य में है जो सबके सुखों का ध्यान रखता है। हम आज से प्रण करते हैं कि मदिरा व संगीत को न छू अपना अधिक से अधिक समय पेड़–पौधों की देखभाल में लगाएँगे, हर वर्ष वनमहोत्सव मनाएँगे।

(चारों ओर महाराज की जय–जय के नारे गूँजने लगे)

चौथा दृश्य

अध्यापिका : बच्चों आपने क्या सीखा?

सुरेश : यही कि हमें प्रकृति–प्रेमी बनना चाहिए। किसी को दुःख नहीं पहुँचाना चाहिए।

अध्यापिका : प्यारे बच्चों! राजा के साथ–साथ हमें भी यह संकल्प लेना होगा कि हम भी प्रतिवर्ष अपने विद्यालय में पेड़ लगाएंगे।

बच्चे : अध्यापिका जी हम संकल्प लेते हैं कि हम अपनी प्रकृति को कभी नुकसान नहीं पहुँचाएंगे, प्रदूषण को बढ़ावा नहीं देगे?

अध्यापिका : प्यारें बच्चों जानते हो, 'पेड़–पौधे हैं प्रकृति के आभूषण, न करो तुम इनका दूषण।

इसी नारे से हमें जीना है। हमको दूसरों को भी यही सिखाना है।

● **अनीता फोतेदार,**
डी. एल. एफ. पब्लिक विद्यालय,
राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद, उ. प्र.

सुबह का भूला

पात्र : परिचय

छात्र : राहुल, संजय, प्रिया, ईशा
प्रिंसिपल : राजेश अग्रवाल
माँ : राहुल, संजय, प्रिया एवं ईशा की

प्रथम दृश्य

राहुल : हैलो, हैलो! संजय क्या कर रहे हो यार?
संजय : हाँ राहुल, कुछ नहीं बोर हो रहा हूँ। किताब तो उठाई है, परंतु पढ़ने की इच्छा नहीं हो रही।
राहुल : पढ़ाई को गोली मार, चल घूमने चलते हैं। शाम को पार्टी करेंगे, बाकी मित्रों को भी फोन कर रहा हूँ।
संजय : ठीक है, बहुत मज़ा आएगा।

दृश्य परिवर्तन

(सभी मित्र खा–पी रहे हैं)

संजय : कुछ ठंडा–शंडा लाया है?
राहुल : यार, तू भी बच्चा का बच्चा ही रहेगा। ये कोई ठंडा पीने की उम्र है, हमने ठंडी बियर रख ली है।
प्रिया : बियर के साथ मुर्गा–मछली हो तो मज़ा आता है।
ईशा : हाँ–हाँ, लो भई मछली खाओ, मैं लेकर आई हूँ।
राहुल : (सिगरेट पीते हुए) यार मज़ा आ गया।
संजय : चलो भई शाम हो गई है, जरा इलायची तो दो, खा लें, जिससे पता न चले कि हमने सिगरेट और शराब पी रखी है।
प्रिया : हाँ भई, मेरी माँ की नाक तो बहुत तेज है।

दृश्य परिवर्तन

माँ : प्रिया, इतनी देर कहाँ लगा दी। कॉलेज तो कब का बंद हो चुका होगा।
प्रिया : माँ, आप बेवजह शक करती हो, मैं ईशा के साथ पढ़ रही थी, वहीं देर हो गई।
माँ : (बड़बड़ाते हुए) रोज ही देर से आती हो और कोई न कोई बहाना बना देती हो।
प्रिया : (स्वगत् भाषण) चलो बच गए परंतु लगता है माँ को शक हो गया है।

दृश्य परिवर्तन

कॉलेज का गहमागहमी भरा दृश्य। परीक्षा के परिणाम आ चुके हैं। अच्छे अंक लेकर उत्तीर्ण होने वाले छात्र खुश हैं और एक–दूसरे को बधाई दे रहे हैं। राहुल, संजय, ईशा और प्रिया मुँह लटका कर बैठे हैं।
प्रिया : क्या मुँह लेकर घर जाऊँ, माँ जब भी देर से आने का कारण पूछती थी, मेरा जवाब होता था ईशा के साथ पढ़ रही थी, राहुल के साथ पढ़ रही थी। अब पूछने पर क्या जवाब दूंगी?
ईशा : परंतु घर तो जाना ही पड़ेगा न।

(सभी अपने–अपने घर जाते हैं)

दृश्य परिवर्तन

(प्रिया घर पहुँचती है)

माँ : बेटा, कैसा रहा परीक्षा का परिणाम?

प्रिया : (मुँह नीचा कर) ज्यादा अच्छा नहीं रहा।

माँ : लेकिन तुम तो रोज़ देर तक पढ़ाई करती थी, ईशा के साथ।

प्रिया : हाँ माँ, मेहनत तो की थी पर.....।

माँ : चलो कोई बात नहीं, अगली बार और मेहनत करना।

(प्रिया चली जाती है)

माँ : (स्वागत भाषण करते हुए) जरूर दाल में कुछ काला है। मैं ईशा की माँ से संपर्क करने की कोशिश करती हूँ, ऑफिस से छः बजे तो वह आ ही जाएँगी।

प्रिया की माँ : हैलो, आप ईशा की मम्मी बोल रही हैं....। मुझे आपसे प्रिया के विषय में बात करनी है, क्या ईशा के भी अच्छे अंक नहीं आए हैं। क्या! वो तो यहाँ कभी भी पढ़ने नहीं आई.....ये आप क्या कह रही हैं? लगता है हमें मिलजुल कर पता लगाना पड़ेगा, माज़रा क्या है? राहुल और संजय की माँ से भी मिलते हैं, ये चारों अक्सर साथ दिखाई पड़ते हैं।

(प्रिया और ईशा की माँ सावधानी से अपने बच्चों के क्रिया–कलाप पर ध्यान रखती हैं और राहुल और संजय की माँ को भी विश्वास में ले लेती हैं)

दृश्य परिवर्तन

(चारों बैठ कर खा–पी रहे हैं। अचानक अपनी–अपनी मां को देख कर भौंचक्के रह जाते हैं)

राहुल : हकलाते हुए अ...रे, माँ आ...प यहाँ कैसे.....

प्रिया की माँ : बेटा, तो ऐसे आपकी पढ़ाई चलती है।

ईशा की माँ : बेटी, माँ–बाप का नाम खूब रोशन कर रही हो।

संजय की माँ : हमारी मेहनत की कमाई का ऐसा दुरुपयोग। मैं तो सपने में भी ऐसा नहीं सोच सकती थी।

(चारों माँ आपस में फुसफुसाते हुए) हमें बहुत सोच–समझ कर कदम उठाना होगा। कभी बच्चे कुछ कर न बैठें।

ईशा की माँ : हमें कॉलेज के प्रिंसिपल महोदय से सहायता लेनी चाहिए, वह बहुत समझदार व्यक्ति हैं।

राहुल की माँ : हाँ, यह ठीक रहेगा।

दृश्य परिवर्तन

(चारों अपने बच्चों को समझा कर प्रिसिंपल महोदय के पास ले जाती हैं। चारें प्रिंसिपल महोदय के कक्ष में सिर झुका कर खड़े हो जाते हैं)

प्रिंसिपल (राजेश अग्रवाल) : बेटा, अब आप बड़े हो गए हैं, क्या आपको पता नहीं, आप लोग किस पतन के गर्त में जा रहे हो।

प्रिया की माँ : बेटा, क्या तुम्हें पता नहीं यह सिगरेट और शराब कितनी ख़तरनाक हैं।

प्रिंसिपल : आप लोगों को यह आदत कैसे लगी बेटा?

राहुल : (आँसू रोकते हुए) हमने तो मित्रों की देखा–देखी फैशनेबल दिखने के लिए ऐसा किया था। हमें क्या पता था बात इतनी बढ़ जाएगी और हमें इन चीज़ों की आदत हो जाएगी।

संजय : कम अंक आने पर हमें बुरा तो बहुत लगा परंतु फिर इन चीज़ों ने हमें अपनी ओर खींच लिया।

प्रिंसिपल : बेटा पहले बियर फिर व्हिस्की और फिर ड्रग्स और फिर ऐसा खतरनाक रास्ता जिससे वापस लौटना मुश्किल है। क्या कभी सोचा है तुम लोगों ने?

संजय की माँ : निरपराध पशु–पक्षियों को मार कर खाना क्या यह गलत नहीं है बेटा?

प्रिंसिपल : क्या अपनी आने वाली पीढ़ी को तुम यही संस्कार दोगे। बेटा आप सभी समझदार हैं, सही राह क्या है, इसका चुनाव तो तुम्हें स्वयं करना है।

चारों बच्चे : (आँखों में आँसू भर) हमसे बहुत बड़ी भूल हो गई। हम अपने को आधुनिक दिखाने के चक्कर में गलत राह पर चल पड़े।

प्रिंसिपल : सुबह का भूला अगर शाम को घर आ जाए तो उसे भूला नहीं कहते हैं। अपनी माँ से माफ़ी माँगो बच्चों।

बच्चे : माँ, हमसे गलती हो गई, इस व्यसन को छोड़ने में हमारी सहायता कीजिए।

प्रिंसिपल : बेटा आधुनिक बनना है तो मानसिक रूप से आधुनिक बनो, रूढ़ीवादी गलत कुरीतियों को छोड़ो। चलो आज से प्रण करो, हम व्यसनमुक्त जीवन जीएँगे। अन्यथा बहुत से लोगों की तरह, जिन्हें समय पर उनके परिवार को सहयोग नहीं मिला, तुम्हें भी पछताना पड़े या पछताने के लिए तुम बचो ही नहीं। इस राह पर आगे बढ़ जाने पर यह ड्रग्स तुम्हें मौत की लंबी नींद न सुला दें?

चारों : (हाथ आगे बढ़ा कर। हम प्रण करते हैं, किसी निरपराध की हत्या नहीं करेंगे, किसी भी तरह के नशे को हाथ नहीं लगाएँगे और व्यसनमुक्त जीवन जीएँगे।

(पर्दा गिरता है)

● **मीरा शर्मा**
सुमेरमल जैन पब्लिक स्कूल,
जनकपुरी, दिल्ली

शांति–संदेश

पात्र–परिचय

वृद्ध ,वृद्धा
वृद्ध का बड़ा बेटा, वृद्ध की बड़ी बहू
वृद्ध का छोटा बेटा, वृद्ध की छोटी बहू ,वृद्ध का पोता
एक कॉलेज का प्रोफसर
समाचार वक्ता

पहला दृश्य

(टेलीविजन पर रात के समाचार सुन रहा है सारा परिवार। समाचार सुनते हुए सभी के चेहरे चिंता की रेखाओं से ग्रस्त हैं)

समाचार वक्ता : आज के मुख्य समाचार। आज मुंबई में आतंकवादी हमले में कई लोगों की मृत्यु हो गई व सौ से अधिक लोग घायल हुए। पुलिसकर्मियों ने जवाबी गोलियां चलाईं। दो आतंकवादी मारे गए हैं। बाकी एक पकड़ा गया।

वृद्ध : अरे! आतंकवादी पकड़ने या मारने का क्या फायदा। जो इतना विनाश हुआ है उसका क्या?

वृद्धा : सच कहते हो ऐसी सफलता का भी क्या फायदा जो लोगों के खून से सनी हो।

वृद्ध : यह कौन सा खुद हमला करते हैं। शत्रु नेता अपने अधिकरण या शक्ति का प्रभाव दिखाने के लिए भोले–भाले लोगों पर अत्याचार कराते हैं।

वृद्धा : मुझे तो ये समझ नहीं आता कि ऐसा करते क्यों हैं?

बड़ा बेटा : और क्या होगा माँ, सियासत के ठेकेदार मासूम जनता के बल पर आपस की रंजिशें निकालते हैं।

वृद्ध : सच में ईश्वर जाने क्यों ऐसे लोगों का साथ देता है जो अपने स्वार्थ के लिए मानवीय जीवन का सौदा करने में भी नहीं झिझकते।

बड़ी बहू : बाबू जी, क्या यह युद्ध, यह हार यह जीत खत्म नहीं हो सकती?

वृद्ध : कहाँ बेटा, जब तक इस संसार में स्वार्थ खत्म नहीं होगा, यह युद्ध कैसे समाप्त हो सकता है?

छोटा बेटा : पर पापा, द्वापर युग में विष्णु अवतार श्री कृष्ण ने भी अर्जुन को युद्ध करने के लिए कहा था जब उन्होंने अपने प्रियजनों पर बार करने से इन्कार किया।

वृद्ध : बेटा, उसके पीछे तो कोई कारण था। कौरवों ने पाप का मार्ग अपनाया था। पर भला इस मासूम जनता ने किसी का क्या बिगाड़ा था।

वृद्ध औरत : और बेटा, महाभारत तो धर्मयुद्ध था। कृष्ण जी ने धर्म की रक्षा व अधर्म के नाश के लिए युद्ध करने को कहा था।

बड़ी बहू : भैया ऐसे तो त्रेतायुग में श्रीराम ने मानव जाति के कल्याण हेतु राक्षसों से युद्ध किया।

छोटा बेटा : यही तो मैं कहना चाहता हूँ कि युद्ध का प्रचलन देवी–देवताओं ने ही चलाया था।

वृद्ध : मैं तो युद्ध के संहारक पक्ष की बात कर रहा था। इतने विनाशक परिणाम होते हैं ऐसे युद्ध के जिससे स्वार्थ, लोभ, अत्याचार और हिंसा का प्रसार होता है।

बड़ा बेटा : धर्मयुद्ध में बराबर वाले को चुनौती दी जाती है किन्तु आजकल अपने से निर्बल राष्ट्र पर उसके जाने–अनजाने प्रहार कर दिया जाता है।

छोटी बहू : बाबू जी! खाना लगा दिया। अब आकर खा लीजिए। देर हो रही है। सुबह सबने काम पर भी जाना है।

दूसरा दृश्य

(कॉलेज में एक कक्षा में प्रोफेसर व वृद्ध के पोते के बीच वार्तालाप)

पोता : सर आपने समाचार सुने? कितना बुरा हुआ। आखिर ये लोग युद्ध क्यों करते हैं। इतने निर्दोष लोग बिना गलती के मौत के घाट उतार दिए जाते हैं।

प्रोफेसर : सच बहुत दुःख की बात है। लोग सियासत के लालच में आकर अक्सर ऐसा करते रहते हैं।

पोता : तो क्या ये हमले, ये युद्ध, ये हिंसा कभी समाप्त नहीं होगी?

प्रोफेसर : तुम्हारी ये जिज्ञासा देख मेरा बरसों से देखा स्वप्न फिर जाग गया शांति स्थापित करने का। (थोड़ी देर रुक कर) इन युद्ध का सबसे बड़ा कारण है प्रतिहिंसा की भावना। लोग बदला लेने के लिए एक–दूसरे पर हमला करते हैं।

पोता : जी शायद इसलिए पुरानी शत्रुता जाग उठती है और यह युद्ध क्रम या हमले कभी समाप्त होने में नहीं आते।

प्रोफेसर : आज की युवा पीढ़ी को चाहिए कि वह आगे बढ़कर निःशस्त्रीकरण पर ज़ोर दे व युद्धों पर विराम लगाए।

पोता : वह कैसे सर?

प्रोफेसर : क्या आप सब नहीं जानते कि किस पाकर बापू गांधी ने अहिंसा प्रचार अकेले शुरू किया था। देखते ही देखते उनके समर्थन में अनेक लोग खड़े हो गए थे।

पोता : (दोस्तों के साथ मिलकर) सर! आप ठीक कह रहे हैं। सब मिलकर हम ये युद्ध, ये हमले रोकने का प्रण ले सकते हैं।

प्रोफेसर : शाबाश मेरे बच्चों। मैंने सदैव स्वप्न देखा है कि न जाने वह कैसा शुभ क्षण होगा जब मानव युद्ध, हिंसा त्यागकर अपनी सारी शक्ति संस्कृति निर्माण पर लगा देगा। शायद मेरा यह स्वप्न अब पूरा होगा।

पोता : सर, कुछ राष्ट्र तो पहले ही निःशस्त्रीकरण के लिए प्रयत्नशील हैं। उनके प्रयत्न भी अवश्य सफल होंगे।

प्रोफेसर : यदि सचमुच सफल हो गए तो मानव जाति चैन की साँस ले सकेगी।

पोता : ज़रूर सर, हम सब मिलकर निःशस्त्रीकरण पर ज़ोर देंगे व युद्ध समाप्ति का संकल्प लेकर आगे बढ़ेंगे।

तीसरा दृश्य

(पोता अपने घर वापिस आता है। बड़े जोश से भरा हुआ)

वृद्ध : आ गए बेटा, क्या बात है, बहुत खुश नज़र आ रहे हो।

पोता : दादा जी! आज हमने अपने प्रोफेसर से युद्ध के बारे में चर्चा की । उन्होंने हमें इसे रोकने के प्रति प्रेरित किया।

बड़ा बेटा : बेटा, यह तो बहुत अच्छी बात है। हम सपरिवार आपके इस प्रयोजन में साथ हैं।

पोता : जी पिता जी, हम सबने मिलकर यह प्रण किया है कि शांति प्रचार के माध्यम से व कुछ दिग्गजों की सहायता से हम निःशस्त्रीकरण के पहलू पर जोर देंगे। लेखकों की कलम द्वारा, शब्दों द्वारा अपना शांति संदेश लोगों तक पहुँचाएंगे। किसी भी आक्रामक नीति का सदैव विरोध करेंगे।

वृद्ध : वाह बेटा! तरे जैसा पोता पाकर मैं धन्य हो गया। ईश्वर करे ऐसे बच्चे सभी के हों तो इस देश में शांति कुंज स्थापित करने से कोई नहीं रोक सकता।

संगीता
सेंट विवेकानंद मिलेनियम स्कूल
एच. एम. टी. टाऊनशिप,
पिंजौर, हरियाण

अहिंसा परमोधर्म

पात्र–परिचय

भोपा, तलवारधारी, बड़ा बकरा, छोटा बकरा, हजुरिया (सेवक), खेमा (खटीक)

(माताजी का प्राचीन मंदिर, मंदिर में मूर्ति के सामने भोपा बैठा है। ढ़ोल, थाली व मादल बजने लगते हैं। भोपा को भाव आने लगता है। थाली, मादल व ढ़ोल की आवाज़ तेज़ हो जाती है)

भोपा : लाओ भाई! लाओ जल्दी लाओ।

हजुरिया : (हाथ जोड़ते हुए, हकलाते हुए) ख.....ख....खम्मा अन्नदाता। पे.....पे....पेल्या काईं हाज़िर करूँ?

भोपा : (हाथ से इशारा करते हुए) दे जल्दी दे।

हजुरिया : (काँपता हुआ) माई–बाप चालतो कै वाजतो।

भोपा : (गुस्से से) अरे मूर्ख! चालतो–चालतो। वाजता तो गणई आवे।

(भोपा का संकेत पाकर एक तलवारधारी हाथ में तलवार लिए भोपा के चरणों में धोक देता है। भोपा मोरपंखे से आशीर्वाद देता है। भोपा तलवारधरी को चटक, फूल व पाँच मक्की के दाने देता है।)

तलवारधारी : (उठकर) खेमा! जल्दी ला।

खेमा : दो मिनट में लायो होकम।

(वह एक मोटे–ताजे बकरे को गर्दन पकड़ कर लाता है। उसको तलवारधारी के सामने खड़ा कर, बकरे के पीछे वाल पैर पकड़कर अपनी गर्दन को छिपाता है)

तलवारधारी : (बकरे की गर्दन दबाते हुए) वाह! मज़ा आ जाएगा।

(तलवारधारी जैसे ही वार करने के लिए तलवार उठाता है)

बकरा : अरे निर्दयी! दया कीजिए। मुझ निर्दोष पर आप तलवार क्यों चलाना चाहते हैं? मैंने आपका क्या बिगाड़ा है।

तलवारधारी : (बकरे की गर्दन ठीक करते हुए) तूने कोई गुनाह नहीं किया है, तूने तो कोई न कोई पुण्य किया है, इसीलिए तू यहाँ बलि के लिए लाया गया है।

भोपा : जल्दी कर, मारे करने टेम कोनी।

(तलवारधारी पुनः अपनी तलवार संभालकर वार करने के लिए उद्यत तैयार होता है तभी...)

छोटा बकरा : (दौड़ता हुआ हाँफता हुआ, बड़े बकरे के पास आ जाता है, वह कातर निगाहों से तलवारधारी को देखकर) दया कीजिए, दया कीजिए। मेरे बाबा को मत मारिए। मैं अनाथ हो जाऊँगा।

खेमा : (छोटे बकरे को धक्का देते हुए) चल हट। जा अपनी माँ के पास।

छोटा बकरा : अरे काका! मेरी माँ को तो कल ही कसाई ले गया और मेरे सामने ही उसकी गर्दन काट दी।

तलवारधारी : (तलवार डालकर, सजल नेत्रों से) क्षमा करें भोपाजी! मैं यह बलि नहीं चढ़ा सकता। मैं यह पाप नहीं कर सकता।

भोपा : (गंभीर स्वर में) यह पाप नहीं, ये तो रण बदला रे भाई रण बदला।

हजुरिया : (आश्चर्य से) अन्नदाता! कस्या रणबदला।

भोपा : अरे भई सुन, पूर्वजन्म में यो बकरो अण तलवारधारी ने मारयो तो इण जन्म में यो बदलो पूरो होवेलो।

तलवारधारी : (गंभीरता से) मैं बदला लेने में विश्वास नहीं करता। मैं अपनी बलि दे दूंगा किन्तु इस निर्दोष जीव की हत्या नहीं करूँगा।

भोपा : (रोकते हुए) ठहरो! तुम ऐसा कुछ नहीं करोगे। हिंसा करने से हिंसा बढ़ती है। आग को आग से नहीं पानी से बुझाया जाता है। हिंसा को हिंसा से नहीं अहिंसा से मिटाया जाता है। आज के बाद इस मंदिर में किसी प्रकार की बलि नहीं चढ़ाई जाएगी।

हजुरिया : (नाचता हुआ) शक्ति मात की जय! शक्ति मात जय।

भोपा : हजुरिया! ला भई वाजतो।

(हजुरिया बहुत सारे नारियल भोपा जी के सामने रख देता है। भोपाजी नारियल का प्रसाद सबको बाँटते हैं। सभी जयजयकार करते हैं। ढोल–थाली–मादल की आवाज़ तेज हो जाती है।

● **गायड़ सिंह चुण्डावत**
तुलसी अमृत विद्यापीठ पब्लिक
सी. सै. स्कूल, आमेट, राजसमंद, राजस्थान

बुराई का अंत

पात्र–परिचय

समस्याएँ :
आतंकवाद
भ्रष्टाचार
लूट–डकैती
बलात्कार
कालाधन
उपदेशक :
देववाणी
आमव्यक्ति :
समस्याधारी

(नेपथ्य में आता स्वर)
''हर आत्मा दुःखी है, सुख–शांति खो चुकी है।
हर दृष्टि होकर व्याकुल, महावीर पर रुकी है।''
(एक आम व्यक्ति मंच के मध्य में विराजमान है। तभी कलयुगी समस्याएँ आकर उस पर आक्रमण करती हैं)
आतंकवाद : मारो, मारो। इस व्यक्ति को मारो। इस व्यक्ति का रक्त मेरे लिए अमृत–तुल्य है।
भ्रष्टाचार : अरे! हाँ, मुझे इस व्यक्ति से इस दस्तावेज पर हस्ताक्षर चाहिए, इसके एक हस्ताक्षर से करोड़पति बन जाऊँगा।
लूट–डकैती : सर्वप्रथम मुझे इससे रुपये–पैसे छीनने हैं। तेरे पास जितने भी रुपये हैं निकाल दे वरना...।
व्याभिचारी घटना/बलात्कार : अरे नहीं, मैं इसे वेश्याघर में ले जाना चाहता हूँ, वहाँ इसके सुंदर रूप–लावण्य से मैं अनेक संपत्ति का अर्जन करूँगा।
कालाधन : मुझे इस व्यक्ति के माध्यम से इन जाली नोटों को बाजार में लाना है।
पांचों एक स्वर में : लेकिन, अरे! यह है कैसा प्राणी, हम सब इतनी देर से इससे कुछ कह रहे हैं। किन्तु यह हमारी बात पर ध्यान ही नहीं देता, यह तो पाषाणवत् अड़िग व अचल सा हो गया है।
(अचानक जोर–जोर से बादल गरजने की आवाज होती है तथा आकाश से देव–वाणी शुरू होती है। देवों व उन समस्याओं का संवाद होता है)
देववाणी : अरे मूर्खों! तुम जानते नहीं, ये व्यक्ति इसलिए अचल है, चूंकि यह पंच अणुव्रत के धारी हैं।
पांचो (एक साथ) : ये पंच–अणुव्रत क्या होते हैं?
देववाणी : ''सत्य–अहिंसा–अचौर्य–शुभ ब्रह्मचर्य हैं महान्
अपरिग्रह–परिग्रह परिमाण, पंचाणुव्रत जान।''
अर्थात् अहिंसा–सत्य–अचौर्य–बह्मचर्य–अपरिग्रह ये ही पांच अणुव्रत है।
आतंकवाद : ये अहिंसा–अणुव्रत किस चीज का नाम हैं?
देववाणी : जो व्यक्ति किसी भी प्रकार की प्रत्यक्ष हिंसा का त्यागी होता है अर्थात् न तो प्राणी मात्र की प्रत्यक्ष और न तो विचारों से घात करता है तथा समस्त कीट–पतंगे आदि की मन–वचन–काम के द्वारा हिंसा का त्यागी होता है वहीं 'अहिंसा–व्रत' का धारी है।
भ्रष्टाचार : और यह सत्य–अणुव्रत किस चिड़िया का नाम है?
देववाणी : जो व्यक्ति प्रत्यक्ष व परोक्ष दोनों रूप से ही सर्वथा असत्य–झूठ का त्यागी होता है। जो विचारों में भी किंचित् मात्र झूठ का भाव उत्पन्न होने नहीं देता, वही 'सत्य–अणुव्रत' का धारी है।
लूट–डकैती : यह सब तो ठीक लेकिन यह अचौर्य अणुव्रत क्या है?

देववाणी : अपने स्वामित्व से रहित किसी पर न तो स्वामित्व अधिग्रहण की आकांक्षा रखता है और न ही उसे, उसके स्वामी के बिना पूछे ग्रहण करने का भाव लाता है। वही वास्तव में 'अचौर्य–अणुव्रत' का पालक है।

व्यभिचार/बलात्कार : लेकिन यह 'ब्रह्मचर्य अणुव्रत' क्या है?

देववाणी : जो किसी भी पर–स्त्री, पर–पुरुष को न तो व्याभिचार या खोटे भाव से देखता है व न ही ऐसे विचार लाता है, वही 'बह्मचर्य–अणुव्रत' का पोषक है।

कालाधन : यह परिग्रह–परिमाण क्या है?

देववाणी : जो व्यक्ति आवश्यकता के अनुरूप ही रुपयों–पैसे, धनादि वस्तुओं का संग्रह करता है तथा ''नीति–प्रीति–रीति'' से धनार्जन करता है, वह पालक है।

(पांचों समस्याएं कुछ समय के लिए सोच में पड़ जाती हैं।)

आतंकवाद : हे भगवन्! मैंने ऐसे महाव्रती पालक का घात करने का विचार किया, धिक्कार है मुझे।

भ्रष्टाचार : अरे अभी तक तो मैं घोटालों से धनार्जन करता था, पर धन्य हैं वह व्यक्ति जो विचारों में असत्य न लाये।

लूट–डकैती : हे विधाता! जो व्यक्ति अपने स्वामित्व से रहित धन को देखता भी न हो, मैं उसे ही लूटने जा रहा था, नरक में भी जगह न मिलेगी मुझे।

व्यभिचार/बलात्कार : हे विधाता! यह तो पर–स्त्री, पर–पुरुष को देखता भी नहीं और मैं.....?

कालाधन : पता नहीं मैंने कितने गरीबों व असहायों को लूटा है। कैसे होगा इसका शमन्.....?

(पांचों बहुत ही पश्चातापपूर्वक रोने लगते हैं तथा उस व्यक्ति के चरणों में क्षमा याचना करते हैं।

पांचों (एक साथ) : हे सत्पुरुष! हमें क्षमा कर दीजिए।

आम/सज्जन व्यक्ति : क्षमा करने का तो प्रश्न ही नहीं, क्योंकि मैं न तो क्रोधित हूँ, न ही रुष्ट।

देववाणी : हाँ, मैं भी यहीं चाहता हूँ कि इन बुराइयों का त्याग कर सद्व्रतों का पालन करो।

पांचो (एक साथ) : हाँ, हाँ हम सभी आज से इन बुराइयों का त्याग करते हैं और इन व्रतों का भी यथा–शक्ति पालन करेंगे।

(पांचों अपने समस्त शस्त्र–अस्त्र यथा–बंदूक, गोली, चाकू, छुरी आदि को छोड़ते हैं।)

पांचो (एक साथ) :

''हम सब मिलकर करते हैं, आज यही संकल्प
सत्य–अहिंसा–अचौर्य का पालन एक विकल्प,
ब्रह्मचर्य–परिमाण व्रत, मात्र यहीं है ध्येय,
लूट–पाट व हिंसा तो कही सर्वथा हेय।''

(पर्दा गिरता है)

● **संगीता विनायका,**
उत्कृष्ट विद्यालय,
शासकीय बाल विनय मंदिर,
इंदौर, मध्यप्रदेश

संतोष परमं सुखम्

पात्र परिचय

मोहन : मीरा का पति
मीरा : मोहन की पत्नी
श्याम : मोहन का पुत्र
राजेंद्र : मोहन का दोस्ता
महात्मा : स्वामी संतोषानंद
शिष्य : रामदेव, महादेव
पड़ोसी : मोहन के पड़ोसी

प्रथम अंक

मोहन : अजी! सुनती हो!
मीरा : क्या बात है? जब देखो तब बुलाते रहते हो। घर का कोई काम भी नहीं करने देते।
मोहन : इतना गुस्सा क्यों कर रही हो? पहले तो इतना गुस्सा कभी नहीं करती थी।
मीरा : पहले की बात मत करो। आप भी पहले जैसे नहीं रहे गये। पाँच साल से कभी घुमाने ले गए, एक भी दिन होटल में खाना खिलाया, दो साल से एक भी साड़ी लाए? सोचकर गुस्सा आयेगा कि नहीं, चुप क्यों हो? बोलते क्यों नहीं।
(श्याम का कमरे में प्रवेश)
श्याम : क्या बात है माँ इतना शोर क्यों मचा रही हो?
मीरा : कुछ नहीं, कुछ नहीं, जाओ कॉलेज जाने के लिए तैयार हो जाओ।
श्याम : जब तक मोबाईल फोन और मोटर साईकिल नहीं आ जाती तब तक मैं कॉलेज नहीं जाऊँगा।
मोहन : क्या बोल रहा है? बिना मोबाईल के और बिना मोटर साईकिल लिए कॉलेज नहीं जाएगा। चला है हीरो बनने।
श्याम : पिताजी, सब दोस्त मेरा मजाक उड़ाते हैं। सबके पास महँगे मोबाईल और महँगी गाड़ियाँ हैं।
मोहन : मैं सबकी बराबरी नहीं कर सकता। बारह हजार की नौकरी करता हूँ, इसी में मुझे घर चलाना होता है। कहाँ से लाऊँ गाड़ी, कहाँ से लाऊँ मोबाईल? तुम्हारी फीस भी भरनी होती है।
(पड़ोसी का प्रवेश)
पड़ोसी : अरे मोहन भाई! सुबह–सुबह क्या बीवी–बच्चों पर चिल्ला रहे हो। आज काम पर नहीं जाओगे।
मोहन : नही भाई, काम पर जाना है। लेकिन सुबह–सुबह बेटा बोल रहा है बिना मोबाईल, मोटर साईकिल लिए कॉलेज नहीं जाऊँगा। पत्नी नाराज है, उसकी जरूरत नहीं पूरी कर पा रहा हूँ।
पड़ोसी : मोहन भाई चिल्लाओ मत, यह समस्या हर घर में है। इसलिए समय रहते व्यवस्था करके रखना चाहिए था। जमा योजना में पैसा रखना था। शिक्षा कर्ज योजना से पैसा लेना था। बैंक से कर्ज मिलता है, लेकर सबकी जरूरतें पूरी कर दीजिए।
मोहन : कर्जे की बात मत करो भाई। पहले से ही कर्ज ले रखा है। कर्जा ही नहीं लौटा पा रहा हूँ।
(मोहन कपड़े पहन कर ऑफिस के लिए निकल जाता है)

दूसरा अंक

(मोहन का ऑफिस)

राजेंद्र : आइये, आइये मोहन भाई कहिए कैसे हैं?

मोहन : दोस्त कुछ मत बोलो। आजकल हमारे ग्रह नक्षत्र अच्छे नहीं चल रहे हैं। हर कोई नाराज रहता है। मुझसे कोई खुश नहीं रहता। बेटा अलग नाराज रहता है, पत्नी बात नहीं करती। मन में बड़ा असंतोष रहता है।

राजेन्द्र : कारण क्या है? नाराजगी किस बात की है?

मोहन : मैं उनकी जरूरतें पूरी नहीं कर पा रहा हूँ।

राजेन्द्र : अच्छा यह बात है, मैं तो पहले से बोलता हूँ कि सत्यवादी हरिश्चंद्र बनने से पूरे परिवार को हरिश्चंद्र की तरह दर–दर की ठोकरें खानी पड़ती है। इसलिए जितना हो सके ऑफिस से दाएँ–बाएँ कर लिया करो मुझे देखो, वेतन से ज्यादा में इधर–उधर कमा लेता हूँ। मेरा परिवार और मैं आनंद से रहता हूँ।

मोहन : नहीं भाई, मुझसे नहीं होगा। यह काम मुझसे नहीं होगा।

राजेन्द्र : तो इस महँगाई में पत्नी के ताने सुनो, सिर लटका कर ऑफिस में दिन–रात बैठे रहो।

(मोहन घर आते वक्त एक पोस्टर देखता है, पढ़ता है)

(स्वामी जी का शहर में प्रवचन)

मोहन : अरे सुन रही हो? एक गिलास पानी देना।

मीरा : आ रही हूँ। थोड़ा रुको।

मोहन : आज शाम हम लोग रामलीला मैदान चलेंगे। चलने की तैयारी कर लो। श्याम किधर है?

मीरा : क्या रामलीला मैदान? क्या वहाँ प्रदर्शनी लगी है?

मोहन : नहीं, वहाँ प्रदर्शनी नहीं लगी है। वहाँ जाने–माने महात्मा स्वामी संतोषानद जी का प्रवचन है।

मीरा : नहीं, नहीं मुझे नहीं सुनना है प्रवचन।

मोहन : मीरा सुनो न, दुनिया में गहना, कपड़ा ही सब कुछ नहीं है। इसके अलावा भी तो खुश रहने के लिए बहुत कुछ है।

मीरा : तो, ठीक है हम लोग चलते हैं।

(दृश्य परिवर्तन : सब लोग प्रवचन सुनने के बैठे रहते हैं**)**

शिष्य : स्वामी जी, भक्त जन जमा हो गए हैं। प्रवचन का समय हो गया है।

स्वामीजी : स्वामी ठीक है।

(स्वामी जी का मंच पर आगमन। स्वामी जी के लिए एक भव्य आसन सजाया गया है)

स्वामीजी : नारायण, नारायण। सब भक्तजनों से अनुरोध है कि आप सब अपनी–अपनी जगह पर बैठ जाएँ। (सब शांत हो जाते हैं) स्वामी जी भजन गाते हैं। मैं भक्तन के भगत हमारे, सुन अर्जुन प्रतिज्ञा मेरी, यह व्रत टरे न टारे। मैं .....(सब लोग भजन गाते हैं)

स्वामीजी : मैं देख रहा हूँ कि जनता आज कितनी दुःखी है। अमीर–गरीब सब परेशान हैं। अमीर को अपनी दौलत की चिंता है। उसके घरवाले परेशान हैं। एक भी दिन अपने घर पर परिवार के साथ बैठकर खाना नहीं खा सकता। मैं यह बात सही बोल रहा हूँ कि नहीं आप लोग सब कुछ देख रहे हैं। गरीब भाई खाने के लिए, कपड़े के लिए परेशान हैं। परेशान सब हैं। सुख से कोई नहीं है। मैं आज आप सबको सुख का राज बताना चाहता हूँ। सुख का असली राज है संतोष। अगर आपके मन में संतोष है तो आप सबसे सुखी इंसान हैं। हम महात्माओं को देखिए, मेरे पास क्या है। मेरे पास संतोष का धन है। संतोष का धन सबसे बड़ा धन है। मन पर

इच्छाओं का नियंत्रण रखिए। आप खुश रहेंगे, आपका परिवार खुश रहेगा। घर में खुशियाँ आयेंगी, रिश्तों में दरार नहीं आयेगी। इच्छाएं अनंत होती हैं। अनियंत्रित इच्छाओं से आत्मा का पतन हो जाता है। व्यक्ति बहक कर गलत रास्ते पर चला जाता है। परिवार की मुसीबतें बढ़ जाती हैं। अतः मेरा महामंत्र याद रखो–'संतोष परमं सुखम्'। (महात्मा जी प्रवचन समाप्त करते हैं।)

मोहन : अरे मीरा क्या सोच रही हो? चलो अब घर चलें। बहुत देर हो गई।

मीरा : हाँ चलो चलते हैं। एक बात बताऊं मैं आज का प्रवचन सुनकर बहुत भावुक हो गई हूँ। मैंने आपको क्या–क्या नहीं बोला, मैं अपने रिश्ते को भी भूल गई थी। अभी मैं जीवन के सच्चे सुख को समझ गई हूँ।

श्याम : पिता जी, मैं भी महात्मा जी की बातें सुनकर आनंदित हो रहा हूँ। अब मैं खुश रहकर अच्छी पढ़ाई करूँगा। अपना भविष्य निर्माण करूँगा। मोबाईल और मोटर साईकिल से भविष्य नहीं होता।

मोहन : नहीं, नहीं (सब लोग आपस में गले मिलते हैं)

एक साथ बोलते हैं – **"संतोष परमं सुखम्"।**

● **रमाकांत द्विवेदी,**
सेंट मैरीज हाईस्कूल,
गोपाल चौक, चक्की नाका,
पूना लिंक रोड, कल्याण (पूर्व),
महाराष्ट्र

जग की शोभा

पात्र–परिचय

मुखिया,
ग्रामीण
देवी माँ

प्रथम दृश्य

(बिस्सापुर गाँव। शाम का समय। चारों ओर खुशियों की हलचल। हँसते–खिलते परिवार लेकिन गाँव का मुखिया देवी माँ के मंदिर में चिंतामग्न बैठा है, तभी वहाँ देवी माँ प्रकट होती है)

देवी माँ : मुखिया जी! क्या बात है आप इतने चिंतित क्यों हैं? ईश्वर कृपा से आपके गाँव में धन–धान्य की कोई कमी नहीं है।पूरा गाँव खुशहाल है, फिर चिंता का क्या कारण है।

मुखिया : प्रणाम देवी माँ! देवी माँ! आप तो सब जानती हैं, मेरे घर में कुछ समय बाद तीसरी संतान आने वाली है। पहले ही दो–दो बेटियाँ मेरे घर में हैं, अगर तीसरी संतान भी बेटी ही आ गई तो मेरे वंश को आ कौन बढ़ाएगा? यही चिंता मुझे रात–दिन खाए जा रही है।

देवी माँ : यह कैसा विचार मुखिया जी! बेटियाँ तो घर की शोभा होती हैं, रौनक होती है और सुख–समृद्धि देने वाली लक्ष्मी होती हैं, फिर भी बेटियों के बारे में इतनी छोटी सोच क्यों?

मुखिया : देवी माँ! मेरे पास धन–दौलत की कमी नहीं। मुझे तो बेटा ही चाहिए, मेरा कुल दीपक। अब आप ही मुझ पर कृपा कीजिए और इस चिंता का निवारण कीजिए।

देवी माँ : ठीक है मुखिया जी, मैं तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार कर लेती हूँ। अगर तुम्हें बेटियाँ बोझ लगती हैं तो मैं तुम्हारी दोनों बेटियों को अपने साथ देवलोक ले जाऊँगी और बदले में तुम्हें पुत्र प्राप्त होने का वरदान दूँगी। कल आप अपनी दोनों बेटियों को लेकर मंदिर में आ जाना।

(देवी माँ यह कह कर अंतर्ध्यान हो गईं। मुखिया जी की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा और उन्होंने खुशी–खुशी यह बात पूरे गाँव में फेला डाली)

दूसरा दृश्य

(सुबह का समय)

एक ग्रामीण : सुनो! गाँव वालों! तुमने कुछ सुना? भई अपने मुखिया जी की तो किस्मत ही खुल गई है। देवी माँ उनकी बेटियों को देवलोक ले जा रही हैं और बदले में उन्हें एक बेटा भी दे रही हैं।

दूसरा : यह तो बड़ा अच्छा हुआ। मुखिया जी के सिर का तो बहुत बड़ा बोझ हल्का हो गया। ना शादी का चक्कर, ना दान–दहेज और ना ही इज्जत–आबरू का डर।

ग्रामीण महिला : यह तो सोने पर सुहागा हो गया। चलो! चलो! हम भी देवी माँ के पास चलते हैं और प्रार्थना करते हैं कि वे हम पर भी कृपा करें। हमारी बेटियों को भी अपने साथ ले जाएँ।

(पूरे गाँव के लोग मंदिर के पास एकत्र हो जाते हैं। सभी अपनी–अपनी बेटियों को भी साथ ले जाते हैं। पूरे दिन देवी माँ को प्रसन्न करने के लिए भजन गाते रहते हैं और प्रार्थना करते हैं)

एक व्यक्ति : हे देवी माँ! हम पर कृपा करो, हमारी बेटियों को भी अपने साथ ले जाओ ताकि हम भी अमन–चैन से रह सकें।

दूसरा : और माँ हमारे गाँव को यह वरदान दो कि अब से इस गाँव में लड़के ही पैदा हों।

(तभी देवी माँ प्रकट होती है और वह गाँव वालों को बहुत समझाने का प्रयत्न करती है लेकिन गाँव वाले उनकी बात मानने को तैयार नहीं होते। हारकर वे उनकी सारी बेटियों को अपने साथ देवलोक ले जाती हैं। गाँव वाले खूब जश्न मनाते हैं)

गाना : खुशियों की आई है बहार, बधाई होवे
सिर का तो हल्का हुआ भार, बधाई होवे
हर घर में पैदा होंगे लाल, बधाई होवे
देवी माँ की बोलो जयकार, बधाई होवे।

तीसरा दृश्य

(कुछ सालों बाद.....गाँव की सारी खुशियों को जंग लग गया। विवाह–शादी होना बंद हो गया। सूने–सूने खेत–खलिहान, बदरंग घर–आँगन। ना चूड़ियों की खनखन ना पायलों की छमछम, बीमार और उदास लोग अपनी बेबसी और मूर्खता पर पछताने लगे)

एक व्यक्ति : हाय! मुझे तो कोई पानी पिलाने वाला भी नहीं है।

दूसरा : मेरे घर में तो कई दिनों से चूल्हा भी नहीं जला है।

तीसरा : मेरी तो जमीन भी बँजर हो गई। ना समय पर खाना मिलता है और ना ही खेतों में काम कर पाते हैं।

चौथा : चलो! चलो सब मिलकर देवी माँ की शरण में चलते हैं और अपनी गलती की माफी माँगते हैं।

(सभी रोते–रोते देवी माँ को पुकारते हैं)

एक व्यक्ति : हे देवी माँ! हमारी बेटियाँ हमें लौटा दो। हम अज्ञानी अब समझ गए हैं कि जीवन में रंगों का संसार बेटा और बेटी दोनों से आता है। माँ! हम पर दया करो।

(देवी माँ वहाँ आकर उनकी बात मान लेती हैं और उन्हें समझाती है कि सृष्टि के सृजन के लिए लड़की और लड़का दोनों समान महत्वपूर्ण रखते हैं।)

देवी माँ : अज्ञानियों! ये लो अपने घर की शोभा और मेरी बात ध्यान से सुनो! अगर बेटा हीरा है तो बेटी मोती से कम भी नहीं है। अगर बेटा दीपक है तो बेटी ज्योति से कम भी नहीं है। आज बेटियाँ भी संस्कारी बन, पढ़ लिखकर अपने देश, गाँव तथा समाज का नाम रौशन कर रही हैं। दहेज दानव तो तुमने ही पैदा किया है और तुम्हें ही मिलकर इसे मार भगाना होगा ताकि बेटियों को बोझ नहीं उपहार समझा जाए।

अब मैं आज के परिवेश का उदाहरण देती हूँ : अगर कल्पना चावला और सुनीता विलियम को गला घोंटकर गर्भ में ही मार दिया जाता तो अंतरिक्ष में जाकर देश का नाम कौन चमकाता? इसलिए भ्रूण हत्या बंद करो। अपनी बेटियों को संसार में आने दो। उन्हें पढ़ा लिखाकर संस्कारी बनाओ ताकि ये घर की शोभा जग की शोभा बन सकें।

सभी गाँव वाले : हाँ–हाँ देवी माँ, अब यह बात हमारी समझ में अच्छी तरह से आ गई कि :–

''यही है वक्त की पुकार, शिक्षित बेटी, स्वस्थ समाज का आधार।''

● **संतोष यादव**
वंदना इंटरनेशनल स्कूल,
सैक्टर–10, द्वारका, नई दिल्ली–75

संकल्प

सूत्रधार : पर्यावरण का अर्थ जानते हो? परि–आवरण अर्थात् चारों ओर से ढका हुआ। आज हम जिस वातावरण में जी रहे हैं, वह पूरी तरह से प्रदूषित हो चुका है। दिन–प्रतिदिन पर्यावरण के प्रदूषित होने की समस्या बढ़ती जा रही है। यह समस्या सारे विश्व के सामने विकराल रूप धारण करती जा रही है। जीवन की कैसी विडंबना है कि जिस प्रकृति ने हमें शुद्ध जल, वायु, हरी–भरी धरती, शुद्ध पर्यावरण प्रदान किया, उसे हमने अपने भौतिक सुख–साधनों की प्राप्ति के लिए दूषित कर दिया। आज इस समस्या ने संसार के समस्त प्राणियों के स्वास्थ्य के आगे प्रश्न चिन्ह लगा दिया है।

रवि : मोहन यह पर्यावरण की समस्या उत्पन्न कैसे होती है?

मोहन : जब चारों ओर का वातवरण दूषित होने लगता है, तब यह समस्या उत्पन्न होती है।

प्रकाश : रवि! प्रदूषण क्या होता है?

रवि : इसका अर्थ है वातावरण का दूषित होना।

प्रकाश : यह वातावरण कैसे दूषित होता है।

मोहन : जब हम वायु, जल, भूमि आदि को दूषित करते हैं, तभी यह समस्या उत्पन्न होती है। इन प्रदूषणों का प्रकोप हम मनुष्यों के जीवन पर ही अधिक पड़ा है।

(ये सभी एक ग्रामीण इलाके में जाते हैं जहाँ लोग इस समस्या के प्रति जागरूक ही नहीं है।
गाँव में प्रवेश करते ही देखते हैं कि एक व्यक्ति तालाब में अपनी भैंस को नहला रहा है)

रवि : सूरज! तुम क्या कर रहे हो?

सूरज : आज बहुत गर्मी है, सोचा अपनी भैंस को नहला दूँ।

रवि : लेकिन तुम नदी में क्यों नहला रहे हो। क्या तुम्हें नहीं पता कि पानी गंदा हो जाएगा।

सूरज : पानी तो लगातार बहता रहता है, उसमें गंदगी कहाँ रुकेगी।

प्रकाश : यही तो तुम्हें मालूम नहीं है। हम लोगों को ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए जिससे पानी गंदा हो जाए अर्थात् जल प्रदूषित हो जाए।

मोहन : आज हम लोग एक मैडम को लेकर आए हैं जो तुम सब गाँववासियों को इस समस्या के प्रति जागरूक करवाएंगी। तुम सब गाँववासियों को लेकर बरगद के पेड़ के नीचे आ जाओ।

सूरज : मैं सभी को बताता हूँ, हम सब अवश्य आएँगे।

(सभी गाँववासी एकत्रित होकर चले जाते हैं)

मैडम : गाँववासियों। आज मैं आप लोगों को इस पर्यावरण की समस्या के विषय में कुछ जानकारी देना चाहती हूँ।

ग्रामीण : मैडम, यह पर्यावरण दूषित कैसे होता है?

मैडम : आसपास के वातावरण के दूषित होने से ही यह समस्या उत्पन्न होती है।

दूसरा ग्रामीण : वातावरण किस प्रकार दूषित होता है?

मैडम : जल, वायु, भूमि को गंदा करने से।

तीसरा ग्रामीण : जल प्रदूषण क्या है?

मैडम : जल प्रदूषण का अर्थ है 'पानी का गंदा होना'। यह समस्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

अन्य ग्रामीण : वह कैसे?

मैडम : हम लोग नदी, तालाबों में नहाते हैं, कपड़े धोते हैं, जानवरों को नहलाते हैं, इसके अतिरिक्त कूड़ा–कचरा नदी–नालों में बहा देते हैं।

इससे जल प्रदूषित हो जाता है।

ग्रामीण 4 : मैडम! क्या प्रदूषित जल से हम लोगों को कोई हानि होती है?
मैडम : हाँ, प्रदूषित जल पीने से तरह–तरह के रोग हो जाते हैं।
ग्रामीण 5 : वायु कैसे प्रदूषित होती है?
मैडम : इसका कारण है बढ़ता औद्योगीकरण। कारखानों में सड़कों पर चलने वाले वाहनों के धुएँ ने सारे वातावरण को विषाक्त बना दिया है।
ग्रामीण 6 : बढ़ती जनसंख्या भी तो इसका कारण है?
मैडम : हाँ, क्योंकि हमारे रहने के लिए वनों को काटा जा रहा है।
ग्रामीण 7 : मैडम! इसे दूर करने के क्या उपाय हैं?
मैडम : कारखानों को कहीं दूर खुले स्थान पर लगाना चाहिए। पर्यावरण की रक्षा के लिए अधिक से अधिक वृक्ष लगाने चाहिए।
मोहन : मैडम! इन्हें भूमि–प्रदूषण के विषय में भी बताइए।
मैडम : हाँ–हाँ, क्यों नहीं। भूमि प्रदूषण आज के युग की देन है। उपज बढ़ाने के लिए लोग ज़मीन में अनेक रासायनिक खादों का प्रयोग करते हैं। इनके प्रयोग से अनाज, सब्जियाँ–दालें सभी कुछ प्रदूषित होता है। इनको खाने से उदर सम्बन्धी रोग विकसित होते हैं।
ग्रामीण : ध्वनि प्रदूषण के बारे में भी बताइए।
मैडम : अत्यधिक ध्वनि हमारे जीवन को तनावयुक्त बना देती है।
ग्रामीण : वह कैसे!
मैडम : इससे श्रवण शक्ति पर प्रभाव पड़ता है। रक्तचाप जैसी बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं।
रवि : तब तो इन सभी पर प्रतिबंध लगना चाहिए।
मैडम : बिल्कुल, ये सभी प्रकार के प्रदूषण पर्यावरण के लिए खतरा बने हुए हैं।
ग्रामीण : फिर तो हमें अपने पर्यावरण को बचाने के समुचित उपाय खोजने होंगे।
मैडम : हाँ, उपाय तो करने ही पड़ेंगे।
प्रकाश : प्रदूषण की समस्या को सुलझाकर ही पर्यावरण को सुरक्षित रखा जा सकता है। कई गाँववासी यदि समय रहते इन समस्याओं पर नियंत्रण नहीं रखेंगे तो सारा संसार हाहाकार करने लगेगा।
अन्य ग्रामीण : और भी उपाय बताइए, मैडम।
मैडम : वन रोपण तथा वृक्ष लगाने से यह समस्या कम हो सकती है। हमें जनसंख्या वृद्धि पर अंकुश लगाना होगा। रासायनिक पदार्थों का उपयोग कम से कम करना होगा। शोर मचाने वाले वाहनों पर नियंत्रण रखना होगा। अपना जीवन सुखमय बनाने के लिए यह सब करना आवश्यक है।
सभी ग्रामीण : हाँ मैडम, हमें आपकी बात अच्छी तरह से समझ में आ गई। आज हम लोग यह संकल्प लेते हैं कि हम पर्यावरण को गंदा होने से बचाएंगे।
मैडम : बहुत अच्छा। यदि इसी तरह संसार के सभी लोग संकल्प लेंगे, तभी इस समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है। आइए आज हम सब यह नारा लगाएँ –

प्रदूषण को दूर भगाएंगे,
इस संसार को स्वर्ग बनाएंगे।
पर्यावरण को सुरक्षित बनाएंगे,

● **शमा अरोड़ा**
अमरावती विद्यालय,
पंचकूला, हरियाणा

जानवर भी दोस्त हैं

पात्र–परिचय

व्यक्ति : मोहन
रीता : मोहन की बेटी
शीला देवी : मोहन की माँ

(यह कहानी एक व्यक्ति मोहन पर आधारित है जिसको अपने घर में रखे जानवरों से बहुत प्यार है, जिसका नतीजा निकलता है कि एक दिन वह खुद जानवर बन कर एक जानवर को मार डालता है)

पहला दृश्य

(मोहन अपने घर के आँगन में अपने पालतू जानवरों को प्यार से सहला रहा है)
मोहन : (कुत्ते को) अरे! तुम तो बड़े हो रहे हो। अरे वाह! तुम ने सारा खाना खा लिया।
मोहन : (बिल्ली को) आज तो नहाने के बाद तुम चमक उठी हो।
(इतनी देर में मोहन की बेटी रीता वहां आ जाती है)
रीता : पिता जी, मैं रोज़र (कुत्ता) के साथ थोड़ी देर खेल सकती हूँ।
मोहन : हाँ...हाँ बेटी, अवश्य खेलो।
रीता : पिता जी, यहां कुछ अच्छा नहीं लगा रहा। क्या मैं रोज़र को अपने साथ बाहर पार्क में ले जाऊँ।
मोहन : अरे नहीं बेटा। तुम अभी बहुत छोटी हो। तुम इसे बाहर मत ले कर जाओ। तुम इसे संभाल नहीं पाओगी।
रीता : नहीं पिता जी, मैं इसे संभाल लूंगी। आप चिंता मत कीजिये।
मोहन : ठीक है। लेकिन तुम अपने साथ रामू काका को ले जाना और ध्यान रखना कि यह दूसरे कुत्तों के पास न जाये।
रीता : ठीक है पिता जी।
(इस तरह रीता रोज़र को बाहर घुमाने के लिए ले जाती है। इसी तरह बहुत दिन निकल जाते हैं।
एक दिन मोहन को किसी आवश्यक काम से शहर जाना पड़ता है।)
मोहन : (शीला देवी से) माँ आप को कुछ सामान चाहिये? मैं आज शहर जा रहा हूँ।
शीला देवी : हां बेटा! ये दो–तीन चीज़ें खत्म हो चुकी हैं। ज़रा ये ला देना। और मुर्गियों का दाना भी खत्म हो चुका है, वो भी ले आना।
मोहन : ठीक है मां।
मोहन : (रीता से) बेटा, मैं शहर जा रहा हूँ। तुम अपना और दादी का ध्यान रखना। और मुर्गियों और बाकी जानवरों को खाना वक्त पर दे देना।
रीता : जी पिता जी। आप चिंता न करें।
(मोहन शहर की तरफ चल पड़ता है। रीता बहुत खुश होती है)
रीता : (खुद से) मज़ा आ गया। आज तो मैं अपने जानवरों के साथ बहुत मज़ा करूँगी। मैं अपने सभी दोस्तों को बुलाऊँगी। फिर हम सब मिलकर इन जानवरों से खूब मस्ती करेंगे।
(तभी रीता अपने दोस्तों को फोन मिलाने चल पड़ती है)
शीला देवी : रीता बेटा! इन जानवरों का ख़्याल रखना और इन्हें अकेले में खुला मत छोड़ना। मैं रसोई में काम करने जा रही हूँ।
रीता : जी दादी माँ। आप चिन्ता न करें।

दूसरा दृश्य

(थोड़ी ही देर में रीता के सभी दोस्त आ जाते हैं। सब मिलकर जानवरों के साथ खेलना शुरू कर देते है।)
रीता : (दोस्तों से) मैं इन मुर्गियों को इनके घर से बाहर निकाल लेती हूँ, फिर हम इनके साथ खेलेंगे।
दोस्त : हाँ, हाँ ठीक हैं।
रीता : (मुर्गियों से) चलो–चलो, सभी बाहर आओ।
(सभी मुर्गियां बाहर आ जाती हैं। सभी बच्चे उन के साथ खेलना शुरू कर देते हैं लेकिन कुछ देर के बाद बच्चे अंदर चले जाते हैं। वे बाहर का दरवाजा भी बंद करना भूल जाते हैं। इतने में एक आवारा कुत्ता घर में दाखिल होता है और वह मुर्गियों को देख कर खुश हो जाता है।
आवारा कुत्ता : (खुद से) आज तो मज़ा आ गया। आज तो मुझे भरपेट खाना मिलेगा।
(वह एक बार में ही दो मुर्गियों को मार गिराता है और उन्हें खा जाता है। बाकी सभी मुर्गियां शोर मचाने लगती हैं और इधर–उधर दौड़ने लगती हैं। इतने में मुर्गियों का शोर सुनकर रीता और शीला देवी दौड़ कर बाहर आती हैं। वह आवारा कुत्ता रीता को देख दौड़ जाता है)
रीता : (रोते हुए) दादी! वो कुत्ता हमारी दो मुर्गियों को खा गया।
शीला देवी : मैंने तुमसे इनका ध्यान रखने के लिए कहा था ना!
रीता : माफ़ करना दादी। गलती हो गई।
शीला देवी : चलो कोई बात नहीं। तुम रोना बंद कर दो।

तीसरा दृश्य

(शाम को मोहन शहर से घर वापिस आता है। रीता ओर उसकी दादी एक ही कमरे में बैठे हैं।)
मोहन : माँ! मैं घर आ गया।
शीला देवी : अच्छा बेटा। सफर कैसा रहा?
मोहन : ठीक था मां।
मोहन : (रीता की तरफ देखते हुए) इसे क्या हुआ? यह इतनी चुपचाप क्यों बैठी है?
शीला देवी : कुछ नहीं बेटा! आज इससे एक गलती हो गई।
मोहन : क्या किया इसने?
शीला देवी : बताती हूँ। लेकिन तुम इसे कुछ मत कहना।
मोहन : आप बताओ तो।
शीला देवी : आज इस से गलती से बाहर का दरवाजा खुला रह गया। बाहर से एक आवारा कुत्ता आया और दो मुर्गियों खा गया।
मोहन : क्या? कौन सा कुत्ता?
रीता : वह काले रंग का कुत्ता जो गली के कोने में रहता है।
मोहन : (गुस्से में) मैं..... उसे नहीं छोड़ूँगा।
(यह कहता हुआ मोहन बाहर निकल जाता है। वह गली के कोने में जाता है। कुत्ता वहां पर सो रहा होता है। मोहन पत्थर उठाता है और उस कुत्ते पर वार करता है। कुत्ता वहीं पर मर जाता है। थोड़ी देर बार मोहन घर वापिस आता है।
शीला देवी : आखिर तुम उस कुत्ते को मार ही आये ना!
मोहन : हां माँ। मैंने उसे मार दिया।
शीला देवी : क्या मिला तुम्हें उसे मार कर?
मोहन : उसने मेरी मुर्गियां खा ली थी मां।

शीला देवी : बेटा वह एक कुत्ता था। वह एक जानवर था। उसे कुछ भी समझ नहीं थी। उसे सिर्फ अपनी भूख मिटानी थी। भूख मिटाने के लिए उसे जो मिला, उसने खा लिया।

मोहन : लेकिन मां उसे कुछ तो सोचना चाहिये था।

शीला देवी : अरे बेटा! अगर वह कुछ सोचने के काबिल होता तो क्या वह जानवर कहलाता? भगवान ने सोचने और समझने की क्षमता सिर्फ इंसान को दी है। अगर हम भी जानवरों की तरह व्यवहार करने लगेंगे तो हम में और जानवरों में क्या अंतर जायेगा। तुमने आज उस कुत्ते को मार कर बहुत घृणित काम किया है। तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिये था।

मोहन : (निराशा से) मुझ से गलती हो गई मां। आज के बाद मैं कभी भी किसी जानवर को क्षति नहीं पहुचाऊँगा। मैं सभी जानवरों से बराबर प्यार करूँगा।

● **परमिंदर कौर**
अकाल अकादमी, बलवेड़ा
जिला : पटियाला, पंजाब

फासले

रघु दूर खड़ा–खड़ा सब कुछ सुन रहा था। फिर उसने देखा देर हो रही है और वह स्कूल के लिए निकल पड़ा। माँ कपड़े धोने लगी और रोशनी चुपचाप कमरे की सफाई करने लगी। वह समझ गई इससे ज्यादा कुछ कहा तो डांट पड़ सकती है।

पात्र–परिचय

रघु – बड़ा भाई
रोशनी – बहन
अनुज – छोटा भाई
माँ एवं बापू
अध्यापिका
रामू काका – नौकर
मास्टर जी

पहला दृश्य

मां : रोशनी जल्दी कर। भाई को स्कूल जाने में देर हो रही है।
रोशनी : मां बस दो मिनट।
(थोड़ी देर में रोशनी एक डिब्बा ले कर आती है)
रोशनी : लो भाई खाना तैयार है। (रघु डिब्बा ले लेता है)
माँ : अरे सुन रोशनी जरा अनुज को भी उठा। आज पिताजी स्कूल में उसका दाखिला कराने जाएंगे।
रोशनी : माँ, भैया के स्कूल में मैंने कुछ लड़कियों को जाते देखा था।
माँ : अरे वो तो पड़ोस के गाँव की होंगी। हमारे यहाँ तो कोई छोरी स्कूल नहीं जाती। लेकिन तू ने कब देखा उन्हें।
रोशनी : माँ, वो तो मैं बापू को खेत में खाना देने गई थी तो देखा। माँ, मेरा भी दाखिला करा दो।
माँ : नाक कटवाएगी हमारी। पास–पड़ोसी क्या कहेंगे और वैसे भी हम ऊँची जात के हैं। यदि नीची जात के किसी ने कुछ बोल दिया तो बापू कभी बर्दाश्त नहीं करेंगे।
रोशनी : माँ हम ऊंची जात के हैं तो हमारी मर्जी चलनी चाहिए ना।
माँ : समाज की चलती है। जैसा आपपास का माहौल हो, वैसा ही करना चाहिए। और हमने कौन सी तुझसे नौकरी करवानी है।
रोशनी : माँ, लेकिन मेरा भी मन करता है भैया कि तरह पढ़ूं–लिखूं। आखिर बुराई क्या है? (रोशनी जिदद् करती है)
(रघु दूर खड़ा–खड़ा सब कुछ सुन रहा था। फिर उसने देखा देर हो रही है और वह स्कूल के लिए निकल पड़ा। माँ कपड़े धोने लगी और रोशनी चुपचाप कमरे की सफाई करने लगी। वह समझ गई इससे ज्यादा कुछ कहा तो डांट पड़ सकती है। रघु रास्ते में सोचता जा रहा था कि क्या बुराई है यदि रोशनी भी पढ़ने जाए पर मा–बापू को कौन समझाए। वह ग्यारहवीं में पढ़ता था और रोशनी उससे पांच साल छोटी थी। वह कभी–कभी खाली वक्त में उसे पढ़ाता था। आज स्कूल में एक नई अध्यापिका आई। वह अंग्रेजी पढ़ाती थी)

दूसरा दृश्य

अध्यापिका : पाठ ग्यारह निकालो। ओपन लेसन इलेवन।

(जब अध्यापिका पढ़ा रही थी तो रघु सोच रहा था क्या उसकी बहन रोशनी भी इस तरह बन सकती है। तभी रघु ने फैसला कर लिया वह अपनी बहन को पढ़ा कर ही रहेगा। शाम को बापू घर आए)

माँ : देखो ज़रा पूरे दिन इस लड़की ने कोई काम ढंग से नहीं किया है। सिर्फ एक ही रट लगा रखी है मुझे स्कूल भेज दो न।

बापू : दिमाग खराब हो गया है इसका। इसे पता नहीं ज्यादा पढ़ने वाली लड़कियों का ब्याह करना कितना मुश्किल होता है। हमारे समाज में तो ज्यादा पढ़ाना ही गलत है। पांचवीं तक पढ़ा दिया बस, अब घर का कामकाज सीख और ससुराल जा कर हमारा नाम रोशन कर।

(तभी रघु का प्रवेश होता है। वह समझ जाता है फिर कोई बात रोशनी की पढ़ाई को लेकर हुई है। लेकिन आज वह चुप नहीं रहेगा। उसने कुछ निश्चय किया है।

रघु : लेकिन बापू नाम तो रोशनी पढ़ लिख कर भी कर सकती है। आज ही हमारे स्कूल में एक अध्यापिका आई है। कल हो सकता है हमारी रोशनी भी अपने पैरों पर इसी तरह खड़ी हो जाए।

बापू : राम–राम! हम लड़की की कमाई खाएं।

रघु : आपको खाने को कौन कह रहा है। लेकिन आगे यही पढ़ाई–लिखाई जीवन में उसकी मदद कर सकती है।

माँ : लड़कियों का गहना घर का कामकाज होता है जैसे सिलाई, बुनाई, कढ़ाई आदि। लेकिन पढ़ लिख कर तो और दिमाग खराब होता है।

रघु : दिमाग खराब नहीं, खुलता है। वह अपना अच्छा–बुरा समझ पाएगी।

बापू : कौन करेगा हमारे समाज में ज्यादा पढ़ी–लिखी लड़की से शादी। ज्यादा पढ़ी–लिखी लड़की को लोग ज्यादा चालाक और तेज समझते हैं।

माँ : और पहले पढ़ाई में खर्चा करो फिर दहेज़ जुटाने में, फिर भी पीछा नहीं छूटता।

बापू : इस बारे में कल बात होगी, चलो अपना काम करो।

(बच्चे अपने कमरे में चले जाते हैं)

माँ : आज रामू खेत पर नहीं गया क्या?

बापू : अरे कहां। ये नीची जाति वाले नीची जाति के लोग होते हैं। कभी कोई बहाना तो कभी कोई। कहता है बीमारी हो गई है उसे। खांसी रुकती ही नहीं। नाटक करता है।

माँ : तो दवा ले ले।

बापू : उसी के लिए तो पैसे मांग रहा था। मैंने कहा एक हफ्ते से काम पर नहीं आया, कैसे पैसे?

(रघु यह सब सुन रहा था बापू बोलते ही इतना तेज थे। पता नहीं उसे यह सब अच्छा नहीं लगा सुनने में। वह रामू को जानता था। बहुत मेहनती है। क्या फर्क पड़ जाता यदि बापू उसकी मदद कर देते।

अगले दिन सुबह रघु जब स्कूल जा रहा था वो रास्ते में उसने देखा रामू गड्ढे में गिरा हुआ था। कीचड़ में सना था। रघु को रामू ने देखा। रघु का मन हुआ उसे बाहर निकाल दे। वहां आपपास उसे कोई न दिखा और यदि वह अंदर घुसा तो बापू को पता चल जाएगा। बापू तो बर्दाशत कर ही नहीं सकते अपने से छोटी जाति के लोगों से बात करना। लेकिन आज रघु ने कुछ ठाना हुआ था। रामू बार–बार उठने की कोशिश कर रहा था लेकिन कमज़ोरी के कारण फिर फिसल जाता।

रघु : रामू काका अपना हाथ दो। रामू काका कुछ सकुचाए, फिर उन्होंने अपना हाथ उसे दे दिया।

तीसरा दृश्य

(रघु उन्हें बाहर निकाल कर पाठशाला की तरफ चल दिया। आज कविता का प्रोग्राम था। रघु ने सोचा आज ज़रा हर आदमी के मन को हिलाया जाए। मंच पर जब रघु का नम्बर आया तो उसने कहा–

यूँ ही चलते–चलते
सड़क पर टहलते–टहलते
नज़र पड़ी उस गरीब पर
जिसका कोई न था, न था घर
सड़क पर लेटा था बेचारा
नहीं था अब उसका बच पाना
ज्वर से पीड़ित था वो
जेब में पैसे नहीं थे दो।
थक चुका था, भीख मांगकर
मिली थी तो सिर्फ गाली और कूड़ा करकट
कुछ खाया नहीं था दो दिनों से
पड़ा था पीड़ित दर्द से
मन किया था कि जाऊँ उसके पास
कराऊँ उसका इलाज
पर जाने क्यों कुछ रोक रहा था।
थोड़ा सा संकोच हो रहा था।
और जाने क्या सोच कर
बढ़ा दिया हाथ उसकी ओर
चल दिया मैं फिर मुड़के
यूँ ही चलते–चलते
सड़क पर टहलते–टहलते।

(जोरदार तालियाँ बजीं) तभी मास्टर जी मंच पर आए और रघु को पुरस्कार देकर कहा कि तुम्हारी कविता केवल अच्छी ही नहीं, अपितु समाज़ को सीख देने वाली भी थी।

फिर मास्टर जी ने उसकी पीठ ठोकी। रघु अपनी नई अध्यापिका के पास गया और उन्हें अपनी बहन रोशनी की बात बताई। अध्यापिका ने असका साथ देने का वादा किया। साथ ही यह भी कहा कि हमारे देश में अमन कायम हो जाए यदि सभी यह बात मान ले।

अध्यापिका :

गैर भी हो जाएंगे अपने तुम्हारे
एक पल शिकवों का एहसास मिटा के तो देखें
तसव्वुर देगा यह एहसास जिन्दगी भर
एक पल हमारी तरफ मुस्कुरा कर तो देखें।
मुस्कुराहटें लाती हैं असीम खुशियाँ
अपनी कायनात को रोशन करती है दुनिया
औरों के आंगन में दीये जला के तो देखें
एक ऐसी दिवाली मना के तो देखें।
अपनी इनायतों से महरूम रख हमें भी

जिंदगी के हसीन पल लाते हैं लब पे हँसी,
औरों को हंसीं जिन्दगी दिला के तो देखें,
एक ऐसा पल बिता के तो देखें।
एहसान मानते हैं उसके रहमोकरम का
हर कदम पर पाते हैं उसकी दुआ
औरों पर दुआ बरसा के तो देखें।
एक ऐसा जीवन बिता के तो देखें। चंदन और तुलसी की खुशबू लिए तुम
फिदा कर दो अपने विकारों की महफिल,
गर दुआ पर कोई बन्दिश नहीं
बढ़ते फासलों को मिटा के तो देखें,
एक ऐसा सपना सजा के तो देखें।
अपना कर के देखो जमाना तुम्हारा
इबादत करें तो खुदा ही सहारा, खुद को उजालों में ला के तो देखें,
सच को कभी अपना के तो देखें,
एक ऐसा दिन बिता के तो देखें।

अध्यापिका : रघु मुझे खुशी है कि तुम अपनी बहन का साथ देना चाहते हो। मैं तुम्हारे घर चलूंगी।

(शाम को अध्यापिका रघु के घर उसके साथ आ गई। बापू आंगन में लेटे थे। रोशनी मां का हाथ बंटा रही थी)

रघु : बापू, मां, अध्यापिका जी आपसे मिलने आई हैं।

माँ : आइये–आइये, बैठिए। कैसा पढ़ रहा है रघु?

बापू : अजी कोई शैतानी करे तो पिटाई कीजिए।

अध्यापिका : जी नहीं, बहुत अच्छा बच्चा है।

माँ : रोशनी ज़रा चाय तो लाओ।

(रोशनी चाय लेकर आती है)

अध्यापिका : और ये कौन सी कक्षा में है?

माँ : जी पांचवीं तक पढ़ ली बहुत है। अब तो घर का कामकाज संभालना सीख रही है। क्या करेगी और पढ़कर।

अध्यापिका : माँ होकर आप ऐसा करेंगी तो कौन उसकी मदद करेगा। जमाने को दिखा दो लड़कियाँ भी आगे बढ़ रही हैं,
लड़कों के साथ कदम से कदम मिला कर चल रही हैं। अब वे अभिशाप नहीं हैं
पिछले जन्म का पाप नहीं हैं,
हर क्षेत्र में नाम रोशन कर रही हैं
दूसरों से अच्छा काम कर रही हैं
पढ़ लिखकर आत्म–निर्भर बन रही हैं
आजकल तो वे चाँद पर पहुँच रही हैं।
अपनी सफलता का प्रमाण दे रही हैं।
सिर उठाकर चल रही हैं,
देश को भी चला रही हैं।
देश का गौरव बढ़ा रही हैं।
लड़कियाँ कुछ कर दिखा रही हैं। जमाना भी इस बात को मान रहा है
तब भी जमाना क्यों उन्हें ठुकरा रहा है

क्यों उन्हें न अपना रहा है?
जमाना क्यों ऐसा कर दिखा रहा है? जमाने को उन्हें अपनाना पड़ेगा
अब उन्हें घर में ना छुपाना पड़ेगा
क्योंकि अब वे आगे बढ़ रही हैं
देश का नाम रोशन कर रही हैं।

बापू : आप ठीक कह रही हैं। बेटा रोशनी तू भी जा पढ़ने।

(माँ भी अपने आँसू पोंछती है)

अध्यापिका : हमारे देश में सदियों से चले आ रहे रीति –रिवाज आज भी लोगों के दिमाग में बसे हुए हैं। भारत ने अब तक बहुत तरक्की की है, छोटे खण्डहरों की जगह बड़ी–बड़ी इमारतें हैं, लोग चिट्ठी की जगह ई–मेल करते हैं, सड़कों पर तरह–तरह की गाड़ियां देखी जा सकती हैं पर लोगों की सोच में जरा सा भी परिवर्तन नहीं आया। वे अभी भी समाज के उन रीति–रिवाजों को मानते हैं। लड़के–लड़कियों में भेदभाव, दहेज लेन–देन की परम्परा, अमीर–गबीर लोगों के बीच में कभी न पटने वाली खाई, हमारे समाज के इन अंधविश्वासों की सबसे बड़ी शिकार हुई है नारी जाति। अगर लड़की के घर मुँह माँगा सामान दहेज के रूप में प्राप्त नहीं हो तो ससुराल वाले उसका जीना दुलर्भ कर देते हैं। मगर हम में से किसी के मन में यह प्रश्न नहीं उठता कि क्यों न लड़कियों को पढ़ा–लिखाकर पैसे कमाने योग्य बनाया जाए। जिस दिन हम लोगों की सोच बदलेगी, उस दिन हमारे देश में सब एक समान होंगे।

(रोशनी खुश हो जाती है। बापू उसे गले लगाते हैं। रघु का सपना सच हो जाता है)

(पर्दा गिरता है)

● **सीमा कौशिक**
विद्या भारती स्कूल,
सूर्यनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

अनोखी शपथ

शहर की एक घटना। अलग–अलग धर्म के लड़के व लड़की में छेड़छाड़। जो भी सजा देनी चाहिये थी लड़के को पर लड़की के भाई व उसके दोस्तों ने मामले का रुख ही बदल दिया। जो बात एक लड़के की नासमझी या मनचले स्वभाव के कारण शुरू हुई थी, उसने साम्प्रदायिक दंगे का रूप ले लिया। देखते ही देखते सारा शहर इस दंगे की चपेट में आ गया। ऐसे में एक ऐसे घर का दृश्य जहाँ शादी की रस्में निभाई जा रही थीं, उस घर की बड़ी बेटी की दूसरे दिन शादी थी। उसके पिता का ब्रेन का ऑपरेशन पंद्रह दिन पूर्व ही हुआ था। ऐसे में शादी का सारा भार माँ और बेटी के कंधों पर ही था।

पहला दृश्य

(मामेरे की रस्म की तैयारियाँ चल रही थीं। महाराज रसोई बना रहे थे)

महाराज (शांतिदेवी से) : बाई सा, आपके कहे अनुसार मैंने पांच सौ लोगों का भोजन तैयार कर दिया है।

शांतिदेवी : बहुत अच्छा। बस सब मेहमान आते ही होंगे। जल्दी से पहले भोजन निपटा लेंगे, फिर मामेरे की रस्म शुरू करेंगे।

(एक लड़का चमन 14–15 साल का बाहर से घबराता हुआ आता है।)

चमन : माँ–माँ अब कोई नहीं आएगा।

शांतिदेवी : क्या बकवास कर रहा है?

चमन : मैं सच कह रहा हूँ माँ। आपको पता नहीं पूरे शहर में कर्फ्यू लगा हुआ है। कल की घटना को लेकर दंगे–फसाद हो रहे थे तो कमिश्नर ने कर्फ्यू लगा दिया।

शांतिदेवी : क्या! हे भगवान! अब क्या होगा?

(लड़की को तैयार करके उसकी सहेलियाँ लाती हैं)

लड़की की सहेली : देखो आंटी ममता कैसी लग रही है।

शांतिदेवी : (उदास और परेशानी से) हाँ अच्छी लग रही है..... पर अब क्या होगा?

ममता : क्या होगा? मतलब? क्या हुआ?

शांतिदेवी : कुछ नहीं तू जा, (घबराई हुई) सब ठीक हो जाएगा; भगवान सब ठीक करेंगे।

ममता : पर हुआ क्या माँ, कुछ तो बताओ, आप इतनी घबराई हुई क्यों हैं!

चमन : दीदी शहर में कर्फ्यू लग गया है।

ममता : क्या?

चमन : हाँ! अब हमने मामेरे के भोज के लिये जिनको आंमत्रित किया था, वे मेहमान नहीं आ पाएंगे। पांच सौ लोगों की रसोई बेकार हो जाएगी।

मौसी : देखो शांति, अब जो हो गया सो हो गया। इस तरह उदास बैठने व परेशान होने से कोई लाभ नहीं। अब उठो और मामेरे की रस्म पूरी करो। (सब भारी मन से उठते हैं और रस्में पूरी करते हैं)

दूसरा दृश्य

(शाम को महिला संगीत की रस्म का समय)

मामा : चलो भई सारी उदासी छोड़ो ओर अब धर्मशाला चलने की तैयारी करो। कर्फ्यू में छूट हो गई है, महिला संगीत के लिये लोग आते ही होंगे। धर्मशाला के डेकोरेशन की व्यवस्था भी देखनी है।

शांतिदेवी : हाँ ममता तैयार हो जाओ, बेटा अपने को चलना है।

(फोन की घंटी बजती है। शांतिदेवी फोन उठाती है। फोन बेटी के ससुराल से उसके ससुर का आता है)

शांतिदेवी : हैलो !

रामप्रसादजी : नमस्कार समधनजी! देखिये हमने यह कहने के लिये फोन किया है कि आप के शहर के जो हालात हैं, उन्हें देखते हुए हमारे यहाँ से कोई भी बारात लाने के पक्ष में नहीं है।

शांतिदेवी : क्या! आप ये क्या कह रहे हैं?

रामप्रसादजी : देखिये घबराये नहीं, जो आपके यहाँ कि स्थिति बन रही है, उन हालातों में हम बारात नहीं ला सकते। आप ऐसा करें कि चार लोगों के साथ लड़की को लेकर उज्जैन आ जाएं तो हम भी चार लोगों के साथ आ जाते हैं। बस जरूरी रस्में निपटा कर शादी निपटा देंगे।

शांतिदेवी : पर यहाँ की व्यवस्था! यहाँ का भोजन। हमने ढाई–तीन हजार लोगों के भोजन की तैयारियाँ कर रखी हैं। हमारे यहाँ पूरा मुम्बई, अहमदाबाद व दूर–दूर से शादी के लिये मेहमान आ चुके हैं। उन सबके अरमानों का क्या होगा? फिर यहाँ के हालात तो सम्हल चुके हैं। सब कुछ शांत है।

रामप्रसादजी : अरे कहाँ शांत हैं। आप के मौहल्ले में शांति होगी पर सारा शहर तो हिंसा की आग में धू–धू करके जल रहा है। टी. वी. पर आपने नहीं देखा क्या? जरा अपना टी. वी. खोलकर समाचार तो देखिए। मैं घंटे भर बाद आपको फोन करता हूँ, तब तक आप सोच लें।

लड़की की बूआ : (शांतिदेवी से) क्या कह रहे थे? बारात नहीं लाएंगे। मैं तो पहले ही कहती थी कि वहाँ रिश्ता मत करो। अच्छा–भला लड़का दिखाया था पर मेरी कौन सुनता है। भुगतो अब!

बूआ का बेटा : माँ आप चुप रहो, यहाँ तो सब पहले ही परेशान हैं। चमन जरा टीवी वीवी तो ऑन करना।

चमन : हाँ भईया (टी. वी. चालू करता है, हर न्यूज चैनल पर दंगों के दृश्य दिखाई दे रहे हैं। देखकर सब डर गए।

शांतिदेवी : हे भगवान! यह क्या हो रहा है। इतनी हिंसा! अब क्या होगा?

बूआ का बेटा : पर मामी आप ध्यान से देखिए, यह तो सुबह की घटना के दृश्य हैं। अभी तो 8–10 घंटे से कर्फ्यू लगा हुआ है और चारों ओर शांति है।

मामाजी : ये मीडिया वाले भी किसी बात को बढ़ाने बैठते हैं तो राई का पूरा पर्वत ही खड़ा कर देते हैं।

बूआ का बेटा : बेटा (जो भोपाल में पुलिस विभाग में ही काम करता है) मामी जी से अभी फोन लगाकर पता करता हूँ।

''हाँ, हैलो–पुलिस हेड कवार्टर। हाँ, देखिये, मैं पुलिस विभाग से ही हूँ। क्या आप मुझे शहर की ताजा स्थिति की जानकारी देंगे। असल में बात यह है कि .....(और वह फोन पर अपनी बहन की शादी व बारात आ पाने की पूरी स्थिति के बारे में जानकारी देता हैं। (फिर अपनी मामी से) ''मामीजी, आप बिल्कुल चिंता ना करें और लड़के वालों को फोन लगाएं कि हमारी पुलिस महकमे से बात हो गई है। वह हमें पुलिस सुरक्षा प्रदान करेंगे। दो कांस्टेबल उनकी गाड़ी में बैठकर आएंगे व सुरक्षित रूप से बारात को मण्डप तक ले आएंगे।

(शांति देवी फोन पर लड़के वालों से बात कर उन्हें बड़ी मुश्किल से विश्वास में लेते हुए बारात लाने के लिए राजी करती हैं। फोन की घंटी फिर बजती है)

ममता : हैलो।

(दूसरी तरफ से) देखिए धर्मशाला में कोई डेकोरेशन नहीं हो पाएगा और ना ही डीजे लग पाएगा क्योंकि कर्फ्यू के कारण हमारे सारे कर्मचारी फँस चुके हैं।

ममता : (फोन रखकर) कुछ सोचती है, सहसा उसे राजेश की याद आती है तो कि उसका धर्म–भाई है और उसकी पहचान नेता लोगों से है। ''राजेश को फोन लगा तो जरा, चमन । राखी के दिन तो बड़े–बड़े वादे कर रहा था कि दीदी आपकी शादी में मैं यह करूँगा, अब तो मुँह भी नहीं दिखा रहा । उसकी बहुत लोगों से पहचान है। अब वही कुछ इन्तजाम कर पाएगा।''

चमन : राजेश का तो आप नाम ही न लें। आपको नहीं मालूम यह सब किया धरा उसका है। उसकी नासमझी के कारण ही तो इतना बड़ा फसाद हुआ है।
ममता : क्या! (कुछ सोचकर) फिर तो उसे जरूर बुलाना पड़ेगा। आखिर उसे पता तो चले कि उसके कारण दूसरे किस मुसीबत का सामना कर रहे हैं।

तीसरा दृश्य

(बच्चों का शोर : बारात आ गई बारात आ गई, सभी स्वागत के लिये बाहर जाते हैं।)
मामाजी : (रामप्रसादजी से) अरे आप तो 150 लोग आने वाले थे, ये तो बस 15–20 ही हैं।
रामप्रसाद : क्या करें साहब! पहले तो लोग आने के लिये आतुर थे पर यहाँ भी खबरें सुनने के बाद तो कोई भी तैयार नहीं हुआ। बस घर–घर के ही लोग आए हैं।
(सबको अन्दर लाते हैं)
ममता : आओ राजेश, अपनी बहन की शादी के जश्न में तुमने जो रंग भरे हैं, उन्हें नहीं देखोगे?
राजेश : सॉरी दीदी।
ममता : अरे नहीं भईया। सॉरी काहे का। पहले शादी की बर्बादी का सारा नजारा तो देख लो।
राजेश : दीदी मैं चमन से पहले ही सब कुछ सुन चुका हूँ। आप मुझे और शर्मिन्दा ना करें। मुझे नहीं पता था कि ऊँची पहुँचवाले लोगों से सहायता लेने पर वे बात को रुख ही बदल देंगे और स्थिति इतनी बिगड़ जाएगी। दीदी मुझे माफ कर दो। (वह ममता के पैंरो में गिर जाता है)

चौथा दृश्य

(पंडितजी फेरे करवा रहे हैं)
पंडितजी : अब वर और वधु कसमें खांएगे जिसे पहले मैं बोलूँगा फिर आप दोहराएंगे।
राजेश : ठहरिए पंडितजी, इन कसमों से पहले मैं और मेरे साथी एक कसम खाना चाहते हैं। अपने आप से और पूरे समाज से एक वादा करना चाहते हैं।
पंडितजी : पर.....
ममता : नहीं पंडितजी, इनको पहले कसम खा लेने दें। ये ज्यादा जरूरी हैं पूरे समाज व राष्ट्र के लिए।
(राजेश व उसके साथियों का सम्मिलित स्वर) : हम कसम खाते हैं कि आज के बाद कभी भी हिंसात्मक कार्यवाही का हिस्सा नहीं बनेंगे। हम जीवन में कभी भी तोड़फोड़ नहीं करेंगे। हमारे कारण आप सभी को व पूरे शहरवासियों को जो परेशानी हुई है, उसके लिये हम सभी से क्षमा चाहते हैं।
(सभी लोग बच्चों को शाबाशी देते हैं। दूसरे मेहमान भी उनका अनुसरण करके यही शपथ उठाते हैं। हँसी–खुशी के माहौल में विवाह सम्पन्न होता है।

(पर्दा गिरता है)

● **ज्योति सिहोटा**
तुसली बाल विद्या मंदिर हाईस्कूल,
पेटलावद, मध्यप्रदेश

प्रकृति–पुरुष

पात्र–परिचय

मिस्टर फुनसुक बैरी
रोहन
रोहन की माँ
दादा जी
प्रकृति पुरुष
छोटा बच्चा और साथी

(प्रकृति और हम–कभी दोनों के बीच गहरी दोस्ती हुआ करती थी। पर देखते ही देखते, इस दोस्ती के एक पक्ष ने यानि हमने लालच का रुख ले लिया। दोस्ती के नाम पर शोषण करना शुरू कर दिया। उदार प्रकृति मौन रही लेकिन हमारे गद्दार कर्म कम नहीं हुए, बल्कि दिन दुगुने रात चौगुने, होते गए। प्रस्तुत नाटिका, काव्य शैली में प्रकृति के विरुद्ध हमारे इन्हीं गलत व्यवहारों को दर्शा रही है। प्रकृति को तहस–नहस कर देने वाली हमारी भ्रष्ट सोच का रोचक ढंग से खुलासा कर रही है)

पहला दृश्य

कुकडु कूँ.....कुकडु कूँ
मिलिए इनसे
ये है मिस्टर फुनसुक बैरी
कार से है इनकी दोस्ती घनी गहरी।
दाँतों की चमक का नहीं है इन्हें कोई गम,
मगर भैय्या गाड़ी की शाईन नहीं होनी चाहिए कम!
नल पानी का बिंदास खोले,
पर बंद करने के कौन ले झमेले!
दरवाज़े, शीशे, टायर और बोनट,
सब तसल्ली से धुलने चाहिएँ–ईच एटलीस्ट इस मिनट!
इतने में काँव–काँव करता एक कौवा आया
अरे उसकी मज़ाल तो देखो,
उसने फुनसुक जी की जान से भी प्यारी गाड़ी
पर बीट को गिराया!
बैरी जी को गुस्सा आया,
(दाँत पीसकर बोले....)
छी...छी....छी कौवे के बच्चे,
तूने मेरी गाड़ी को शौचालय बना दिया,
मेरा भी नाम बैरी नहीं अगर पाइप
मार–मार के इसे न छुड़ा दिया।
हम म....म....म लो जी, हो गई बैरी दी फैरी चकाचक!
पर मिस्टर फुनसुक, अब तू पानी वेस्टेज का मजा भी चख!

(मिस्टर बैरी के विवेकहीन पानी के इस्तेमाल ने टंकी का सारा पानी बहा दिया। एम. सी. डी. के नलों में तो वैसे ही पानी का टोटा रहता है। मतलब कि बैरी जी के घर में पानी की सारी सप्लाई हो गई खत्म)
इतने में, बैरी का बेटा ब्रश करता हुआ आया।
उसने टेढ़ा सा मुँह बनाया, बोला–
''डैडी–डैडी, पानी चला गया....
स्कूल जाने का टाईम हो रहा है,
मैंने अभी तक ब्रश भी नहीं किया.....''
(मिस्टर बैरी अपने हाथ में पकड़े सूखे पाइप को ताकते रह गये.....)

दूसरा दृश्य

(रोहन की मम्मी किचन में काम करते–करते अपने बेटे को आवाज़ लगाती है...) :
रोहन.....बेटा रोहन....जरा दुकान से ले तो आना थोड़ा....सा बेसन!
रोहन : क्या मम्मी! तुम भी न, ऐन टाइम पर बताती हो,
लाओ अब गाड़ी की चाबी दो।
जो दुकान से बेसन मँगवाती हो।
माँ : अरे, चार कदम पर ही तो दुकान है,
पैदल जाकर लाना भी कितना आसान है।
रोहन : मॉम, कब तक यह कंजूसी दिखाओगी!
पैट्रोल का पैसा बचा–बचा के क्या महल बनाओगी!
माँ : बेटे, पैसे के साथ पैट्रोल भी तो बचाना है,
क्या तुम्हें मालूम नहीं आजकल फ्यूल शार्टेज का जमाना है।
रोहन : (कार की चाबी उठाकर, स्टाइल से उसे घुमाते हुए....
कैसी शोर्टेज मेरी मैय्या,
द होल थिंग इज़ दैट कि भैय्या, सबसे बड़ा रुपय्या!
माँ : (रोहन के गाल को हल्का–सा खींचते हुए) जिस दिन खत्म हो जाँएगे फ्यूल मेरे रौनी, तब काम न आएगी तेरी सिंगल पैनी(पैसा)
रोहन : जब होंगे रिज़र्व्स खत्म, तो सोचूँगा,
पर अभी तो मैं मनमर्ज़ी करूँगा....बिंदास जिऊँगा!
(रोहन ने कार स्टार्ट की और गाड़ी लेकर चला गया इधर, माँ सिर पर हाथ रखे खड़ी रह गई.....)

तीसरा दृश्य

(रोहन के दादा जी परेशान से बैठे थे! खाँसते हुए और अपने माथे से पसीना पोंछते हुए बड़बड़ाने लगे.....)
सत्यानाश हो जाए इन सबका! जहाँ जाओ वहाँ पौल्यूशन! क्या है किसी के पास कोई जवाब या कोई सौल्यूशन?
न हरियाली है, न बारिश! चारों और बस धुआँ इसका धुआँ.....उसका धुआँ.....। उफ! इन धुओं ने मिलकर कर दिया है, मेरे दिमाग का धुआँ.... (इतने में दादा जी का लाड़ला पोता चिड़चिड़ा सा अपने कमरे से बाहर आया।
रोहन : हाय! हाय! हाय! कितनी गर्मी कर रखी है,

बॉडी जैंसे चिमनी पर रखी है। उबल गया रे, उबल गया..
बिना आँच के जल गया... मोमबत्ती–सा पिघल गया। (टेबल पर रखे अखबार की तरफ इशारा करते हुए)
(हूँ! जब देखो ग्लोबल वार्मिंग, ग्लोबल वार्मिंग, ग्लोबल वार्मिंग चिल्लाते हैं)
पता नहीं क्यूं ये ए. सी, कूलर, फ्रिज कम करवाते हैं।
अब आप ही बताओ, ठंडा पानी न पीएँ,
तो ऐसी गर्मी में कैसे जीएँ! मैं तो चलाऊँगा...
ये लो, ये लो, ये लो, ...सारे बटन दबाऊँगा।
(तभी दादा जी को कोई बाहर से बुलाता है।)
बाऊजी, बाऊजी.....ज़रा बाहर तो आना।
यही वो पेड़ हैं न जिसे था कटवाना।
दादा जी : हाँ–हाँ, रुको ज़रा आता हूँ!
वहीं आकर ठीक से समझाता हूँ। (पर तभी पीछे से आवाज़ आई..)
अरे अरे भाई साहब, रुकिए ज़रा! जाने से पहले ये लाइट् पंखे कौन बंद करेगा?
दादा जी : (गुस्से से) अबे चुप कर! बिल क्या तेरी जेब से जाता है।
तू कौन होता है जो मुझपर अपनी धौंस जमाता है।
(ऐसा कहकर दादा जी चल दिए पेड़ कटवाने...)

चौथा दृश्य

(तभी जोर से बिजली कड़कने की आवाज़ आई। तेज आँधी के बीच से प्रकृति–पुरुष प्रकट हुए...)
प्रकृति–पुरुष : बस बहुत हुआ बहुत हुआ।
इस विनाश का, इस प्रकोप का ये कैसा बीज़ बो दिया!
इंसान और प्रकृति का संतुलन क्यों खो दिया! (सभी किरदारों की ओर उंगली उठाते हए)
हाँ.....तुम। तुम सब इसके जिम्मेदार हो।
आने वाली पीढ़ी के, अपने ही बच्चों के कर्जदार हो।
तुम धो सकते थे गाड़ी को एक बाल्टी पानी से भी!
पैदल जा सकते थे दो कदम बेसन लाने को भी।
हो सकती है कार पूलिंग फ्यूल बचाने के लिए।
बच सकती है तो बिजली आने वाले जमाने के लिए।
हरियाली क्या होती है, कैसी होती है बारिश,
ये तो तुम आने वाले कल को समझा ही नहीं पाओगे।
पूछेंगे जब वो कि पार्क दिखते थे कैसे, कैसे बहते थे झरने,
तब तुम शर्म से गर्दन उठा नहीं पाओगे।
क्या दे पाओगे जवाब कोई,
जब अल्ट्रा वॉयलेट किरणों से भयंकर रोग उन्हें लगेंगे।
क्या कर पाओगे उनकी मदद
क्या है तुम्हारे नोटों में इतनी ताकत
कि वो पानी की कमी को दूर कर सकें! ज़मीं पर हरियाली और हवा को ऑक्सीजन
की नमी से भरपूर कर सकें.....
इस भूल का हज़ार्ना तुम कभी नहीं भर सकते!!
(एक छोटा–सा बच्चा अपने नन्हें साथियों के साथ प्रकृति–पुरुष का हाथ थामकर अपनी उजली सोच को मासूम शब्दों में पिरोकर कहता है)

हे प्रकृति पुरुष! तुम गुस्सा मत करो।
इतनी कड़वी बातें करके हमें शर्मिंदा न करो।
मैं और मेरे दोस्त पानी को कम बहाएँगे,
जरूरत के हिसाब से ही नल चलाएँगे।
पंखा, लाइट, कूलर का सही से करेंगे उपयोग
फ्यूल की खपत कम करके मिटाएँगे चर्म रोग।
पेड़ों को देंगे कटने नहीं, साथ ही और पेड़ भी लगाएँगे।
छोटी–छोटी बातों को ध्यान रखकर, धरती को पौल्यूशन फ्री बनाएँगे।
हम सब करते हैं तुमसे आज पक्का वायदा यही,
अब से रिसोर्स का (फ्यूल, बिजली, पानी इत्यादि) वेस्टेज–कभी नहीं! कभी नहीं!

● **मीना वर्मा,**
बाल भवन पब्लिक स्कूल,
ए–ब्लॉक, स्वास्थ्य विहार, दिल्ली

जैसा करनी वैसी भरनी

पहला दृश्य

(एक शराबी नाली में औंधे मुँह पड़ा है। उसका मुंह कुत्ता चाट रहा है। उसका साथी उसे उठाकर उसके कपड़े फाड़ता है। शराबी का नाम मोहन और उसके साथी का नाम सोहन है)

सोहन : शर्म करो मोहन, गंदी नाली में पड़े हो और कुत्ता तुम्हारा मुँह चाट रहा है, छिः।

(उठाता है)

सोहन : अबे जा, जा, मैं मजे में पड़ा था, सारा मजा किरकिरा कर दिया।

सोहन : देखो, तुम्हारे सब कपड़े गंदगी में सन गए हैं।

मोहन : (शराब पीता हुआ) सब ठीक है।

सोहन : (बोतल छीन कर) बस, अब यह जहर मत पिओ।

मोहन : अरे यार, लो पियो तुम जरा सी। तुम्हें मेरी कसम।

सोहन : दूर हटो, तुम्हारे मुँह से बदबू आ रही है।

मोहन : अबे जा, बड़ा आया बदबू का बच्चा, मुझे क्या नशे में समझा है।

सोहन : बस फेंक दो इसे, मैं तुम्हें नहीं पीने दूंगा।

मोहन : अबे अपनी पीते हैं, किसी के बाप की नहीं पीते। हम पिएंगे–फिर पिएंगे।

सोहन : इस आदत को छोड़ दो। तुम्हारी सारी जमीन बिक गई, बैल नीलाम हो गए, हार वाली के गहने बेच कर खा गए। अब तो शरम करो।

मोहन : अबे शर्म के बच्चे, हम लाखों में पिएंगे (पीता है–बोतल खाली देखकर) अफसोस! खाली हो गई।

सोहन : (अफसोस) तुम्हारी बर्बादी तुम्हारे सिर पर नाच रही है।

दूसरा दृश्य

(बदलू आता है। मिरजई, धोती, सिर पर दुपट्टा)

बदलू : वाह यार, रंग है जरा सी हम को भी चखाओ। क्या कहें, जीभ सूख गई, जरा सी तरी हो जाए।

मोहन : सब खत्म। एक बूंद भी नहीं। साले कलाल ने पानी मिलाकर दी। आज उसका सिर फोड़ूंगा मैं।

बदलू : यह तो बुरी सुनाई यार। कुछ गांठ–पल्ले हो तो निकालो। आज तो रंग गहरा आना चाहिए।

मोहन : (जेब टटोल कर) फूटी कौड़ी भी नहीं रही। साला कलाल उधार भी नहीं देता।

बदलू : तो फिर क्या है, खेत बेच दो। बैल तो बिक ही गए। अब जुताई तो होगी ही नहीं।

मोहन : झगड़ू साह से पचास रुपया मांगा तो कहने लगा, 'घर रेहन रख दो।' कमीना कहीं का।

बदलू : अभी तो यार, बीवी के पास एक–दो जेवर होंगे?

मोहन : खूब याद दिलाई, एक हमेल है, एक जोड़ी कड़े अभी लाता हूँ।

बदलू : बहार का दिन है यार, बदली छाई है।

मोहन : अभी कलाल भी बैठा होगा।

बदलू : तो जल्दी करो यारो गला सूख रहा है।

मोहन : फिकर न करो। अभी चला, जाता हूँ।

बदलू : खूब उल्लू बनाया इसे। (पीछे–पीछे जाता है)

तीसरा दृश्य

मोहन और जानकी बच्चे राजू और बतासो। (मोहन लड़खड़ाते पैरों से आता है)

बच्चे : (राजू और बतासो) बापू आए–बापू आए।
(लिपटते हैं)

मोहन : (धकेलकर) दूर–दूर बदमाश!

जानकी : आज फिर पी आए। आग लगे इस नशे में।

मोहन : पीते हैं तो अपनी पीते हैं, तेरा क्या पीते हैं सुसरी!

जानकी : हुए–हुए जबान को लगाम ही नही?

मोहन : मेरे मुँह न लगना.....भला!

जानकी : चलो चुप रहो। हाथ–मुँह धोकर खाना खा लो।

मोहन : क्यों चुप रहूँ? तेरे बाप का कुछ खाया है?

जानकी : देखो, माँ–बाप तक न जाना। हाँ।

मोहन : तो ला, दे दे वह हमेल। साला उधार नहीं देता।

जानकी : घर–बार, जमीन, बैल बेच कर तो जहर पी गए। सब गहने भी उतार लिए। अब नहीं दूंगी।

मोहन : दे दे जल्दी कर।

जानकी : नहीं दूंगी।

मोहन : नहीं देगी।

जानकी : नहीं, नहीं, नहीं।

मोहन : जल्दी दे, बदलू बाहर खड़ा है।

जानकी : मर जाय वह मुआ शराबी।

मोहन : गाली देती है? मार डालूंगा।

जानकी : मार डाल मुँए, पर हमेल न दूंगी।

मोहन : तो ले.....

(मारता है। जानकी बेहाश हो जाती है। चूल्हे से घर में आग लग जाती है। बच्चे रोते हैं। मोहन गहने उतार कर भाग जाता है)

चौथा दृश्य

(कलालर की दुकान पर दोनों शराब पी रहे हैं)

मोहन : पी यार और पी।

बदलू : मजा है मजा।

बदलू : हमेल के दस रुपये दिए साले ने। जाने घर का क्या होगा।
(सोहन आता है)

सोहन : मोहन, तुम्हारे घर में आग लग गई। तुम्हारी औरत जल मरी। बच्चे रो रहे हैं।

मोहन : अच्छा हुआ। घर साला टपकता था, औरत रोती थी। (पीता है)

बदलू : बड़ी खैर हुई, हमेल और कड़े बच गए वरना ये भी जल–भुन जाते, मेरी सलाह काम कर गई।

मोहन : मान गया तेरी खोपड़ी को, ले पी।

सोहन : अरे शर्म करो, घर में आग लगी है। औरत जल मरी और तुम पिये जा रहे हो।

मोहन : तो किसी साले की क्या पीते हैं। अपनी पीते हैं।

बदलू : तुम भी पिओ। इस वक्त हाथ खुला है।

मोहन : बेशक, इस वक्त हम धन्ना सेठ हैं। क्यों भई बदलू (जेब खनखनाता है)

पाँचवा दृश्य

(जेल की कोठरी में बन्द है मोहन)

मोहन : हाय, आज मेरी आँख खुली। घर–बार बाल–बच्चे सब चौपट हुए। इस शराब के पीछे सब लुट गया। अब जेल मेरी तकदीर में लिखी थी।

संतरी : चुप रहो, रोना–धोना किया तो डंडा मारूंगा तान कर।

मोहन : हाय! आज मुझे अपना सोने का घर याद आ रहा है। मेरे फूल से बच्चे, सुशीला औरत और हल, बैल, खेत, सब कुछ था। सब इस शराब ने लूट लिया।

संतरी :तो चलो, अब पत्थर फोड़ो, नहीं तो डंडा पड़ेगा।

मोहन : अच्छा भई, जरा सुस्ता लेने दे। हाय! वे बेईमान शराबी भी किनारा कर गए।

संतरी : जैसे करनी वैसी भरनी। अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।

मोहन : बेचारी औरत कितनी नेक थी। आखिर जल मरी।

संतरी : तब नहीं सोचा?

मोहन : नहीं सोचा संतरी जी! अब बच्चे जाने कहाँ भीख मांगते होंगे?
(सिर पकड़ कर रोता है।)

(पर्दा गिरता है)

● **अविनाश कुमार मिश्रा**
विद्या भारती स्कूल,
सूर्यनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

कसम

पात्र–परिचय

पॉलीथिन थैली
कागज थैली
कपड़ा थैला

स्थान : सैक्टर–10, 11 का चौराहा, पंचकूला। (सन् 2009 के दिसम्बर के माह की 21 तारीख, समय रात के 10 बजे। चौराहे पर वाद–विवाद। सभी आयु वर्ग के नागरिक खड़े हैं)

पॉलीथिन थैली : अरि बहन! आज तो तुम बहुत दिनों बाद मिली हो। आओ आनन्द से पंचकूला, चण्डीगढ़ जैसे खूबसूरत शहर का भ्रमण करें और इस सुहावने मौसम का आनंद लें। दिनभर तो मुझे काम से फुर्सत नहीं मिलती, देखो न आज मैं सीधी दिल्ली से पानीपत, करनाल, अम्बाला होते हुए थोड़ी देर पहले ही आयी हूँ। तुम क्यों दुःखी दिखाई दे रही हो बहिन?

कागज थैली : (दुःखी मन से) नहीं, मैं दुःखी नहीं हूँ लेकिन लगता है तुम्हें अपने छूट से लोगों ने मुझसे मुख भी मोड़ लिया है। तुमने यहाँ आकर मुझसे सौतन जैसा व्यवहार किया है। मुझे मेरे घर से अलग करने की कोशिश में लगी हो।

पॉलीथिन थैली : क्या तुमने मुझे सौतन की संज्ञा दी है? तुम मेरी सौतन कैसे हो सकती हो? मेरे सामने तुम्हारी औकात ही क्या है? कहाँ मैं महलों की रानी, कहाँ तू गलियों की दासी?

कागज थैली : जब तेरी नीयत और करतूत के बारे में लोगों की भली–भाँति मालूम हो जायेगा तो तुझे घरों से धक्के मारकर निकालेंगे।

पॉलीथिन थैली : भविष्य में चाहे कुछ भी हो लेकिन वर्तमान में बच्चों, आदमी और बूढ़ों में मेरी पकड़ बहुत अच्छी है। आजकल मैं उनके जीवन का अभिन्न अंग बन गयी हूँ। मेरे आते ही लोग तुझे भूल गये तथा तेरे भाई कपड़े के थैले को लोग घर में रखना पसन्द ही नहीं करते हैं। जल्द ही तुम्हारे भाई और तुम्हारा नामोनिशान मिटाकर रहूँगी। मेरा ही इस देश पर एकछत्र राज्य होगा।

(भीड़ के सामने अपनी और अपनी बहिन की बेइज्जती सुनकर कपड़े के थैले को गुस्सा आ जाता है।)

कपड़ा थैला : (क्रोधित स्वर में) ओ विदेशी औरत! जरा जुबान सम्भाल कर बोल। हमारे यहाँ के लोग नेक दिल हैं तथा 'अतिथि देवो भवः' को ध्यान में रखकर अतिथियों का सम्मान एवं सत्कार करते हैं। इसी मर्यादा में रहकर यहाँ के लोगों ने तुझे सम्मान सहित घर में जगह क्या दे दी, तो अपने ''मुँह मियाँ मिठ्ठू'' बन रही है। तू खूब जानती है कि यहाँ के लोग प्यार इतने दिलों–जान से करते हैं कि विदेशी लोगों की कम्पनियाँ अपने देश में लगाकर खुद उनके गुलाम हो जाते हैं। लेकिन जब उनकी असलियत का पता चलता है तो यहाँ के लोगों के गुस्से के आगे विदेशी लोगों को अपनी जान बचाकर नौ दो ग्यारह होना ही पड़ता है। इसके लिए हमारा इतिहास साक्षी है।

पॉलीथिन थैली : (भीगी बिल्ली बनकर) भाई साहब! बेकार में आप तो इतना आग बबूला हो रहे हैं। मैं तो अपनी बहन से यों ही मजाक कर रही थी।

कागज थैली : चुप रहो, तुम तो गिरगिट की तरह रंग बदल रही हो। अभी तो स्वयं को महलों की रानी बता रही थी, लेकिन भाई साहब के आते ही बात बदलने लगी। (भाई की और इशारा करते हुए) मैंने किसी विद्वान को कहते हुए सुना है कि ''सुनो साथियों! ये एक ऐसा प्रदूषण है जो धीरे–धीरे यहाँ के वातावरण, जमीन आदि सभी को प्रदूषित कर रहा है।'' क्या यह सच है? विस्तारपूर्वक हकीकत समझाने की कृपा करें।

कपड़ा थैला : सुन बहिन! ये इतनी मनहूस औरत है कि पैदा होने के बाद कभी मरती नहीं, यदि इसको मारने की कोशिश करें तो ये मरत–मरते इतना जहर उगलती है कि आने वाले समय में मानव जीवन काफी कष्टदायक हो सकता है।

कागज थैली : अरे भैया! ये आप क्या कर रहे हैं, हमने तो उद्दीपन पुनीत, भुवनेश भैयाओं को पॉलीथिन में जलेबी व समोसे लाते हुए देखा और बड़ी सावधानीपूर्वक पॉलीथिन को भैंस के गोबर में दबा दिया था। अब तो उनकी खाद भी बन गयी होगी।

कपड़ा थैला : बहिन! आप गलत सोच रही हो कि उस पॉलीथिन की खाद बन गयी होगी। ये ऐसी दुष्ट है न तो सड़ती है और न ही गलती है। यह खेत में पहुँचकर खेत की फसल की पैदावर को कम करती है।

कागज थैली : यह फसल की पैदावार कम करती है, यह बात समझ में नहीं आई। कृपया इसे विस्तारपूर्वक समझाइये।

कपड़ा थैला : सुनो! जब यह पॉलीथिन सड़ेगी या गलेगी नहीं तो यह खेत में वैसी ही पड़ी रहेगी। जब किसान खेत में बीज बोयेगा। तब जितने दाने पॉलीथिन पर पड़ेंगे, उनको जमीन से पानी व खनिज लवण प्राप्त नहीं होगा और पानी व खनिज लवण के अभाव में उन सभी बीजों का अंकुरण नहीं होगा, तब उस स्थान पर फसल की पैदावार नहीं होगी।

कागज थैली : तब तो पॉलीथिन को नालियों में डालना हितकर रहेगा।

कपड़ा थैला : तुम्हारी जैसी छोटी मानसिकता वाले लोगों ने तो चौक, बाजार और कॉलोनियों के लोगों की नाक में दम कर दिया है। पॉलीथिन नालियों में फंस जाती है तथा नालियों का गन्दा पानी सड़क पर बरसात के पानी की तरह बहता है।

कागज थैली : तब तो पॉलीथिन को जलाना उचित होगा।

कपड़ा थैला : यह विचार भी तुम्हारा ठीक नहीं, क्योंकि पॉलीथिन के जलाने से बहुत ही विषैली गैस निकलती है, जो पर्यावरण को प्रदूषित करके बीमारियों का नया जहर पैदा करती है जिसके कारण लोगों के लिए शुद्ध हवा का होना मुश्किल हो सकता है।

कागज थैली : अरे! यह तो बहुत विचारणीय प्रश्न है। इसकी कहानी सुनकर मेरा दिल कांपने लगता है। भैया यह जहर कैसे समाप्त होगा?

कपड़ा थैला : बहिन! हिम्मत से काम लो, जब हमारे यहाँ के बच्चे, नौजवान, बूढ़े आदि सभी पॉलीथिन का प्रयोग बन्द कर देंगे, उसी दिन यह जहर हमारे यहाँ से अपने आप चला जायेगा।

(पॉलीथिन थैली इतना सुनकर अपना मुँह लटकाकर पतली गली से खिसक जाती है। कागज थैली और कपड़ा थैला वहाँ खड़े सभी लोगों को पॉलीथिन का प्रयोग न करने की कसम खिलाकर चले जाते हैं)

● **पायल जैन**
अमरावती विद्यालय,
अमरावती एन्क्लेव, पंचकूला, हरियाणा

पर्यावरण की पुकार

यह नाटक एक सामाजिक समस्या पर आधारित है। जैसा कि आप सबको विदित है कि प्रदूषण आज के युग की ज्वलंत समस्या है–प्रदूषण का अर्थ है दूषित होना और पर्यावरण प्रदूषण का अर्थ है वातावरण का प्राकृतिक संतुलन बिगड़ जाना और वातावरण का दूषित होना जिसके कारण हमें नित नई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। पशु–पक्षियों की प्रजातियाँ विलुप्त होती जा रही हैं। वायु, ध्वनि, जल–प्रदूषण से संसार में भयानक बीमारियाँ बढ़ती ही जा रही हैं। आज हम एक नाटक द्वारा आपको इन्हीं समस्याओं से अवगत् करवाना चाहते हैं। गद्ययात्मक शैली पर आधरित नाटक तो आपने बहुत देखे होंगे पर आज जो हम नाटक आपके सामने प्रस्तुत करने जा रहे हैं, वह पद्यत्यात्मक शैली पर आधारित है। जिसका शीर्षक है–''पर्यावरण की पुकार''

प्रतिहारी : महाराज की जय हो
महाराज कुछ फरियादी है
मृत्युलोक से आए हैं, नहीं किसी ने सुना धरा पर,
पीड़ा कहने आए हैं।

महाराज : पेश करो जल्दी से उनको
कष्ट सुनेंगे, न्याय करेंगे।

(प्रतिहारी जाता है और फरियादी आता है।)

महाराज : बोलो–बोलो जल्दी बोलो क्या है कष्ट तुम्हारा किसने लूटा,
किसने मारा, किसने तुम्हें सताया?

जल : महाराज मैं जल हूँ, मानव मुझे को सता रहा है
मेरा तन मैला कर डाला।
मुझे को गंदा कर डाला,
मेरी गंगा तक मैली सब कुछ मुझ में डाल रहे हैं, कूड़ा–करकट और गन्दगी मुझ को रोगयुक्त कर डाला,
हरने लगे हैं मेरे प्राण
मुझे बचाओ–बचाओ।

महाराज : जाओ तुम निश्चिंत रहो, हम न्याय करेंगे
चिंतित न हो हम न्याय करेंगे। कष्ट सुनेंगे, पीड़ा हरेंगे न्याय करेंगे।

(जल जाता है)

महाराज : (प्रतिहारी से) और कौन फरियादी है, शीघ्र सामने लाओ
कष्ट सुनेंगे, पीड़ा हरेंगे न्याय करेंगे।

(वृक्ष आता है)

वृक्ष : महाराज में प्रतिनिधि हूँ सारे पेड़ जगत का
हम सब कटते रोज़ धरा पर
मानव के अति लालच का कोई अंत नहीं है
अपने सुख–साधन की खातिर हमको
नष्ट किया जाता है
दूषित वायु हम लेते हैं, प्राणवायु इसे देते हैं
मानव को समझाओं भगवन

हम तो उसके सेवक भगवन
हमें बचाओ, हमें बचाओ।
वर्षा पानी लाते हैं हम
छाया का सुख देते उसको
हम पेड़ों के नीचे, सदा पथिक करते आराम
हम किसी को दुःख न देते
आते सभी के काम
लेकिन वह तो काट रहा है वायु प्रदूषण बढ़ा रहा है
नहीं बचाया हमें प्रभु तो,
मिट जाएगी दुनिया सारी
मानव को समझाओ भगवन, हम तो उसके सेवक भगवन
हमें बचाओ, हमें बचाओ।

महाराज : जाओ तुम निश्चिंत रहो, हम न्याय करेंगे
चितिंत न हो, हम न्याय करेंगे। प्रतिहारी, और कौन फरियादी है, शीघ्र सामने लाओ।

(वायु आता है)

वायु : मेरा कार्य श्वास है देना,
जीवन मुझ पर है आधारित
फिर भी अपने वाहन यंत्रों से
मिलों–मशीनों, कारखानों से
छोड़–छोड़ कर गैस विषैली
मेरी ओजोन पर्त को पतला कर डाला है,
छेद कर दिया उसमें इसने और विनाश को बुला रहा है,
अब सम्मेलन, मीटिंग करता,
नहीं समझता है अब भी
मुझे बचाओ, मुझे बचाओ।

महाराज : जाओ तुम निश्चित रहो, हम न्याय करेंगे
चितिंत न हो, हम न्याय करेंगे। प्रतिहारी और कौन फरियादी है,
शीघ्र सामने लाओ। कष्ट सुनेंगे, न्याय करेंगे।

(शेर आता है)

शेर : मैं जंगल के सभी प्राणियों का प्रतिनिधि हूँ
सही संतुलन कायम करके हम सब मिल जुल कर
लेकिन मानव मिटा चुका है कई जातितां
हम पशुओं की, पक्षी जगत की
हम जंगल के हैं
रखवाले, हम पर ही वह जुल्म कर रहा
अपने स्वाद–शौक की खातिर
हमको ही वह नष्ट कर रहा
हमें बचाओ–हमें बचाओ।

महाराज : जाओ तुम निश्चिंत रहो, हम न्याय करेंगे
चिंतित न हो, हम न्याय करेंगे। प्रतिहारी और कौन फरियादी है, शीघ्र सामने लाओ।

धरती : मैं हूँ धरती माता भगवन!

मेरा पुत्र मुझको ही सता रहा है,
मेरा जंगल काट रहा है
वायु दूषित कर डाली है
मेरे खनिज़ खत्म कर डाले
जनसंख्या के बोझ तले मैं दबती जाती
यही दुःख है मेरा भारी,
मेरे बेटे को समझाओ, उसे ज्ञान दो ऐसा भगवन
शुद्ध रहे सब पर्यावरण।

महाराज : (प्रतिहारी से) शीघ्र बुलाओ, मृत्युलोक से मानव को पेश करो जल्दी से उसको।

(प्रतिहारी मानव को लाता है)

महाराज : सब फरियादी यहीं बुलाओ
(क्रोध से) रे मूढ़ मनुज
वृक्ष, वायु, जल, पशु–पक्षी
सब है तेरी सेवा में तत्पर
और तू उन्हें ही पीड़ित करता,
मैला करता, शोर मचाता
और तू उन्हें ही पीड़ित करता
ऐसा ही करता जाएगा, तो तू कैसे जी पाएगा?
इतना भी तू नहीं समझता
कैसा तेरा ज्ञान बावले
कैसा ये विज्ञान बावले
अब भी चेत रे मानव
धरती माँ की सेवा कर ले
जीवन को तू सुख से जी ले
गंदा जल, दूषित वायु का सेवन करके
पराबैंगनी किरणों से तू
झुलस–झुलस कर मर जाएगा
धरा धँसेगी, प्रलय मचेगी
तू बिन मौत मारा जाएगा
भूल मान ले, पश्चाताप् कर ले
जी ले, खुद भी और दूसरों को जीने दे।

मानव : मेरी आँखें आज खुली हैं
मुझको मेरी गलती का अहसास हुआ है
मेरे इन मित्रों को अब मैं, गले लगाकर प्यार करूँगा
धरती माँ की सेवा करके
अपना जीवन धन्य करूँगा।

सूत्रधार :(तो देखा आपने किस प्रकार मानव ईश्वर निर्मित सभी वस्तुओं को नष्ट करता जा रहा है और अपने लिए समस्याएँ उत्पन्न करता जा रहा है। आओ! आज हम सब मिलकर प्रण लेते हैं कि जल्द ही

अपनी धरती माँ को प्रदूषण मुक्त करेंगे और न केवल अपने जीवन को बचाएँगे बल्कि अपने आने वाले कल को भी संवारेंगे।

''सुन लो हमारी यह गुहार
करो न पर्यावरण पर प्रहार
क्योंकि पर्यावरण ही है जीवन का आधार।''

● **मंजू बख्शी,**
लिट्ल फैरी पब्लिक स्कूल,
अशोक विहार, फेस–4,
दिल्ली

अरावली का दर्द

पात्र परिचय

मोनू : 12–13 साल का लड़का यूनिफार्म में
दीदी : 18–20 साल की लड़की चश्मा लगाए
अरावली : फटा हुआ भूरे रंग का चोगा पहने
मम्मी : मोनू की माँ
कोरस : 8–10 लोग एक जैसा धोती–कुर्ता पहने

(पर्यावरण का सुरक्षित होना हमारी आवश्यकता ही नहीं हमारी जिम्मेदारी भी है। भौतिकवाद की आवश्यकताओं के चलते आज हमारा वन्य जीवन सुरक्षित नहीं है। यह वसुन्धरा प्रदूषण के कारण त्राहि–त्राहि कर रही है। भविष्य में इसके दुष्परिणाम हमें ही झेलने होंगे ग्लोबल वार्मिंग बढ़ती जा रही है ग्लेशियर पिघलते जा रहे है, जिसका असर सीधा मानव जीवन पर पड़ रहा है। प्रदूषण के बढ़ने से ओजोन परत के छेद बड़े होते जा रहे है तथ सूर्य की गर्मी पृथ्वी के नजदीक आती जा रही है जिससे न केवल वनस्पति व वन्य जगत प्रभावित हो रहा हे बल्कि मनुष्य भी अनेक बीमारियों का शिकार हो रहा है, क्यों न हम आज से ही बल्कि अभी से यह प्रण करें कि पर्यावरण को सुरक्ष्झित रखने हेतु हम हर संभव प्रयास करेंगे। पर्यावरण दिवस साल में एक बार मनाने के बजाये विनीता शर्मा प्रण लेती हूँ कि हर माह एक पेड़ लगाऊगी तथा औरो को भी पेड़ लगाने हेतु प्रेरित करूगी। इसी सन्दर्भ में एक नाटक प्रस्तुत है कि किस तरह प्रकृति भी मानव कृत्यों से त्रस्त है।)

कोरस : सुनो–सुनो भाई कथा सुनो,
दिल्ली शहर की व्यथा सुनो
करोल बाग धौला कुँआ
बाग लेकिन गया कहाँ
कुआँ का पता नहीं
कश्मीरी गेट पर कश्मीर नहीं..

(मोनू अपना बस्ता उठाये आता है, थका हुआ पसीने से लथपथ)

मोनू : उफ! ये गर्मी, ये ट्रैफिक जाम और अब घर में बिजली नहीं मम्मी.....मम्मी।
मम्मी : क्यूँ चिल्ला रहे हो?
मोनू : आज से छुट्टियाँ शुरू हो गई हैं?
मम्मी : तो मैं क्या करूँ (गर्मी में झल्लाती हुई)
मोनू : इस बार छुट्टियों में हम कहाँ जाएंगे?
मम्मी : कहीं नहीं, क्योंकि तुम्हारे पापा को छुट्टियाँ नहीं मिलेंगी, ऑफिस में जरूरी काम है।
मोनू : (पैर पटकते हुए) मुझे जाना है।
मम्मी : मोनू अब तुम तमीज से पेश आया करो, बड़े हो गये हो।
(कुकर की सीटी बजने पर मम्मी किचन की ओर भागती हैं)
मोनू : (बड़बड़ाता हुआ) कभी बोलेंगे अब तुम बड़े हो गये, कभी बोलेंगे अभी तुम छोटे हो। बीच में दखल मत दिया करो। जब मन चाहा छोटा कर दिया, जब मन चाहा बड़ा कर दिया, लेकिन अब मैं क्या करूँ? दिल्ली में इतनी गर्मी, ऊफ कितनी बोरियत।

(गाता है.....कोरस साथ देता है)

घर पे बैठो तो है बोरियत
आए गुस्सा हो चिड़चिड़े
अब नहीं किसी की खैरियत
ऊफ ये गर्मी ये बोरियत.....

दीदी : (हाथ में मोटी सी किताब लिये) ये बोरियत, ये गर्मी क्या लगा रखा है?
मोनू : दीदी क्या तुम कभी बोर नहीं होती?
दीदी : नहीं, दोस्त किताबों के साथ मैं कभी बोर नहीं होती।
(दीदी किताब पढ़ने लगती है, मोनू झांक कर उस किताब में देखता है)
दीदी : मुझे पढ़ने दो..... दुनिया की पर्वत श्रृंखलाएं।
मोनू : काश! हम पहाड़ों पर जाते, किसी हिल स्टेशन या ठंडी सी जगह पर।
दीदी : सबसे पुरानी श्रृंखलाओं में से एक अरावली।
मोनू : काश! दिल्ली में कोई पहाड़ होता। काश काश.....काश.....काश।
कोरस : हाँ काश....काश....काश। दिल्ली में होते पहाड़.....(और जोर से दुहराते हुए)
(अरावली घूमता हुआ बीच में आ जाता है, मोनू और दीदी डर जाते हैं)
अरावली : है तो दिल्ली में पहाड़! मोनू दीदी के पीछे छिपा है।
दीदी : तुम कौन हो?
अरावली : मैं हूँ अरावली की श्रृंखला रिजराज।
मोनू : (डरते हुये) कहाँ का राजा हैं?
अरावली : अरावली पर्वत श्रृंखला का हिस्सा रिज मैं दिल्ली में हूँ।
दीदी : अरे अरावली जो सबसे पुरानी पर्वत श्रृंखला में से एक है।
मोनू : आप दिल्ली में क्या कर रहे हैं?
अरावली : मैं तो दिल्ली में रहता हूँ।
मोनू : दिल्ली में पहाड़।
अरावली : दिल्ली में मेरी पर्वतमाला का खास अंश है।
दीदी : यह कहां पर है।
अरावली : मैं दक्षिण दिल्ली में गुड़गांव से प्रवेश करता हूं। कहलाता हूं दक्षिणी रिज।
कोरस : दक्षिणी रिज।
अरावली : लाडो सराय से महरौली और पहुंचता हूँ वसंत कुंज तथा कहलाता हूँ दक्षिण–मध्य रिज।
कोरस : बसंत कुंज, दक्षिण मध्य रिज।
अरावली : हाँ धौला कुआँ और राजेन्द्र नगर में हूँ मध्य रिज।
कोरस : मध्य रिज।
अरावली : सिविल लाईंस दिल्ली यूनिवर्सिटी में हूँ उत्तरी रिज।
दीदी : आप से मिलकर बहुत खुशी हुई तथा अपने बारे में कुछ और बताएं।
अरावली : मेरे वन को वैज्ञानिक कटिबँध, कांटेदार वन के वर्ग में रखते हैं।
कोरस : कटिबंध कांटेदार वन!
मोनू : बाप रे! (हैरान होकर) काँटेदार वन!
अरावली : चलो कई प्रकार के पेड़–पौधे दिखाता हूँ। तीनों चक्कर लगाते हैं और चार पेड़ के आकार में खड़े हो जाते हैं, एक बैठ जाता है।
मोनू : अरे वाह! गर्मी में भी यहाँ पर ठंडृक है और यह कितना खूबसूरत भी है। कौन सा पेड़ है यह?
अरावली : बताओ मेरी खूबसूरत वनस्पति, अपना परिचय दो।

पेड़ 1 : मैं बबूल, एकेसिया निलोटिका, देखो मेरे कोमल पत्ते और लंबे कांटे। मैं कई दवाइयों और प्रसाधनों में काम आता हूँ।

पेड़ 2 : मैं पलाश, मेरे पत्तों से डोने तथा पत्तल बनते हैं और मेरे फूल रंग बनाने के काम आते हैं!

पेड़ 3 : मैं हूँ पीलू, मैं जल–सरंक्षण में काम आता हूँ और सूखे में भी हरा–भरा रहता हूँ।

पेड़ 4 : मैं पेड़ नहीं झाड़ी हूँ। जंगली करौदा और मुझ पर सफेद व बैंगनी रंग के फूल खिलते हैं।

अरावली : मेरी श्रृंखला रिज पर अनेक प्रकार की वनस्पति है।

मोनू : पर यह कैसा जंगल है जहां न शेर है न हाथी।

अरावली : अरे भाई! यहीं पर तेदुआं, लक्कड़बग्घा, चिंकारा सब थे पर शहरीकरण में सब समाप्त हो गए हैं। पर फिर अभी कुछ प्राणी समूह है। आओं तुम्हें मिलवाता हूँ।

(चार कोरस से प्राणी बन कर आते हैं)

प्राणी 1 : मैं नील गाय, मेरे बाकी स्तनधारी साथी बंदर, सियार, नेवले, चीता, जंगली बिल्ली आदि भी हैं।

प्राणी 2 : मैं तो हूँ एंटलोप, मैं जहरीला नहीं हूँ। चूहे खाता हूँ, किसानों का साथी हूँ पर शहर के लोग क्या जाने मेरे कई साथी नाग रसल वैपर, केट अजगर पता नहीं बचे हैं कि नहीं।

प्राणी 3 : मैं तितली हूँ। मेरी साठ से ज्यादा प्रजातियां हैं। हम रहते हैं पर कम दिखते हैं मेरे रिश्तेदार।

प्राणी 4 : मैं फास्वता स्ट्रप्टोपेलिया।

मोनू : उफ! तुमसे बड़ा तुम्हारा नाम है।

प्राणी 4 : आप लोगों ने ही रखा है। यहां रिज में 200 से अधिक पक्षी पाए जाते हैं। कुछ सर्दी में बाहर से आते हैं।

दीदी : वाह! अरावली श्रृंखला आप तो महान हैं।

अरावली : शुक्रिया, चलो बैठते हैं (प्राणी चले जाते हैं) कैसा लगा आपको?

मोनू : मजा आ गया, हाथ तो मिलाइये (हाथ मिलाता है चौंककर) अरे, आपका हाथ तो घायल है, आपकी यह हालत क्यूँ है।

अरावली : हाथ ही नहीं, जगह–जगह जख्मी हैं। हड्डियां टूट रही हैं (गिर जाता है) मेरी सांस उखड़ रही हैं।

दीदी : मोनू (घबराकर) अरे–क्या हुआ?

अरावली : दिल्ली में मेरा अस्तित्व ही खत्म होता जा रहा है। मुझे कहीं खदान, कहीं होटल, कहीं पोलो का मैदान, कहीं मैट्रो, कभी सड़क चौड़ीकरण तो कभी फ्लाई ओवर बनाने में टुकड़े–टुकड़े हो गया हूँ मैं। मेरी सारी वनस्पति, वन्य प्रजाति विलुप्त होती जा रही है। मैं अगर खत्म हो गया तो दिल्ली के हरे पेड़ों बिना तुम सांस कैसे लोगे। भारत की जनसंख्या अपना अस्तित्व सुरक्षित रखने हेतु मेरे अस्तित्व के साथ खिलवाड़ कर रही है।

दीदी : नहीं–नहीं हम आपको खत्म नहीं होने देंगे।

मोनू : हाँ–हाँ हम आपको बचायेंगे।

अरावली : (तड़पते हुए) पर कैसे बचाओगे तुम?

दीदी : हम अपने स्कूल–कॉलेज, प्रकृति क्लब में, समूह में पर्वत श्रृंखला बचाने हेतु संघर्ष करेंगे।

मोनू : दोस्तों को बताएंगे, उन्हें भी जोड़ेंगे। न खुद पेड़ काटेंगे न किसी को काटने देंगे।

दीदी : मैं अपने दोस्तों से पेड़ उगाने के लिए अपील करूँगी तथा सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं से पेड़ बचाओ आंदोलन में काम करूँगी

(अरावली थोड़ा–थोड़ा ठीक होता है।)

अरावली : आज का युवा वर्ग ही मुहिम चला कर मुझे बचा सकता है अन्यथा मैं एक दिन अस्तित्वहीन हो जाऊँगा।

मोनू : चलो (और लोगों से पूछता है, दर्शकों से पूछता है) आप बताइये हम क्या करें।

दीदी : चलो अरावली बचाने के लिए मुहिम चलाते हैं। सब मिलकर गाते हैं :

अरावली को बचाना है
रोज एक पेड़ लगाना है
प्रकृति है तो हम हैं
वरना मानव भी बेदम है
यही हो संकल्प हमारा
हरा–भरा रहे भारत प्यारा।

● **विनीता शर्मा,**
विद्या भारती स्कूल,
गाजियाबाद, उ. प्र.

प्रदूषण का भूत

पात्र–परिचय

पृथ्वी	**हाथी**	**बादल**
प्रदूषण	**खरगोश**	**प्रकृति माता**
परी	**मोर**	**जल–प्रदूषण**
तितली	**पेड़**	**वायु–प्रदूषण**
फूल	**किसान**	**ध्वनि–प्रदूषण**
वायु		

(पर्दा खुलते ही एक सुन्दर वाटिका का दृश्य दिखाई पड़ता है। धीरे–धीरे संगीत की लय पर पेड़, फूल, तितली, हाथी, खरगोश व मोर आते हैं। रंगमंच पर अपनी–अपनी स्थिति ले लेते हैं)

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुखभाग भवेत्।
(इस संस्कृति श्लोक पर सफेद वस्त्रों में परी का नृत्य। परी का नृत्य समाप्त होने पर नेपथ्य से आवाज)

देखो ये सुंदर आसमाँ,
देखो ये सुंदर वसुंधरा,
कण – कण में इसके,
पराग ही पराग भरा ,

पृथ्वी : (संगीत के साथ पृथ्वी का आगमन)

बिरचे शिव, विष्णु बिरचे महेरा,
अनगिनत बह्माण्ड हिलाए हैं।
पलने में प्रलय झुलाया है,
गोदी में कल्प खिलाएँ हैं।।

हरी–हरी मखमली घास पर पशु–पक्षियों की सुंदर सभा देखकर आज मेरा मन बहुत खुश है।

(तितली का प्रवेश)

तितली : कितनी सुंदर वन की हरियाली

फल : फूली रही है डाली–डाली

खरगोश : मानो प्रकृति का अहसान
सुन्दर है आज इस का स्वरूप
तभी कर रही है हम
सबका पोषण भरपूर।

बादल : मैं जल से बना हुआ हूँ, धरती की प्यास बुझा कर उसे हर समय हरा–भरा बनाकर रखता हूँ।

वायु : मैं प्राण वायु, शुद्ध ऑक्सीजन से सभी लोगों को जीवन से भर देती हूँ। शुद्ध पर्यावरण में बहना मुझे बहुत अच्छा लगता है।

हवा हूँ हवा हूँ
प्राणदायिनी हवा हूँ

फूल : हे ईश्वर! खुशबू और सुंदरता से भरकर तूने मुझे बहुत सुंदर जीवन प्रदान किया है। मैं चाहता हूँ कि पृथ्वी पर समस्त प्राणियों का जीवन खुशियों से इसी प्रकार महकता रहूँ।

मोर : (पीहू चीहू की आवाज) मैं पक्षियों का राजा मोर, मेरा नृत्य प्रकृति की आराधना है।
(धीरे–धीरे बादल गरजते हैं–मोर नृत्य करता है। अचानक बादल तेजी से और तेजी से गरजते हैं।
जानवर, पेड़–पौधे डरने का अभिनय करते है। नृत्य वाली परी पेड़ के पीछे छुप जाती है, धरती काँपने लगती है)
प्रदूषण का आगमन :
(काली वेशभूषा में डरावने संगीत के साथ प्रदूषण पहले धरती के चारों ओर चक्कर करता फिर बाकी सबके चारों ओर–हा–हा–हा–हा। संगीत थोड़ा और तेज। उस पर प्रदूषण का ताण्डव नृत्य होगा)
प्रदूषण : मेरा नाम है प्रदूषण
किया मैंने पृथ्वी का अमंगल
धरके मैंने रूप अनेक
कर दिए चौपट
दुनिया और देश। हा–हा–हा–हा–हा–––
(प्रदूषण सबको धक्का देता है। सब उसका सामना करने की कोशिश करते हैं पर प्रदूषण सब पर भारी पड़ता है)
प्रदूषण : आज मैं थैला भरकर पृथ्वी के लिए तोहफे लाया हूँ। विपत्तियों के तोहफे, दुःखों के तोहफे, बीमारियों के तोहफे, सुनामी लहरों के तोहफे, पहाड़ों के टूटने के तोहफे। पृथ्वी....अरी पृथ्वी! मेरे तोहफे तुझे पसंद आये या नहीं–हा–हा–हा––
आज धरा गर्म है, गगन गर्म है
ये सब मेरा ही किया–धरा
मेरा ही कर्म है।
समस्त पृथ्वी पर कहर ढोने के लिए, उसे समाप्त करने के लिए मुझे ईश्वर ने तीन बेटों से नवाजा है। वो भी जब–तब आकर अपना रूप दिखाएँगे–बेटा जल आओ।
जल–प्रदूषण : मैं हूँ जल प्रदूषण
जब मैं आता हूँ
सब कुछ जाता है थम।
आज मेरे ही कारण विश्व का मौसम–चक्र बिगड़ गया है। हिमखंड पिघल रहे हैं, बाढ़ें आ रही हैं, समुद्रों के जलस्तर में वृद्धि हो रही है। मैं धरती के प्राणियों को पानी की बूँद–बूँद के लिए तरसा दूँगा? तरसा–तरसा कर मार डालूँगा–हा–हा–हा––
प्रदूषण : शाबाश बेटे! इसी प्रकार पृथ्वी पर अपना शिकार करते रहो। आज पृथ्वीवासी बहुत खुश हैं। उनकी खुशियों पर ग्रहण लगाने के लिए जरा वायु प्रदूषण को भेज दे।
वायु प्रदूषण : हा–हा–हा। मैं हूँ वायु प्रदूषण। किया मैंने लोगों का साँस लेना दुलर्भ है धरती के लोगों, तुम सबकी जानकारी के लिए बता दूँ मैंने प्राण वायु को विषैला कर दिया है। शीघ्र ही प्राण घातक बीमारियाँ जैसे–दमा, खाँसी, हृदय घात, प्लेग, डेंगू तुम्हारे आँगन में खेलेंगे। डरो मत! मैं धरती पर से ऑक्सीजन खत्म कर सर्वत्र कार्बन डाईऑक्साइड का आवरण फैला कर तुम्हें जीवन से मुक्त कर दूँगा।
प्रदूषण : जियो–जियो मेरे लाल,
करते रहो जग में ऐसे ही कमाल।
ध्वनि–प्रदूषण : पिता श्री, भ्राता वायु और भ्राता जल मुझे अकेला छोड़ कर आ गये। मैं भी पृथ्वी पर आना चाहता हूँ और अपना रौद्र रूप दिखाना चाहता हूँ।
प्रदूषण : पुत्र रोका किसने है? तुम्हारे जो जी में आए सो करो।
आया मैं ध्वनि प्रदूषण
आकलन कभी मेरा न करना कम।

ध्वनि–प्रदूषण : वैसे तो मेरे पिताश्री और भ्राताश्री पृथ्वी का सर्वनाश कर रहे हैं, पर इस नेक काम में मैं भी बहती गंगा में हाथ धो लूँ। धरती के लोगो सुनो! मैं वायुमण्डल में ध्वनि–तंरगों का संतुलन बिगाड़ रहा हूँ। वातावरण में इतना शोर पैदा कर दूँगा कि सब अधीर व अशान्त होकर तनाव के गर्त में गिरकर ही रहेंगे। दुनिया में बहरेपन के विस्तार पर भी मेरी रिसर्च चल रही है। मुझे पृथ्वी के शरीर पर कोढ़ के रूप में फैलने का ब्रह्म से वरदान मिला है। मैं पृथ्वी को समाप्त करके ही रहूँगा।

प्रदूषण : शाबाश बेटे, जीवन में अपने पिता के नक्शे कदम पर चलते हुए मेरा नाम रोशन करते रहना।

पृथ्वी : रे दुष्ट प्रदूषण! सत्यानाश हो तेरा
दूषित कर दी वायु तूने
दूषित किया जल
चारो ओर फैला दिया
अमंगल ही अमंगल।

हाथी : आपको ये सब करके क्या मिला? आखिर हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?
फूल, पेड़–पौधे तितली बादल सब रो रहे हैं।
(रोते–रोते गाते हैं)
इतनी शक्ति हमें देना दाता,
मन का विश्वास कमजोर हो ना,
इस प्रदूषण को यहाँ से भगा ना,
हम रहें या ना रहें यहाँ।

प्रकृति माता : (दर्शकों के सामने बोलना है) आज इन बेजुबान पशु–पक्षियों, पौधों की पुकार सुनकर मेरा मन हाहाकार कर रहा हैं। मैं यहाँ आने से अपने आप को रोक न सकी।

प्रकृति माता : मैं भारत की आत्मा तुम सबकी माता, तुम्हारे लिए यहाँ आई हूँ। मेरे बच्चो घबराओ मत। मुसीबत आने पर घबराने के बजाय विवेक से काम लेना चाहिए। यह प्रदूषण का राक्षस तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा। (सबको पुचकारती है) देखो सामने से कौन आ रहा है–
(सारे जहाँ से अच्छा की धुन पर किसान बने बच्चे, आते हैं और वृक्षारोपण करते हैं, सारे गाते हैं–
आज धरा पर वृक्ष लगाकर
कर देंगे इसका श्रृंगार,
प्रदूषण को दूर भगाकर
कर देंगे उसका समूल नाश
अब फूल–फूल पर कली–कली, फिर से होगी नई बहार
(बीच में प्रकृति माता और सब उसके गोल चक्कर लगाते हैं)
आओ मिलकर प्रण करें हम,
पर्यावरण को सुंदर बनाएंगे
प्रदूषण को दूर भगाएँगे।

● **शशि गोयल,**
केंटरबरी पब्लिक स्कूल,
बी–ब्लाक, यमुना विहार, दिल्ली

बेटी का विवाह

पात्र–परिचय

शहाबुद्दीन (शहाबू) : गाँव का प्रतिष्ठित कपड़ा व्यापारी
रामनिहोर बड़गैंयाँ (निहोरा) गाँव का गरीब हनुमत भक्त ब्राह्मण
सुशीला : रामनिहोर की लड़की
राजनारायण दादू : गाँव का प्रतिष्ठित जमीदार
शिवशरण शुक्ल : बड़गैंयाँ जी का यजमान एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति

पहला दृश्य

स्थान : (गाँव में रामनिहोर की चौपाल। समय प्रातः नौ बजे। शहाबू बड़गैंया जी के पास आता है। बड़गैंया दरवाज़े की चौपाल में बैठा है)
शहाबुद्दीन : अरे, बड़गैंया जी! बिटिया सयानी हो गई है। कहीं शादी–विवाह की बात चला रहे हैं या नहीं ?
रामनिहोर (बड़गैंया) : भाई शहाबू, मेरे तो खाने के लाले पड़े हैं, बिटिया के विवाह की बात कौन कहे ?
शहाबू : अरे, तुम इतनी क्यों चिंता कर रहे हो? सुशीला हमारी भी लड़की है। इसका विवाह बड़े धूमधाम से होगा। तुम इसकी चिंता छोड़ो।
निहोरा : भाई शहाबू, मैं तो सोचता हूँ कि बिटिया के भार से कैसे मुक्त हूँगा।
शहाबू : (सुशीला को देखकर) बिटिया थोड़ा पानी तो पिलाओ। प्यास ज़ोर की लगी है।
सुशीला : (प्रसन्न होकर) अच्छा चाचा अभी लाई। (पानी लेने चली जाती है।)
शहाबू : भाई बड़गैंया मैंने एक लड़का एक गाँव में देखा है। लड़का बड़ा सुंदर और सुशील है। घर से अच्छे हैं। परिवार कुलीन है। यदि आप लोगों की बरा–बियाहुत हो तो बात चलाई जाए।
निहोरा : वे लोग कौन ब्राह्मण हैं?
शहाबू : वे लोग सुपरी के घर तिवारी हैं। गाँव के लोग सुपरी जी, सुपरी जी! कह कर बूलाते हैं। भाई लड़का तो बहुत ही अच्छा है। हमारी बिटिया के साथ राम–सीता की जोड़ी लगेगी।
निहोरा : ब्राह्मण तो बहुत अच्छे हैं। हमारे घरों की लड़कियाँ उनके यहाँ जाती है। मुझे उनके यहाँ विवाहने में कोई परेशानी नहीं होगी परंतु मैं उनके यहाँ कैसे विवाह पाऊँगा? मैं तो लड़कों को पाल लूँ तो बहुत है।
शहाबू : इसकी चिंता छोड़ो। यदि आपकी ब्राह्मणी बनती है, तो सोने में सुहागा है। इस बार जब मैं दरी–पल्ली बेचने जाऊँगा तो विवाह की बात अवश्य चलाऊँगा और मुझे विश्वास है कि बात बन जाएगी।
निहोरा : (चिंतित मन से) तो तुम्हें वे लोग अच्छी तरह जानते हैं? बात तो बन जाएगी न। मेरे पास कुश कन्या के अलावा कुछ नहीं है।
शहाबू : अरे, यह तुम सब मुझ पर छोड़ो। इस पंचकोसी में ऐसा कौन है जो मुझे नहीं जानता? वे तो मुझे अपना भाई ही मानते हैं। मैं जब भी उनके गाँव जाता हूँ, तो उन्हीं के यहाँ रुकता हूँ।
सुशीला : (पानी लेकर आती है।) चाचा लो पानी।
शहाबू : लाओ बिटिया। अच्छा तुम ऊपर से डाल दो और मैं चुल्लू लगाकर पी लेता हूँ।

सुशीला : ओह, चाचा! तुम इंसान नहीं हो क्या? जो ऊपर से पानी पिओगे। लो लोटे से पानी पी लो, लोटे में कोई छूत थोड़े ही लग जाएगी।

शहाबू : अरे, बेटी! यह तुम्हारा बाप, हनुमान जी का बड़ा भक्त हैं। सुनते है हनुमान जी बड़ी शुद्धता चाहते हैं। वे औरतों से सदा दूर रहते हैं।

सुशीला : अरे चाचा, ये सब कहने–सुनने की बातें हैं। आप ही बताइए देवता तो सभी को एक ही मानते होंगे। हम उन्हें चाहे जिस नाम से बुलाएँ।

शहाबू : नहीं, बेटी, सभी देवताओं के इबादत की अपनी–अपनी विधि होती है और वे उसी विधि से खुश होते हैं। हमें सभी के विधि–विधान का सम्मान करना चाहिए। तुम्हारे पिताजी ने तो हनुमान जी की प्रतिमा को तालाब से उठाकर अकेले ऊपर रख दिया था जो सैकड़ों लोगों से भी नहीं उठी। आज उसी जगह विशाल मंदिर बना है।

सुशीला : (आश्चर्य प्रकट करती हुई) वह कैसे चाचा? हमें तो कुछ भी पता नहीं है। तुम बताओ।

शहाबू : चलो बेटी, यह बात तुम्हारे पिता जी से ही पूछते हैं। क्यों भाई बड़गैंया, यह हनुमान जी के विषय में क्या बात है? ज़रा हम लोगों को भी तो बताओ। शुकुल जी अक्सर यह बात बताते रहते हैं।

निहोरा : अरे भाई शहाबू! यह तो हनुमान जी की विचित्र लीला थी, लीला। इसमें कोई मेरा कर्तब नहीं था। वे जैसा, जब चाहते हैं, वैसा ही होता है।

शहाबू : (उत्सुकता दिखाते हुए) कैसी लीला, ज़रा हम भी तो सुनें तुम्हारे पवन पुत्र हनुमान की लीला। मुझे भी कई बार उनके दर्शन हुए और मैंने जब उनकी याद की तो उन्होंने मुझे संकट से बचाया। ज़रा बताओ ना।

निहोरा : भाई, एक साल भादौं के महीने में बड़ी बारिश हुई। पूरे महीने वर्षा की झड़ी लगी रही। बारिश रुकने का नाम नहीं ले रही थी। पयश्विनी गाँव तक बाढ़ आई थी। सभी बाढ़ से तबाह थे। मकान गिर रहे थे।

शहाबू : (और जिज्ञासा के साथ) तब क्या हुआ भाई? मुझे तो याद नहीं आ रहा। हाँ सन् छियासठ में बड़ी बाढ़ आई थी। हम तैर–तैरकर नदी से बड़ी–बड़ी लकड़ी की बल्लियाँ पकड़े थे।

निहोरा : बात उन्हीं दिनों की है। हनुमान जी की उस मूर्ति को तालाब में सबसे पहले मौज़ा परसौंजा के लोगों ने ही देखा था। वह ज़मीन मौज़ा परसौंजे में ही आती है। उन लोगों ने हनुमान जी को कीचड़ से निकाल कर ऊपर रखने का विचार किया और मूर्ति को उठाने लगे। एक, दो, पन्द्रह, बीस लोगों ने मिलकर उठाने की कोशिश की किन्तु मूर्ति टस से मस नहीं हुई।

शहाबू : तब भाई क्या हुआ ? कहानी तो बड़ी मज़ेदार है। परसौंजे वाले अपने को बड़ा तीसमार समझे रहे होंगे और हनुमान जी पर अपने गाँव का पूरा अधिकार समझते रहे होंगे।

निहोरा : हाँ भाई कुछ ऐसा ही हुआ। वे लोग मूर्ति पाकर घमंड से चूर थे। किसी गाँव को कोई ख़बर नहीं देना चाहते थे। किन्तु भगवान का भोजन तो मनुष्य का अहंकार ही होता है। इसीलिए यह सब हुआ।

शहाबू : तब तुम वहाँ कैसे पहुँच गए? जब कई लोग मिलकर भी उन्हें नहीं उठा पाए फिर तुम अकेले कैसे उठा लिए? यह बड़ी विचित्र बात है।

निहोरा : हुआ यह कि हनुमान जी के तालाब में मिलने और उनके निकालने की कथा चारों तरफ बड़ी तेज़ी से फैल गई और दस–दस कोसों से दूर के लोग मूर्ति को देखने आने लगे। हमारे गाँव के भी सैकड़ों लोग गए थे और मैं भी उत्सुकतावश उन्हीं के साथ चला गया।

शहाबू : तब भाई क्या हुआ? आगे बताओ। बड़ी मज़े की कहानी है।

निहोरा : हमारे गाँव के लोग भी तालाब के पास पहुँचे। मैं भी साथ में था। पंडित शिवप्रसाद, धरमपुरहा जी, पाण्डेय जी, गर्ग , शुकुल सभी बड़े–बड़े और विद्वान पंडित वहाँ मौजूद थे। सभी ने उनकी स्तुति की और मिलकर उठाने लगे। शायद हमारे गाँव वालों को भी अपनी ब्राह्मणी और पंडिताई का ज्यादा घंमड था। सोचा था हम लोग तो उठा ही लेंगे किन्तु वे लोग भी सफल नहीं हुए।

शहाबू : क्या तुम गाँव वालों के साथ मूर्ति को उठा रहे थे या अकेले उठाया?

निहोरा : नहीं, भाई शहाबू! पहले तो मैं दूर खड़ा देखता रहा किन्तु जब हामरे गाँव वाले भी असफल हो गए तो मुझे बहुत दुःख हुआ। मैं भी धीरे से तालाब में उतरा। मूर्ति के पैरों के पास खड़ा होकर मैं मन ही मन प्रार्थना करने लगा कि हे प्रभु! तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध कोई टस से मस नहीं कर सकता। मैं भी क्या कर सकता हूँ किन्तु मैं इस तरह आप को कीचड़ में पड़े नहीं देख सकता। अब मैं भी तब तक तालाब के किनारे बैठा रहूँगा जब तक आप ऊपर नहीं जाएंगे। मैं तब तक भोजन नहीं करुँगा, जब तक आप अपने स्थान तक नहीं चलते।

शहाबू : तब फिर क्या हुआ?

निहोरा : यह कहता हुआ मैं रूवासा हो गया और मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। मेरे आँसू भगवान के चरणों पर गिरे। मेरे अंदर एक अद्‌भुत शक्ति जाग गई और मैं भगवान को प्रणाम कर उनको मध्य से उठाने लगा। एक हाथ उनके सिर पर लगाया। मूर्ति अपने आप खड़ी होने लगी। मैं प्रसन्नतापूर्वक भगवान की जय बोलता हुआ मूर्ति को उठाकर ऊपर ले आया। ऊपर पलाश के पेड़ की आड़ में उन्हें दक्षिण मुख रख दिया। मुझे स्वयं यह पता नहीं है कि यह सब कैसे हुआ, किन्तु यह सब प्रभु की इच्छा से मेरे हाथों सम्पन्न हुआ। चारों तरफ जय जयकार होने लगी। हनुमान जी का जयघोष होने लगा। लोगों ने मुझे उठा लिया, चारों तरफ घुमाया, मेरे पैर छूने लगे। मैं स्तब्ध एवं अवाक् था।

शहाबू : देखा बेटी, अपने छोटे से बाप का कमाल। अब तो मेरी बात से सहमत हो न!

(शहाबू यह कथा सुनकर प्रसन्न मन चला जाता है)

दूसरा दृश्य

स्थान : गाँव के जमी़दार राजनारायण की बैठक का। जहाँ आठ–दस लोग बैठे हैं। (उसी समय शहाबू का प्रेवश)

शहाबू : (सलाम करता हुआ) दादू, मैं आप के पास एक विशेष कार्य से आया हूँ।

राजनारायण दादू : अरे, आओ–आओ। मैं तो तुम्हें ही खोज़ रहा था। मुझे दस–बारह रजाई की खोल चाहिए। इस साल कई रजाइयाँ फट गई हैं।

शहाबू : अरे दादू, खोल तो मैं आपको दस–बारह क्या पचासों दे दूँगा लेकिन मैं तो आप से एक बहुत ही जरूरी बात करने आया था। पल्लियाँ तो जब कहें भेज दूँगा।

राजनारायण : अच्छा, कहो क्या बात है? कोई परेशानी है क्या तुम्हें? जब तक मैं जीवित हूँ किसी बात की चिन्ता न करना। बोलो, क्या बात है?

शहाबू : दादू, बात ऐसी है कि रामनिहोर बड़गैया की बिटिया सयानी हो गई है। उसका विवाह निहोरा के बस की बात नहीं है। वह घर वालों को दो जून की रोटी नहीं दे सकता तो बताओं वह लड़की का विवाह कैसे कर पाएगा? अब उसकी लड़की की शादी की ज़िम्मेदारी हम सब की है। यह गाँव की प्रतिष्ठा का सवाल है।

राजनारायण : तो बताओ क्या किया जाए? हम सब लोग क्या कर सकते हैं?

शहाबू : दादू ! हम, शुकुल और आप मिलकर गाँव भर से चंदा इकट्‌ठा करें और उससे लड़की की शादी कर दी जाए।

राजनारायण : निहोरा, लड़का ठीक करे फिर विवाह का सारा प्रबंध हो जाएगा।

शहाबू : लड़का तो मैं देख रखा हूँ और बड़गैंया से भी बात हो गई है। अब केवल लड़के वालों से मोहर लगवानी बाकी है।

राजनारायण : तो तुम लड़के वालों से बात कर लो। शेष मैं सब देख लूँगा।

शहाबू : सलाम दादू। अब मैं जाता हूँ और सब ठीक करके आपको बताऊँगा।

(शहाबू चला जाता है।)

तीसरा दृश्य

स्थान : (शुक्ल जी की चौपाल। शहाबू का शुक्ल जी के पास आगमन)

शहाबू : शुकुल, सलाम वाले कुम!

शिवशरण शुक्ल : अरे, सलाम सलाम! शहाबू भाई आओ। बहुत दिन बाद दिखाई दिए हो? क्या हालचाल है। सब ठीक तो है न।

शहाबू : क्या बताऊँ शुकुल। यह दुनियादारी का धंधा ही इतना खराब है कि कोई चाह कर भी उससे मुक्त नहीं हो सकता।

शुक्ल जी : भाई बताओ कोई मदद है। मुझसे जो कहो मदद करूँ।

शहाबू : शुकुल मेरी नहीं। निहोरा बड़गैंया की मदद करनी है। केवल तुम्हें नहीं बल्कि हम सब को मिलकर सहायता करनी होगी। हम सभी को मिलकर उसकी लड़की की शादी करनी होगी। यह कार्य उसके अकेले के बस का नहीं है और यह गाँव की इज्ज़त का भी सवाल है।

शुक्ल जी : हाँ, भाई शहाबू ! तुमने तो यह नेक कार्य बताया। वैसे भी वे हमारे पुरोहित हैं, उस जैसा सीधा–सरल इंसान गाँव भर में कोई नहीं है।

शहाबू : तो शुकुल! तुम्हें और मुझे चलकर गाँव से मदद माँगनी पड़ेगी और जो सहायता मिलेगी, उसे इकट्ठा कर लेंगे। जो कम पड़ेगा हम दोनों लगा देंगे। दादू राजनारायण ने भी पूरी मदद् का आश्वासन दिया है।

शुक्ल जी : शुभ कार्य में देरी क्यों? कल से ही प्रारंभ कर देते हैं। शुक्ल और शहाबू गाँव भर में अनाज और रुपए माँगकर इकट्ठा करते हैं।

शहाबू : बड़गैंया लो, यह इतना राशन और रुपए तुम्हारी बेटी के विवाह के लिए इकट्ठे हुए हैं। इसे घर में रखो।

(सारा सामान स्वीकार करते हुए बड़गैंया विनम्रता से शहाबू को धन्यवाद देता है।)

बड़गैंया : अरे भाई शहाबू ! तुम इंसान नहीं खुदा के बंदे हो। तुम मेरे पूर्व जन्म के सगे भाई रहे होगे। सगा भाई भी ऐसा नहीं कर सकता। मैं तुम्हारा यह ऋण कैसे चुका पाऊँगा?

शहाबू : पहली बात मैं खुदा नहीं, तुम्हारी तरह एक साधारण इंसान हूँ। बात रही पूर्व जन्म में भाई की तो पूर्व जन्म में ही नहीं मैं तो इस जन्म में भी तुम्हारा भाई ही हूँ। मैंने तुम्हारे साथ कोई उपकार नहीं किया बल्कि छोटे भाई के नाते अपने हिस्से की ज़िम्मेदारी निभाई है।

बड़गैंया : भाई, शहाबू अब बेटी का विवाह बड़े आराम से हो जाएगा।

शहाबू : नहीं, इस धन से तुम्हें शादी नहीं करनी बल्कि यह सब बच्चों के खाने–पीने के लिए रख लेना है।

बड़गैंया : अरे, तुम यह क्या कह रहे हो? बेटी का विवाह कैसे होगा? लोग मुझे क्या कहेंगे कि लड़की के धन से बच्चे पाल रहा है।

शहाबू : तुम चिन्ता न करो। यह तुम्हारा धन है। बेटी के विवाह के लिए दादू राजनारायण सारा राशन देंगे और बारात की सारी व्यवस्था भी वे ही करेंगे। पैसे की व्यवस्था मैं और शुकुल करेंगे। हम सब देख लेंगे। तुम्हें चिन्ता करने की जरूरत नहीं है।

बड़गैंया : (शहाबू को हृदय से लगाते हुए) भाई शहाबू, मैं एक जन्म क्या, सात जन्म भी ले लूँ तो तुम्हारा यह उपकार चुका नहीं सकता। तुम मनुष्य नहीं, देवता हो देवता। (कहते हुए आँसू बहने लगते हैं)

शहाबू : (हँसते हुए) अच्छा, अच्छा ! यह सब रहने दो। बेटी, एक लोटा पानी पिलाओ, फिर मैं चलूँ। मुझे अभी तुम्हारे विवाह की बहुत सारी तैयारियाँ करनी है।

(सभी अपने–अपने कार्य में लग जाते हैं।)

(पर्दा गिरता है)

हरिशंकर द्विवेदी
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय वायु सेना स्थल आमला,
जनपद–बैतूल, मध्यप्रदेश